رئاسة الشؤون الدينية
بالمسجد الحرام والمسجد النبوي

तौहीद (एकेश्वरवाद) की रक्षा की शृंखला

उन लोगों के बारे में शरीयत के निर्णय का बयान, जो अल्लाह को छोड़ किसी और से फ़रियाद करते हैं

हिन्दी | هندي | حراسة التوحيد

लेखक

अल्लामा इमाम अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़

-उनपर अल्लाह की दया हो-

ⓒ جمعية خدمة المحتوى الإسلامي باللغات ، ١٤٤٦هـ

بن باز ، عبدالعزيز
حراسة التوحيد - هندي. / عبدالعزيز بن باز ؛ جمعية خدمة المحتوى الإسلامي باللغات - ط١. .- الرياض ، ١٤٤٦هـ
٧٥ ص ؛ ..سم

رقم الإيداع: ١٤٤٦/١٢٤٥٩
ردمك: ٩٧٨-٦٠٣-٨٥١٧-٥٧-٤

سلسلة

حراسة التوحيد

तौह़ीद (एकेश्वरवाद) की रक्षा की शृंखला

उन लोगों के बारे में शरीयत के निर्णय का बयान, जो अल्लाह को छोड़ किसी और से फ़रियाद करते हैं

लेखक:

अल्लामा इमाम अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़

-उनपर अल्लाह की दया हो-

अल्लाह के नाम से आरंभ करता हूं, जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान है

उन लोगों के बारे में शरीयत के निर्णय का बयान, जो अल्लाह को छोड़ किसी और से फ़रियाद करते हैं, या भविष्य की बात बताने का दावा करने वालों एवं वस्तुओं का ज्ञान रखने का दावा करने वालों (जैसे ज्योतिषि, ओझा, सोखा आदि) को सच्चा मानते हैं

प्रस्तावना

समस्त प्रकार की प्रशंसा अल्लाह के लिए है तथा दुरूद व सलाम (प्रशंसा व शांति) अवतरित हो अल्लाह के रसूल पर, एवं उनके परिवार वालों पर, उनके साथियों पर और उनके सहाबा पर।

अल्लाह की प्रशंसा के बाद मूल विषय पर आते हैं। चूँकि एकेश्वरवाद मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आह्वान, जो कि पिछले तमाम रसूलों के आह्वान का विस्तार है, का मूल आधार है, जैसा कि उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اُعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾

"और हमने प्रत्येक जाति में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत (वंदना) करो तथा तागूत (अल्लाह के अतिरिक्त अन्य पूज्य) से बचो।" [सूरा अल-नह्ल : 36]।

तथा इस आह्वान पर विश्वास का मतलब ही दीन के नाम पर किए जाने वाले तमाम तरह के ग़ैर-दीनी कार्यों से लड़ाई है, इसलिए हर मुसलमान का कर्तव्य है कि अपने दीन का सही ज्ञान रखे और अल्लाह की इबादत इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं के अनुसार करे।

आरंभिक दौर के मुसलमान अपने दीन के मामले में सही रास्ते पर थे, क्योंकि उनके सारे कार्य क़ुरआन एवं सुन्नत की शिक्षाओं के अनुसार हुए करते थे।

लेकिन जब अधिकतर मुसलमान अपने अक़ीदा एवं कर्म में क़ुरआन एवं सुन्नत के अनुसरण के सच्चे मार्ग से विचलित हो गए, तो अलग-अलग दलों में बट गए। अक़ीदा, विश्वास, राजनीति और विधि-विधानों को लेकर बहुत से गिरोह बन गए। फिर, इस विचलन के नतीजे में मुसलमानों के अंदर दीन के नाम पर नई-नई चीज़ें (बिदअतों), तरह तरह के विधर्म और पथभ्रष्टतायें सामने आ गईं, जिनसे इस्लाम का कोई लेना-देना नहीं है, और इन्हीं के कारण इस्लाम के दुश्मनों को इस्लाम और मुसलमानों पर हमला करने का अवसर मिला।

इस्लामी विद्वानों ने हर दौर में अपनी किताबों के अंदर इन नवाचारों (बिदअतों) से सावधान किया है।

मैंने भी निम्नलिखित तीन पुस्तिकाएँ लिखकर इस विषय में अपना योगदान दिया है :

1- अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रियाद के संबंध में शरई दृष्टिकोण

2- जिन्नों और शैतानों से फ़रियाद करने और उनके लिए मन्नत मानने के बारे में शरई दृष्टिकोण

3- शिर्क की मिलावट वाले और नवाचार विर्दों (अज़कार) के बारे में शरई दृष्टिकोण

विद्वत्तापूर्ण अनुसंधान एवं इफ़्ता की स्थायी समिति, जिसने इस देश में इस्लामी आह्वान का झंडा उठा रखा है, आपके सामने इन तीनों पुस्तिकाओं को रख रही है, जो दरअसल उसकी ओर से दीन के नाम पर किए जाने वाले ग़ैर-दीनी कामों को समाज से समाप्त करने और सांस्कृतिक एवं इस्लाम की सही समझ के स्तर ऊँचा करने के प्रयास का हिस्सा है।

महान एवं सर्वशक्तिमान अल्लाह से दुआ है कि इन तीनों पुस्तिकाओं से मुसलमानों को लाभ पहुँचाए। सच्ची बात यह है कि सत्य मार्ग पर चलाने की शक्ती केवल अल्लाह ही के पास है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, आपके परिवार एवं सहाबा किराम पर अल्लाह की कृपा और शांति की सदा बरसात हो।

पहली पुस्तिका: अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रियाद के संबंध में शरई दृष्टिकोण

सारी प्रशंसा अल्लाह की है तथा दरूद एवं सलाम हो अल्लाह के रसूल, उनके परिजनों, साथियों और उनके मार्ग पर चलने वालों पर।

अल्लाह की प्रशंसा के बाद मूल विषय पर आते हैं। कुवैत के अख़बार अल-मुजतमा ने अपने अंक संख्या 15, दिनांक 19/4/1390 में "في ذكرى المولد النبوي الشريف" (अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म की याद में) शीर्षक के तहत कुछ छंद प्रकाशित किए हैं, जिनमें अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से गुहार लगाई गई है कि इस उम्मत की मदद करें और उसे विभाजन एवं बिखराव से मुक्ति दिलाएँ। ये छंद आमिना नाम की एक औरत के हस्ताक्षर से छपे हैं। कुछ शेर आप भी देख लें :

ऐ अल्लाह के रसूल! इस संसार को बचाइए, जो युद्ध भड़काता है और उसकी आग में जलता है।

ऐ अल्लाह के रसूल! उम्मत की मदद करें, संदेह के अंधेरों में उसकी रात लम्बी हो चुकी है।

ऐ अल्लाह के रसूल! उम्मत की मदद करें कि दुःख की भूल भुलैया में उसकी अंतर्दृष्टि नष्ट हो गई है।

उसने आगे कहा है :

मदद जल्दी कीजिए, जिस प्रकार आपने बद्र के दिन जल्दी की थी, जब आपने अल्लाह को पुकारा था।

जिसके बाद अपमान एक शानदार विजय में परिवर्तित हो गया था। बेशक अल्लाह की ऐसी सेनाएँ हैं, जिन्हें आप देख नहीं सकते।

(अल्लाहु अकबर! आप देख रहे हैं कि किस तरह यह लेखिका अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पुकार रही है और आपसे फ़रियाद कर रही है। आपसे कह रही है कि जल्दी उम्मत की मदद कीजिए। वह यह भूल जा रही है -या इस बात से अज्ञान है- कि मदद केवल अल्लाह के हाथ में है। नबी या किसी सृष्टि के हाथ में नहीं। उच्च एवं महान अल्लाह ने अपने पवित्र ग्रंथ क़ुरआन में कहा है:

﴿وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ﴾

"और समर्थन तो केवल अल्लाह ही के पास से प्राप्त होता है, जो प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।" [सूरा आल-ए-इमरान : 126], एक दूसरी जगह सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿إِنْ يَنْصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ وَإِنْ يَخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِي يَنْصُرُكُمْ مِنْ بَعْدِهِ﴾

"यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे, तो तुमपर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता तथा यदि तुम्हारी सहायता न करे, तो फिर कौन है, जो उसके पश्चात तुम्हारी सहायता कर सके?" [सूरा आल-ए-इमरान : 160])

पवित्र क़ुरआन एवं सुन्नत तथा उलेमा के मतैक्य से साबित है कि अल्लाह ने सृष्टि की रचना अपनी इबादत के लिए की है और इसी इबादत की व्याख्या और आह्वान के लिए रसूल भेजे तथा किताबें उतारी हैं। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ﴾

"और मैंने जिन्नों तथा मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें।" [सूरा अल-ज़ारियात : 56], एक अन्य स्थान में उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اُعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾

"और हमने प्रत्येक जाति में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत (वंदना) करो तथा तागूत (अल्लाह के अतिरिक्त अन्य पूज्यों) से बचो।" [सूरा अल-नह्ल : 36], एक और स्थान में कहा है :

﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ﴾

"और हमने आपसे पहले जो भी रसूल भेजा, उसकी ओर यही वह्य (प्रकाशना) करते थे कि मेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। अतः तुम सब मेरी ही इबादत करो।" [सूरा अल-अंबिया : 25], एक दूसरी जगह सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿الر كِتَابٌ أُحْكِمَتْ آيَاتُهُ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ خَبِيرٍ ۝١﴾

"अलिफ़. लाम. रा, यह एक ऐसी पुस्तक है जिसकी आयतें सुदृढ़ कर दी गईं और फिर एक तत्वज्ञ एवं सर्वव्यापी हस्ती की तरफ से उनकी सविस्तार व्याख्या कर दी गई है। कि अल्लाह के सिवा किसी

की इबादत (वंदना) न करो। वास्तव में, मैं उसकी ओर से तुम्हें सचेत करने वाला तथा शुभ सूचना देने वाला हूँ।" [सूरा हूद : 1, 2]

इन सुस्पष्ट आयतों में सर्वशक्तिमान अल्लाह ने स्पष्ट रूप से बताया है कि उसने इन्सान एवं जिन्न की रचना इसलिए की है कि एकमात्र उसी की इबादत की जाए और किसी को उसका साझी न बनाया जाए। अल्लाह ने बताया है कि उसने रसूलों को इसी इबादत का आदेश देने और इसके विपरीत से रोकने के लिए भेजा है। उसने बताया है कि उसने अपनी किताब की आयतों को स्पष्ट रखा है, ताकि उसके अतिरिक्त किसी की इबादत न की जाए।

इबादत नाम है अल्लाह को एक मानने, उसके आदेशों का पालन करने और उसकी मना की हुई चीज़ों से दूर रहने का। इबादत का आदेश अल्लाह ने बहुत-सी आयतों में दिया है। जैसे उच्च एवं महान अल्लाह का यह कथन :

﴿وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءَ﴾

"हालाँकि उन्हें केवल यही आदेश दिया गया था कि वे अल्लाह के लिए धर्म को विशुद्ध करते हुए, एकाग्र होकर, उसकी उपासना करें।" [सूरा अल-बय्यिना : 5], पूरी आयत देखें, उसका एक और कथन है :

﴿وَقَضَى رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ﴾

"और तुम्हारे रब का फ़ैसला है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो।" [सूरा अल-इसरा: 23], उसका एक और कथन है :

﴿إِنَّآ أَنزَلۡنَآ إِلَيۡكَ ٱلۡكِتَٰبَ بِٱلۡحَقِّ فَٱعۡبُدِ ٱللَّهَ مُخۡلِصٗا لَّهُ ٱلدِّينَ﴾

"निःसंदेह हमने आपकी ओर यह पुस्तक सत्य के साथ उतारी है। अतः आप अल्लाह की इबादत इस तरह करें कि धर्म को उसी के लिए खालिस करने वाले हों।" [सूरा अल-ज़ुमर : 2]।

क़ुरआन के अंदर इस अर्थ की बहुत सारी आयतें मौजूद हैं, जो बताती हैं कि इबादत बस अल्लाह की हो सकती है। किसी और की नहीं चाहे वह नबी और वली ही क्यों न हों।

इस बात में भी कोई संदेह नहीं है कि दुआ इबादत का एक महत्वपूर्ण रूप है। इसलिए यह ज़रूरी है कि दुआ भी बस अल्लाह ही से की जाए। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ﴾

"तुम अल्लाह को पुकारो, उसके लिए धर्म को विशुद्ध करके। भले ही काफ़िर बुरा मानें।" [सूरा ग़ाफ़िर : 14], एक दूसरी जगह सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا﴾

"और मस्जिदें अल्लाह ही के लिए हैं। अतः अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को हरगिज़ न पुकारो।" [सूरा अल-जिन्न : 18], इस आयत में जो बात कही गई है, वह एक आम बात है। इसमें नबी आदि सभी दाख़िल हैं। क्योंकि इस आयत में आया हुआ शब्द (أَحَدًا) इस्म-ए-नकिरा है और मनाही संदर्भ में आया है। इसलिए इसके दायरे में अल्लाह को छोड़ सब कुछ आ जाएगा। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ﴾

"और अल्लाह के सिवा उसे न पुकारें, जो आपको न लाभ पहुँचा सकता है और न हानि पहुँचा सकता है।" [सूरा यूनुस : 106], इस आयत में संबोधन यद्यपि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से है, लेकिन यह बात सब लोग जानते हैं कि अल्लाह ने आपको शिर्क से सुरक्षित रखा था, इसलिए स्पष्ट है कि इसका उद्देश्य दूसरे लोगों को सावधान करना है। सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِنَ الظَّالِمِينَ﴾

"फिर यदि, आप ऐसा करेंगे, तो अत्याचारियों में हो जायेंगे।" [सूरा यूनुस : 106], ज़रा सोचें कि अगर मानव जाति के सरदार भी अल्ल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने के कारण ज़ालिमों में शामिल हो जाएँ, तो हम और आप कहाँ ठहरते हैं? यहाँ याद रखें कि क़ुरआन के अंदर जब ज़ुल्म शब्द साधारण रूप में आए, तो उससे मुराद बड़ा शिर्क हुआ करता है। जैसा कि उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ﴾

"और काफ़िर लोग ही अत्याचारी हैं।" [सूरा अल-बक़रा : 254], एक अन्य स्थान में अल्लाह तआला ने कहा है :

﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾

"वास्तव में, शिर्क (बहुदेववाद) बड़ा घोर अत्याचार है।" [सूरा लुक़मान : 13]।

इन तमाम तथा इनके अतिरिक्त अन्य आयतों से मालूम हुआ कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी और, जैसे मरे हुए लोगों, पेड़ों और मूर्तियों को पुकारना, इनको सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह का साझी बनाना है, जो कि उस इबादत के विपरीत है, जिसके लिए अल्लाह ने इन्सान एवं जिन्नात की सृष्टि की है और जिसे स्पष्ट करने और जिसकी ओर बुलाने के लिए रसूल भेजे हैं और किताबें उतारी हैं। यही अर्थ है, ला इलाहा इल्लल्लाह का। क्योंकि इसका अर्थ है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य बहीं है। यह कलिमा किसी और की इबादत का खंडन करता है और एकमात्र अल्लाह की इबादत को सिद्ध करता है। जैसा कि उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ هُوَ ٱلْبَٰطِلُ وَأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْعَلِىُّ ٱلْكَبِيرُ﴾

"यह इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वही असत्य है

और अल्लाह ही सर्वोच्च, महान है।" [सूरा अल-हज्ज : 62]।

यही इस्लाम की आत्मा और उसका मूल आधार है। जब तक यह आधार दुरुस्त न हो, कोई इबादत सही नहीं होती। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴾

"और निःसंदेह तुम्हारी ओर एवं तुमसे पहले के नबियों की ओर वह्य की गई है कि यदि तुमने शिर्क किया, तो निश्चय तुम्हारा कर्म अवश्य नष्ट हो जाएगा और तुम निश्चित रूप से हानि उठाने वालों में से हो जाओगे।" [सूरा अल-ज़ुमर : 65], एक अन्य स्थान में पवित्र अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ﴾

"और अगर वे शिर्क करें तो उनके समस्त कर्म बरबाद हो जाएंगे।" [सूरा अल-अनआम : 88]।

इस्लाम धर्म दो बड़े उसूलों पर आधारित है :

1- अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की इबादत न की जाए।

2- अल्लाह की इबादत उसके नबी एवं रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीयत के अनुसार की जाए। यही अर्थ है, ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही देने का। जिसने मरे हुए लोगों, जैसे नबियों आदि को पुकारा, या बुतों, पेड़ों, पत्थरों आदि सृष्टियों को पुकारा, उनसे फ़रियाद की, उनकी निकटता प्राप्त करने के लिए जानवर ज़बह किए या चढ़ावे चढ़ाए, उनके लिए नमाज़ पढ़ी या उनको सजदा किया, उसने उन्हें अल्लाह को छोड़कर रब बना लिया और अल्लाह का समकक्ष ठहरा दिया, जो कि ऊपर उल्लिखित आधार के विपरीत और ला इलाहा इल्लल्लाह से सीधा टकराता है। बिल्कुल इसी तरह जिसने दीन के नाम पर कोई ऐसा काम किया, जिसकी अनुमति अल्लाह ने नहीं दी है, उसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रसूल होने की गवाही के अर्थ को चरितार्थ होने नहीं दिया। सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَقَدِمْنَا إِلَى مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَنْثُورًا﴾

"और उनके कर्मों को हम लेकर धूल के समान उड़ा देंगे।" [सूरा अल-फ़ुरक़ान : 23], यह उस व्यक्ति के कर्मों का हाल होगा, जो अल्लाह का साझी बनाते हुए मरेगा।

बिल्कुल इसी तरह दीन के नाम पर गढ़े गए कार्य जिन कार्यों की अनुमति अल्लाह ने नहीं दी है, वह भी क़यामत के दिन धूल के समान उड़ जाएँगे। क्योंकि ये आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक शरीयत के अनुसार नहीं हैं। जैसा कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "जिसने हमारे इस धर्म में कोई ऐसी चीज़ पैदा की, जो धर्म का भाग नहीं है, तो वह अमान्य एवं अस्वीकृत है।" सही बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम।

इस लेखिका ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दुआ एवं फ़रियाद की है और सारे संसार के रब से मुँह फेरा है, जिसके हाथ में विजय तथा लाभ एवं हानि है और दूसरे के हाथ में इसमें से कुछ नहीं है।

इस महिला द्वारा किया गया यह कार्य बहुत बड़ा अत्याचार है, इसमें कोई संदेह नहीं है। अल्लाह ने आदेश दिया है कि उसे पुकारा जाए, उसे पुकारने वाले से पुकार सुनने का वादा किया है और इससे अभिमान करने वाले को जहन्नम में डालने की धमकी दी है। जैसा कि उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ﴾

"तथा तुम्हारे रब ने कहा है कि मूझी से प्रार्थना करो, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकर करूँगा। वास्तव में जो लोग मेरी वंदना एवं प्रार्थना (इबादत) से अभिमान करेंगे, वे अपमानित होकर नरक में प्रवेश करेंगे।" [सूरा ग़ाफ़िर : 60], यानी अपमानित एवं रुस्वा होकर। यह आयत बताती है कि दुआ इबादत है और इससे अभिमान करने वाले का ठिकाना जहन्नम है। भला बताएँ कि जब दुआ से अभिमान करने वाले का यह हाल है, तो अल्लाह को छोड़ किसी और को पुकारने वाले का क्या हाल होगा, जबकि अल्लाह निकट है, हर चीज़ का मालिक है और सब कुछ करने की क्षमता रखता है? उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ﴾

"(हे नबी!) जब मेरे बन्दे मेरे विषय में आपसे प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि मैं निश्चय ही क़रीब हूँ, मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ। अतः, उन्हें भी चाहिए कि मेरे आज्ञाकारी बने रहें तथा मुझपर ईमान (विश्वास) रखें, ताकि वे सीधी राह पायें।" [सूरा अल-बक़रा: 186], अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहीह हदीस में है कि दुआ ही इबादत है। अपने चचेरे भाई अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अनहुमा से फ़रमाया : "अल्लाह (के आदेशों और निषेधों) की रक्षा करो, अल्लाह तुम्हारी रक्षा करेगा। अल्लाह (के आदेशों और निषेधों) की रक्षा करो, तुम उसे अपने सामने पाओगे। जब माँगो तो अल्लाह से माँगो और जब मदद चाहो, तो अल्लाह से मदद चाहो।" इसे इमाम तिर्मिज़ी आदि ने रिवायत किया है।

एक अन्य अवसर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "जिस व्यक्ति की मृत्यु इस अवस्था में हुई कि वह किसी को अल्लाह का समकक्ष बनाकर उसे पुकार रहा था, तो वह नरक में प्रवेश करेगा।" इसे इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है। जबकि सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा गया कि सबसे बड़ा गुनाह कौन-से है? तो आपने उत्तर दिया : "यह कि तुम अल्लाह का साझी बनाओ, हालाँकि उसीने तुझे पैदा किया है।" हदीस में आए हुए शब्द "الند" का अर्थ है समतुल्य एवं एक जैसा। जिसने भी अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारा, किसी से फ़रियाद की, किसी के लिए मन्नत मानी, जानवर ज़बह किया या अन्य कोई भी इबादत की,

उसने उसे अल्लाह का समतुल्य बनाया। चाहे वह नबी हो, वली हो, फ़रिश्ता हो, जिन्न हो, बुत हो या कोई अन्य सृष्टि हो।

अलबत्ता, किसी जीवित व्यक्ति से कोई ऐसी चीज़ माँगना, जिसे देने का वह सामर्थ्य रखता हो और उसके सामर्थ्य के दायरे के अंदर के भौतिक कार्यों में उससे मदद माँगना शिर्क नहीं है। ऐसा करना जायज़ है, जैसा कि उच्च एवं महान अल्लाह ने मूसा अलैहिस्सलाम के क़िस्से में फ़रमाया है :

﴿فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِى مِنْ شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِى مِنْ عَدُوِّهِ﴾

"तो उनको (मूसा अलैहिस्सलाम को) पुकारा उसने, जो उनके गिरोह से था, उसके विरुध्द, जो उनके शत्रु में से था।" [सूरा अल-क़सस : 15], मूसा अलैहिस्सलाम के क़िस्से में एक अन्य स्थान में फ़रमाया है :

﴿فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ﴾

"तो वह निकल गया उस (नगर) से डरा सहमा हुआ।" [सूरा अल-क़सस : 21], इसी तरह इन्सान युद्ध आदि विपत्तियों के समय, जब दूसरों की सहायता की ज़रूरत होती है, अपने साथियों से फ़रियाद करता है।

अल्लाह ने अपने नबी को आदेश दिया है कि अपनी उम्मत को बता दें कि आप किसी के लाभ एवं हानि के मालिक नहीं हैं। सूरा जिन्न में है :

﴿قُلْ إِنَّمَا أَدْعُو رَبِّى وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۝ قُلْ إِنِّى لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا﴾

"आप कह दें कि मैं तो केवल अपने रब को पुकारता हूँ और साझी नहीं बनाता उसका किसी अन्य को। आप कह दें कि मैं अधिकार नहीं रखता तुम्हारे लिए किसी हानि का, न सीधी राह पर लगा देने का।" [सूरा अल-जिन्न : 21, 22], सूरा आराफ़ में है :

﴿قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِى نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِىَ السُّوءُ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ﴾

"आप कह दें कि मैं अपने लिए किसी लाभ और हानि का मालिक नहीं हूँ, परंतु जो अल्लाह चाहे। और यदि मैं ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता होता, तो अवश्य बहुत अधिक भलाइयाँ प्राप्त कर लेता और मुझे कोई कष्ट नहीं पहुँचता। मैं तो केवल उन लोगों को सावधान करने वाला तथा शुभ सूचना देने वाला हूँ, जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।" [सूरा अल-आ'राफ़ : 188]।

क़ुरआन के अंदर इस अर्थ की आयतें बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम केवल अपने रब को पुकारा करते थे। बद्र युद्ध के दिन आप अल्लाह से फ़रियाद करते रहे, शत्रुओं पर विजय माँगते रहे और आग्रह करते हुए कहते रहे : "ऐ मेरे रब! जो वादा तूने मुझ से किया है, उसे पूरा करके दिखा दे।" आपकी हालत देखकर अबू बक्र

सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अनहु कहने लगे : ऐ अल्लाह के रसूल! बस हो गया। अल्लाह आपसे किया हुआ वादा ज़रूर पूरा करेगा। इसी परिदृश्य में उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَٱسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُم بِأَلْفٍ مِّنَ ٱلْمَلَٰٓئِكَةِ مُرْدِفِينَ﴾

"जब तुम अपने रब से (बद्र के युद्ध के समय) फ़रियाद कर रहे थे। तो उसने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली। (और कहा :) मैं तुम्हारी सहायता के लिए लगातार एक हज़ार फ़रिश्ते भेज रहा हूँ।" [सूरा अल-अनफ़ाल: 9], इन आयतों में महान अल्लाह ने मुसलमानों को याद दिलाया है कि वे बद्र के दिन अल्लाह से फ़रियाद कर रहे थे और अल्लाह ने उनकी फ़रियाद सुनते हुए फ़रिश्तों द्वारा उनकी सहायता की। फिर अल्लाह ने स्पष्ट कर दिया कि मुसलमानों को जो सहायता मिली थी, वह फ़रिश्तों की ओर से नहीं थी। फ़रिश्ते तो केवल मदद की ख़ुशख़बरी देने और ढारस बंधाने के लिए भेजे गए थे। सहायता अल्लाह की ओर से मिली थी। फ़रमाया :

﴿وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ﴾

"और समर्थन (मदद) तो केवल अल्लाह ही के पास से प्राप्त होता है, जो प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।" [सूरा अल-अनफ़ाल : 10], सूरा आल-ए-इमरान में फ़रमाया है :

﴿وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ﴾

"अल्लाह बद्र में तुम्हारी सहायता कर चुका है, जब तुम निर्बल थे। अतः अल्लाह से डरते रहो, ताकि उसके कृतज्ञ रहो।" [सूरा आल-ए-इमरान : 123]। इस आयत में अल्लाह ने बताया है कि बद्र के दिन मुसलमानों की सहायता अल्लाह ने की थी। इससे मालूम हुआ कि मुसलमानों के पास मौजूद हथियार, शक्ति और फ़रिश्तों का सहयोग आदि सारी चीज़ें विजय, ख़ुशख़बरी और आश्वासन के साधन हैं। इनके दम पर विजय प्राप्त नहीं होती। विजय देने वाला अल्लाह है। ऐसे में इस लेखिका तथा इस प्रकार के अन्य लोगों के लिए जायज़ कैसे हो सकता है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रियाद करें एवं विजय माँगें और सारे संसार के रब से मुँह मोड़े रखें, जो हर चीज़ का मालिक है और सब कुछ करने की क्षमता रखता है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह बदतरीन अज्ञानता और बहुत बड़ा शिर्क है। इसलिए इस लेखिका को विशुद्ध तौबा करनी चाहिए। उसे चाहिए कि अपने इस कृत्य पर शर्मिंदा हो, उसे त्याग दे और दोबारा न करने का संकल्प ले। यह सब वह अल्लाह की महानता को सामने रखते हुए, उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए, उसके आदेश का पालन करते हुए और उसकी मना की हुई चीज़ों से बचते हुए करे। यही सच्ची तौबा है। गुनाह का संबंध अगर किसी सृष्टि के अधिकार के हनन से हो, तो तौबा करते समय एक चौथी चीज़ भी ज़रूरी है। यह चौथी चीज़ है, अधिकार वाले को उसका अधिकार लौटा देना या उससे क्षमा प्राप्त कर लेना।

अल्लाह ने अपने नबी को तौबा का आदेश दिया है और उनकी तौबा क़बूल करने का वादा भी

किया है। जैसा उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ﴾

"ऐ मोमिनो! तुम सब अल्लाह के सामने तौबा करो, ताकि सफल हो जाओ।" [सूरा अल-नूर : 31], एवं ईसाइयों के बारे में कहा है :

﴿أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾

"वे अल्लाह से तौबा तथा क्षमा याचना क्यों नहीं करते, जबकि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान है।" [सूरा अल-माइदा : 74], एक अन्य स्थान में अल्लाह ने कहा है :

﴿وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ﴿٦٨﴾﴾

"और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे पूज्य को नहीं पुकारते, और न उस प्राण को क़त्ल करते हैं, जिसे अल्लाह ने हराम ठहराया है, परंतु हक़ के साथ, और न व्यभिचार करते हैं। और जो ऐसा करेगा, वह पाप का भागी बनेगा। क़यामत के दिन उसकी यातना दुगनी कर दी जाएगी और वह अपमानित होकर उसमें हमेशा रहेगा।

﴿إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا﴾

परंतु जिसने तौबा कर लिया और ईमान ले आया और अच्छे काम किए, तो ये लोग हैं जिनके बुरे कामों को अल्लाह नेकियों में बदल देगा और अल्लाह हमेशा बहुत क्षमा करने वाला, अत्यंत दयावान् है।" [सूरा अल-फ़ुरक़ान : 68-70], एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ﴾

"वही है, जो अपने बंदों की तौबा कबूल करता है और बुराइयों को माफ़ करता है और जो कुछ तुम करते हो, उसे जानता है।" [सूरा अल-शूरा : 25]

सहीह हदीस में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "इस्लाम पहले के गुनाहों को मिटा देता है और तौबा पहले के गुनाहों को ख़त्म कर देती है।"

चूँकि शिर्क एक ख़तरनाक चीज़ और सबसे बड़ा गुनाह है, और इस लेखिका के लेख से आम लोगों के धोखे में पड़ने की आशंका है, एवं अल्लाह की महानता को सामने लाना और उसके बंदों का शुभचिंतन एक ज़रूरी कार्य है, इसलिए मैंने संक्षिप्त में कुछ बातें लिख दी हैं। दुआ है कि अल्लाह इन बातों को लाभकारी बनाए, हमारे और तमाम मुसलमानों के हालात दुरुस्त कर दे, हम सब को सही रूप से दीन समझने और उसपर जमे रहने का सुयोग प्रदान करे तथा हमें और तमाम मुसलमानों को अपनी आत्माओं की बुराइयों एवं बुरे कर्मों से बचाए। निश्चित रूप से यह सब वही कर सकता है। उसके अतिरिक्त किसी के पास इसकी क्षमता नहीं है।

अल्लाह की दया, शांति एवं बरकतें अवतरित हों उसके बंदे एवं रसूल, हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, और आपके परिवार एवं साथियों पर।

दूसरी पुस्तिका

जिन्नों और शैतानों से फ़रियाद और उनके लिए मन्नत मानने के बारे में शरई दृष्टिकोण

यह पुस्तिका अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ की ओर से इसे देखने वाले तमाम मुसलमानों की ओर। अल्लाह मुझे और तमाम मुसलमानों को अपने दीन को थामे रखने और उसपर जमे रहने का सुयोग दे। आमीन।

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु। (आप पर सलामती, अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों।)

इसके बाद अब मूल विषय पर आते हैं। मेरे कुछ दीनी भाइयों ने मुझसे कुछ अज्ञानी लोगों के कुछ कृत्यों, जैसे अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को मसलन जिन्नात आदि को पुकारना, कठिनाइयों के समय उनसे मदद माँगना, फ़रियाद करना, उनके लिए मन्नत मानना और जानवर ज़बह करना आदि के बारे में पूछा। उनका कहना था कि कुछ लोग यह भी कहते हैं कि ऐ जिन्नात के सात सरदारो, इसे पकड़ लो, इसकी हड्डियाँ तोड़ दो, इसका रक्त पी जाओ और इसके साथ ऐसा एवं वैसा करो। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि ऐ जुहर के समय के जिन्नो, इसे पकड़ लो, ऐ अस्र के समय के जिन्नो, इसे पकड़ लो। इस प्रकार की चीज़ें कुछ दक्षिणी भागों में बहुत ज़्यादा पाई जाती हैं। इसी से मिलती-जुलती चीज़ें हैं, मरे हुए लोगों, जैसे नबियों, अल्लाह के नेक बंदों और फ़रिश्तों को पुकारना तथा उनसे फ़रियाद करना। ये सारी तथा इस प्रकार की अन्य चीज़ें स्वयं को मुसलमान कहने वाले बहुत-से लोगों के अंदर पाई जाती हैं। यह सब दरअसल अज्ञानता एवं पुर्खों के अंधे अनुसरण का नतीजा है। कुछ लोग इस तरह की चीज़ों को हल्का करके दिखाने के लिए कह देते हैं कि यह चीज़ें बिना सोचे-समझे ज़बान पर आ जाती हैं और हम इनपर विश्वास नहीं रखते।

मुझसे यह भी पूछा गया कि इस प्रकार के काम करने वालों के साथ शदी-विवाह करने, उनके ज़बह किए हुए जानवर को खाने, उनपर जनाज़े की नमाज़ पढ़ना और उनके पीछे नमाज़ पढ़ना का किया हुक्म है। तथा ग़ैब की बात बताने का दावा करने वालों, जैसे रोगी के शरीर को छूने वाली किसी भी चीज़ जैसे पगड़ी, पायजामा और दुपट्टा आदि को देखकर ही बीमारी और उसके कारणों को जानने का दावा करने वालों को सच मानना कैसा है?

उत्तर : सारी प्रशंसा एकमात्र अल्लाह की है और अल्लाह की शांति एवं दया अवतरित हो अंतिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, आपके परिवार, साथियों और क़यामत के दिन तक उनके पद्चिह्नों पर चलने वालों पर।

इसके बाद अब मूल विषय पर आते हैं। पवित्र एवं महान अल्लाह ने इन्सान एवं जिन्नात की रचना केवल इसलिए की है कि वे अल्लाह ही की इबादत करें, जो माँगना हो उसी से माँगें, उसी से फ़रियाद करें, उसी के लिए जानवर ज़बह करें और मन्नत मानें, अतः इबादत के तौर पर जो कुछ करें उसी के लिए करें। इन्हीं बातों की शिक्षा देने के लिए अल्लाह ने रसूल भेजे और इन्हीं बातों को स्पष्ट करने, इन्हीं की ओर बुलाने और लोगों को शिर्क एवं अल्लाह के अतरिक्त की इबादत से सावधान करने के लिए अल्लाह ने आकाशीय ग्रंथ उतारे, जिनमें सबसे महान क़ुरआन है। यही मूल आधार और दीन की असल बुनियाद है। यही ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही देने का अर्थ है। क्योंकि इस कलिमे का अर्थ यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है। यह कलिमा जहाँ यह बताता है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी इबादत का हक़दार नहीं है, वहीं यह बताता है कि अल्लाह ही इबादत का अकेला हक़दार है। कोई सृष्टि इस लायक़ नहीं है कि उसकी इबादत की जाए। इस मूल आधार के प्रमाण अल्लाह की किताब और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत में बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। मसलन सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ﴾

"और मैंने जिन्नों तथा मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें।" [सूरा अल-ज़ारियात : 56], एक और स्थान पर कहा है :

﴿وَقَضَى رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ﴾

"और तुम्हारे रब का फ़ैसला है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो।" [सूरा अल-इसरा : 23], एक अन्य स्थान में फ़रमाया है :

﴿وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءَ﴾

"हालाँकि उन्हें केवल यही आदेश दिया गया था कि वे अल्लाह के लिए धर्म को विशुद्ध करते हुए, एकाग्र होकर, उसकी इबादत (उपासना) करें।" [सूरा अल-बय्यिनह : 5], एक अन्य स्थान में फ़रमाया है:

﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ﴾

"तथा तुम्हारे रब ने कहा है कि मूझी से प्रार्थना करो, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकर करूँगा। वास्तव में जो लोग मेरी वंदना एवं इबादत (प्रार्थना) से अभिमान करेंगे, वे अपमानित होकर नरक में प्रवेश करेंगे।" [सूरा ग़ाफ़िर : 60], एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ﴾

"(हे नबी!) जब मेरे बन्दे मेरे विषय में आपसे प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि मैं निश्चय ही क़रीब हूँ, मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ।" [सूरा अल-बक़रा : 186]।

इन आयतों में पवित्र एवं महान अल्लाह ने कहा है कि उसने इन्सान और जिन्नात की सृष्टि अपनी इबादत के लिए की है और उसने आदेश दे रखा है कि इबादत केवल उसी की होनी चाहिए। किसी और

की नहीं।

उच्च एवं महान अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन के अंदर और अपने रसूल की ज़बानी इस बात का आदेश दिया है कि लोग इबादत केवल अपने रब की करें। उसने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि दुआ एक बहुत बड़ी इबादत है। इस इबादत से अभिमान करने वाला जहन्नम जाएगा। उसने अपने बंदों को केवल उसी से दुआ करने का आदेश दिया है। उसने बताया है कि वह अपने बंदों से निकट है और उनकी दुआ ग्रहण करता है। इसलिए तमाम बंदों का कर्तव्य है कि दुआ अपने रब ही से करें। क्योंकि दुआ भी इबादत का एक भाग है, जिसके लिए इन्सान एवं जिन्नात पैदा किए गए हैं और आदेशित हैं। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा है :

﴿قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝١٦٢ لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ﴾

"आप कह दें कि निश्चय ही मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण, सारे संसारों के रब अल्लाह के लिए है।

जिसका कोई साझी नहीं तथा मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं सब मानने वालों में से सबसे पहला हूँ।" [सूरा अल-अनआम : 162, 163]

अल्लाह ने अपने नबी को आदेश दिया है कि वह लोगों को बता दें कि उनकी नमाज़, जानवर ज़बह करना, जीना और मरना सब कुछ अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब है। अतः जिसने अल्लाह के सिवा किसी और के लिए जानवर ज़बह किया, तो अल्लाह के साथ शिर्क किया। उसी तरह, जिस तरह अल्लाह के सिवा किसी और के लिए नमाज़ पढ़ना अल्लाह के साथ शिर्क करना है। क्योंकि अल्लाह ने नमाज़ और जानवर ज़बह करने का ज़िक्र एक साथ किया है और बताया है कि ये दोनों काम एकमात्र अल्लाह के लिए हैं और इनमें उसका कोई साझी नहीं है। अतः जिसने अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की निकटता प्राप्त करने के लिए जानवर ज़बह किया, वह चाहे जिन्न हों, फ़रिश्ते हों या मरे हुए लोग, वह अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिए नमाज़ पढ़ने वाले की तरह है। एक सहीह हदीस में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "अल्लाह की धिक्कार हो एसे व्यक्ति पर जो अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के लिए जानवर ज़बह करे।" इसी तरह इमाम अहमद ने हसन सनद द्वारा तारिक़ बिन शिहाब से रिवायत किया है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "दो व्यक्ति एक समुदाय के यहाँ से गुज़रे। उस समुदाय का एक बुत था और प्रचलन यह था कि वहाँ से गुज़रने वाले हर व्यक्ति को कुछ न कुछ चढ़ावा देकर आगे बढ़ना होता था। उन्होंने दोनों में से एक से चढ़ावा चढ़ाने के लिए कहा, तो उसने उत्तर दिया कि उसके पास देने के लिए कुछ नहीं है। समुदाय के लोगों ने कहा कि चढ़ावा तो चढ़ाना पढ़ेगा, एक मक्खी ही सही। अतः उसने एक मक्खी का चढ़ावा चढ़ा दिया, जिसके बाद लोगों ने उसे जाने तो दिया, मगर जहन्नम का हक़दार बन गया। इसके बाद दूसरे व्यक्ति को चढ़ावा चढ़ाने के लिए कहा, तो उसने साफ़ कह दिया कि मैं सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की निकटता प्राप्त करने के लिए कुछ नहीं दे

सकता। तब लोगों ने उसकी गर्दन उड़ा दी और वह जन्नत का हक़दार बन गया।"

आप अंदाज़ा लगाएँ कि जब एक व्यक्ति किसी बुत आदि की निकटता प्राप्त करने के लिए एक मक्खी देने मात्र से मुश्रिक और जहन्नम का हक़दार बन सकता है, तो जिन्नात, फ़रिश्तों और वलियों को पुकारने, उनसे फ़रियाद करने, उनके लिए मन्नत मानने और उनकी निकटता प्राप्त करने के लिए जानवर ज़बह करने वालों का क्या होगा? इस तरह के काम आम तौर पर धन की सुरक्षा, रोगी के स्वास्थ्य लाभ, जानवरों एवं खेती की रक्षा के लिए किए जाते हैं, या फिर जिन्नात आदि के भय से। ज़ाहिर सी बात है कि ऐसे काम करने वाले लोग मक्खी का चढ़ावा चढ़ाने वाले से कहीं बढ़कर मुश्रिक और जहन्नम जाने के हक़दार हैं।

इस संदर्भ में उच्च एवं महान अल्लाह के जो कथन आए हैं, उनमें से एक यह है :

﴿إِنَّآ أَنزَلۡنَآ إِلَيۡكَ ٱلۡكِتَٰبَ بِٱلۡحَقِّ فَٱعۡبُدِ ٱللَّهَ مُخۡلِصٗا لَّهُ ٱلدِّينَ ۝ أَلَا لِلَّهِ ٱلدِّينُ ٱلۡخَالِصُۚ وَٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُواْ مِن دُونِهِۦٓ أَوۡلِيَآءَ مَا نَعۡبُدُهُمۡ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَآ إِلَى ٱللَّهِ زُلۡفَىٰٓ إِنَّ ٱللَّهَ يَحۡكُمُ بَيۡنَهُمۡ فِي مَا هُمۡ فِيهِ يَخۡتَلِفُونَۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهۡدِي مَنۡ هُوَ كَٰذِبٞ كَفَّارٞ﴾

"निःसंदेह हमने आपकी ओर यह पुस्तक सत्य के साथ उतारी है। अतः आप अल्लाह की इबादत इस तरह करें कि धर्म को उसी के लिए खालिस करने वाले हों।

सुन लो! ख़ालिस (विशुद्ध) धर्म केवल अल्लाह ही के लिए है। तथा जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा अन्य संरक्षक बना रखे हैं (वे कहते हैं कि) हम उनकी पूजा केवल इसलिए करते हैं कि वे हमें अल्लाह से क़रीब कर दें। निश्चय अल्लाह उनके बीच उसके बारे में निर्णय करेगा, जिसमें वे मतभेद कर रहे हैं। निःसंदेह अल्लाह उसे मार्गदर्शन नहीं करता, जो झूठा, बड़ा नाशुक्रा हो।" [सूरा अल-ज़ुमर : 1-3] एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ قُلْ أَتُنَبِّئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ﴾

"यह लोग अल्लाह के अतिरिक्त उन चीजों की पूजा-अर्चना करते हैं जो न उन्हें लाभ पहुँचा सकती हैं और न हानि और कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारी सिफ़ारिश करेंगी। तुम उनसे कहो : क्या तुम अल्लाह को उन चीजों के बारे में सूचना दे रहे हो, जिनके अस्तित्व या अनस्तित्व को वह न आकाशों में जानता है और न धरती में? निःसंदेह अल्लाह की हस्ती पवित्र है और वह उस शिर्क (बहुदेववाद) से सर्वथा बुलन्द है, जो यह लोग करते हैं।" [सूरा यूनुस : 18]।

पवित्र एवं महान अल्लाह ने इन दोनों आयतों में बताया है कि मुश्रिकों ने अल्लाह के अतिरिक्त कुछ संरक्षक बना रखे हैं, जिनकी वे अल्लाह के साथ इबादत करते हैं। मसलन उनको पुकारते हैं, उनसे डरते हैं, आशा रखते हैं, उनके लिए जानवर ज़बह करते हैं और मन्नत मानते हैं। और यह सब यह समझकर करते हैं कि उनके ये संरक्षक अपनी इबादत करने वालों को अल्लाह से निकट कर देंगे और उनके लिए

अल्लाह के यहाँ सिफ़ारिश करेंगे। अल्लाह ने उनकी इस सोच को झुठला दिया है तथा इनको झूठा, अविश्वासी और मुश्रिक कहा है और स्वयं को इनके शिर्क से पवित्र क़रार दिया है। फ़रमाया है :

﴿سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ﴾

"वह (अल्लाह) पवित्र है और सर्वोच्च है उससे जो वे शरीक ठहराते हैं।" [सूरा अल-नह्ल : 1] इससे मालूम हुआ कि जिसने अल्लाह के साथ किसी फ़रिश्ते, नबी, जिन्न, पेड़ या पत्थर को पुकारा, उससे फ़रियाद की और मन्नत मानकर या जानवर ज़बह करके उसकी निकटता यह सोचकर प्राप्त करने का प्रयास किया कि वह अल्लाह के यहाँ उसके लिए सिफ़ारिश करेगा, उसे अल्लाह की निकटता दिलाएगा, रोगी को स्वास्थ्य लाभ होगा, धन सुरक्षित रहेगा, खोया हुआ व्यक्ति सलामत रहेगा आदि, वह उस बड़े शिर्क एवं विपत्ति में पड़ गया, जिसके बारे में उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَى إِثْمًا عَظِيمًا﴾

"निःसंदेह, अल्लाह यह क्षमा नहीं करेगा कि उसका साझी बनाया जाए और इसके सिवा को जिसके लिए चाहेगा, क्षमा कर देगा। और जिसने अल्लाह का साझी बनाया, उसने बहुत बड़ा पाप गढ़ लिया।" [सूरा अल-निसा : 48], एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ﴾

"निःसंदेह सच्चाई यह है कि जो भी अल्लाह के साथ साझी बनाए, तो निश्चय उसपर अल्लाह ने जन्नत हराम (वर्जित) कर दी और उसका ठिकाना आग (जहन्नम) है। तथा अत्याचारियों के लिए कोई मदद करने वाले नहीं।" [सूरा अल-माइदा : 72]।

क़यामत के दिन शफाअत (सिफ़ारिश) तौहीद के मार्ग पर चलने और केवल एक अल्लाह की प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए काम करने वालों को प्राप्त होगी। शिर्क की राह पर चलने वालों को नहीं। एक हदीस में है कि जब अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा गया कि आपकी शफाअत (सिफ़ारिश) का सबसे अधिक हक़दार कौन होगा, तो आपने फ़रमाया : "जो सच्चे दिल से "ला इलाहा इल्लल्लाह" कहे।" एक अन्य अवसर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "हर नबी की एक दुआ निश्चित रूप से ग्रहण होती है। मैंने अपनी इस दुआ को क़यामत के दिन अपनी उम्मत की शफाअत (सिफ़ारिश) के लिए छुपा रखा है। इस दुआ का हक़दार मेरी उम्मत का हर वह व्यक्ति होगा, जिसकी मौत इस हाल में आए कि वह किसी को अल्लाह का शरीक न ठहराता हो।"

आरंभिक काल के मुश्रिकों का विश्वास था कि अल्लाह उनका रचयिता और आजीविका दाता है। वह नबियों, वलियों, फ़रिश्तों, पेड़ों और पत्थरों आदि से जुड़ाव इस आधार पर रखते थे कि ये अल्लाह के यहाँ उनके लिए सिफ़ारिश करेंगे और उनको अल्लाह की निकटता लाभ कराएँगे, जैसा कि कुछ आयतों के आलोक में पीछे गुज़र चुका है। लेकिन उनकी इस धारणा को न तो अल्लाह ने मान्यता दी और न उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने। अल्लाह ने अपने महान ग्रंथ में उनके इस विचार

का खंडन किया, उनको काफ़िर एवं मुश्रिक कहा और बताया कि उनके ये पूज्य न तो उनके लिए सिफ़ारिश करेंगे और न उनको अल्लाह की निकटता लाभ करा सकेंगे। बल्कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे उस समय तक युद्ध किया, जब तक वे केवल एक अल्लाह की इबादत न करने लगे और आप ने इसमें अल्लाह के इस कथन पर अमल किया:

﴿وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ﴾

"ऐ ईमान वालो! उनसे उस समय तक युद्ध करो यहाँ तक कि फ़ितना (शिर्क) समाप्त हो जाए और धर्म पूरा अल्लाह के लिए हो जाए।" [सूरा अल-अनफ़ाल : 39] और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है : "मुझे आदेश दिया गया है कि लोगों से युद्ध करूँ, यहाँ तक कि वे इस बात की गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें। अगर उन्होंने इतना कर लिया तो अपनी जान तथा माल को इस्लाम के अधिकार के सिवा हमसे सुरक्षित कर लिया और उनका हिसाब अल्लाह पर है।" अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन : "यहाँ तक कि वे इस बात की गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है" का अर्थ है; यहाँ तक कि वे तमाम चीज़ों को छोड़-छाड़ कर केवल एक अल्लाह की इबादत न करने लगें।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दौर के मुश्रिक जिन्नात से डरते थे और उनकी शरण लेथे। चुनांचे इसी परिप्रेक्ष्य में उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِنَ الْإِنْسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا﴾

"और वास्तविकता यह है कि मनुष्यों में से कुछ लोग, जिन्नों में से कुछ लोगों की शरण लिया करते थे। तो उन्होंने उन (जिन्नों) को सरकशी में बढ़ा दिया।" [सूरा अल-जिन्न : 6]। इस आयत के बारे में क़ुरआन के व्याख्याकारों ने लिखा है : अल्लाह के कथन : ﴿فَزَادُوهُمْ رَهَقًا﴾

(فَزَادُوهُمْ رَهَقًا) का अर्थ है : घबराहट और भय। जिन्नात जब देखते हैं कि इन्सान उनकी शरण ले रहे हैं, तो अभिमान में आ जाते हैं तथा उन्हें और अधिक डराना शुरू कर देते हैं, ताकि उनकी इबादत और उनकी शरण लेने की प्रवृत्ति को और बढ़ावा मिले।

अल्लाह ने मुसलमानों से कहा है कि वे इसके बदले में अल्लाह की और उसके संपूर्ण शब्दों की शरण लें। इस संदर्भ में उसने कहा है :

﴿وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾

"यदि शैतान की ओर से तुम्हारे दिल में कोई भ्रम उत्पन्न हो तो उससे अल्लाह की शरण माँगो। निःसंदेह वह बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है।" [सूरा अल-आराफ़ : 200], इसी तरह सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह का कथन है :

﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ﴾ ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾

"(हे नबी!) कहो कि मैं भोर के रब की शरण लेता हूँ।"

"(हे नबी!) कहो कि मैं इन्सानों के रब की शरण में आता हूँ।" अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक सहीह हदीस में है : "जिसने किसी स्थान में उतरते समय यह दुआ पढ़ी : أعوذ بكلمات الله التامّات من شر ما خلق अर्थात : "मैं अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ों की बुराई से उसके संपूर्ण शब्दों की शरण में आता हूँ", उसे कोई वस्तु वह स्थान छोड़ने तक नुक़सान नहीं पहुँचा सकती।"

उपरोक्त आयतों एवं हदीसों से मुक्ति की चाहत, अपने धर्म को सुरक्षित रखने की इच्छा और स्वयं को छोटे-बड़े हर प्रकार के शिर्क से बचाने में दिलचस्पी रखने वाला व्यक्ति जान सकता है कि मरे हुए लोगों, फ़रिश्तों और जिन्नात आदि से आशाएँ रखना, उनको पुकारना और उनसे फ़रियाद करना आदि जाहिलीयत काल (अज्ञानता काल) के मुश्रिकों के कार्य और अल्लाह का साझी बनाने की बदतरीन मिसालें हैं। इसलिए इन्हें छोड़ना, इनसे सावधान रहना, एक-दूसरे को इन्हें छोड़ने का आदेश देना और इनमें संलिप्त लोगों की भर्त्सना करना ज़रूरी है।

जिस व्यक्ति के बारे में पता हो कि वह इस तरह के कार्यों में संलिप्त है, उससे शादी-विवाह करना, उसके ज़बह किए हुए जानवर को खाना, उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ना और उसके पीछे नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं है। हाँ, अगर वह इन कार्यों से तौबा का एलान कर देता है और एक अल्लाह को पुकारना और केवल उसी की इबादत करना शुरू कर देता है, तो ठीक है। याद रहे कि दुआ ही इबादत, बल्कि उसका सार है। जैसा कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "दुआ ही इबादत है।" अन्य शब्दों में आप सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम से वर्णित है : "दुआ इबादत का सार है।" तथा उच्च एवं महान अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكَاتِ حَتَّى يُؤْمِنَّ وَلَأَمَةٌ مُؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِنْ مُشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّى يُؤْمِنُوا وَلَعَبْدٌ مُؤْمِنٌ خَيْرٌ مِنْ مُشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ أُولَئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ﴾

"तथा मुश्रिक स्त्रियों से तुम विवाह न करो, जब तक वे ईमान न लायें और ईमान वाली दासी मुश्रिक स्त्री से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हारे मन को भा रही हो और अपनी स्त्रियों का निकाह़ मुश्रिकों से न करो, जब तक वे ईमान न लायें और ईमान वाला दास मुश्रिक से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हें भा रहा हो। वे तुम्हें अग्नि की ओर बुलाते हैं तथा अल्लाह स्वर्ग और क्षमा की ओर बुला रहा है, और (अल्लाह) सभी मानव के लिए अपनी आयतें (आदेश) उजागर कर रहा है, ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।" [सूरा अल-बक़रा : 221] यहाँ हम देख रहे हैं कि पवित्र एवं महान अल्लाह ने मुसलमानों को मुश्रिक औरतों से शादी करने से मना किया है, चाहे वो बुतों की इबादत करने वाली हों या जिन्नात एवं फ़रिश्तों की, जब तक वो विशुद्ध रूप से एक अल्लाह की इबादत, इस संबंध में प्राप्त रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षाओं की पुष्टि एवं आपके मार्ग के अनुसरण के माध्यम से मोमिन न हो जाएँ। इसी प्रकार मुस्लिम औरतों की शादी मुश्रिकों से कराने से मना किया है, जब तक वो विशुद्ध रूप से एक अल्लाह की इबादत,

इस संबंध में प्राप्त रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षाओं की पुष्टि एवं आपके मार्ग के अनुसरण के माध्यम से मोमिन न हो जाएँ।

उच्च एवं पवित्र अल्लाह ने आगे बताया है कि मोमिन दासी आज़ाद मुश्रिक औरत से बेहतर है, यद्यिपि उसका रूप एवं उसकी बातें आकर्षित क्यों न करती हों। इसी तरह मुस्लिम दास आज़ाद मुश्रिक से बेहतर है, यद्यपि उसका सौन्दर्य, वाक्पटुता और बहादुरी आकर्षित क्यों न करती हो। फिर इसके कारण बताते हुए फ़रमाया है :

﴿أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ﴾

"यही लोग जहन्नम की ओर बुलाते हैं।" [सूरा अल-बक़रा : 221]। यानी मुश्रिक पुरुष एवं मुस्लिम महिलाएँ। ये लोग अपने कथन, कार्य, सीरत एवं चरित्र से आग की ओर बुलाते हैं। जबकि मोमिन पुरुष एवं मोमिन स्त्रियाँ अपने आचरण, कार्य और व्यवहार से जन्नत की ओर बुलाते हैं। आप खुद ही सोचें कि दोनों बराबर कैसे हो सकते हैं?

इसी तरह सर्वशक्तिमान अल्लाह ने मुनाफ़िक़ों के बारे में फ़रमाया है :

﴿وَلَا تُصَلِّ عَلَىٰ أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَاتُوا وَهُمْ فَاسِقُونَ﴾

"(ऐ नबी!) उनमें से कोई मर जाए, तो आप उसके जनाज़े की नमाज़ कभी न पढ़ें और न उसकी क़ब्र पर खड़े हों। क्योंकि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया है और अवज्ञाकारी रहते हुए मरे हैं।" [सूरा अल-तौबा : 84], इस आयत में सर्वशक्तिमान अल्लाह ने स्पष्ट कर दिया है कि मुनाफ़िक़ एवं काफ़िर की जनाज़े की नमाज़ नहीं पढ़ी जाएगी। इसका कारण है अल्लाह एवं उसके रसूल के प्रति दोनों का अविश्वास। इसी तरह उनके पीछे नमाज़ नहीं पढ़ी जाएगी और उनको मुसलमानों का इमाम नहीं बनाया जाएगा। इसके कारण हैं दोनों का अविश्वास, अमानतदारी से खाली होना, उनकी मुस्लिम दुश्मनी तथा उनका नमाज़ एवं इबादत का पात्र न होना। क्योंकि अविश्वास एवं शिर्क के साथ कोई अमल बाक़ी नहीं रहता। दुआ है कि अल्लाह हमें इनसे बचाए। महान अल्लाह ने मरे हुए और मुश्रिकों के ज़बह किए हुए जानवरों के बारे में कहा है :

﴿وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ﴾

"तथा उसमें से न खाओ, जिसपर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। वास्तव में, उसे खाना (अल्लाह की) अवज्ञा है। निःसंदेह, शैतान अपने सहायकों के मन में संशय डालते रहते हैं, ताकि वे तुमसे विवाद करें और यदि तुमने उनकी बात मान ली, तो निश्चय तुम मुश्रिक हो।" [सूरा अल-अनआम : 121], हम देख रहे हैं कि इस आयत में अल्लाह -उसकी महिमा असीम है- ने मरा हुआ एवं मुश्रिकों का ज़बह किया हुआ जानवर खाने से मना किया है। क्योंकि जब मुश्रिक अशुद्ध है, इसलिए उसका ज़बह किया हुआ जानवर मरे हुए जानवर के समान है। चाहे उसपर अल्लाह का नाम ही क्यों न लिया गया हो। क्योंकि

उसका अल्लाह का नाम लेना निरर्थक है। क्योंकि अल्लाह का नाम लेना इबादत है और शिर्क इबादत को नष्ट कर देता है। जब तक इन्सान शिर्क से तौबा न कर ले, उसकी कोई इबादत काम नहीं देती। वैसे अल्लाह -उसकी महिमा असीम है- ने अपने इस कथन में किताब वालों के भोजन को हलाल कहा है :

﴿وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حِلٌّ لَكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَهُمْ﴾

"और उन लोगों का खाना तुम्हारे लिए हलाल है जिन्हें किताब दी गई, और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है।" [सूरा अल-माइदा : 5], क्योंकि वह अपना संबंध एक आकाशीय धर्म से जोड़ते हैं और मूसा एवं ईसा अलैहिमस्सलाम के अनुसरणकारी होने का दावा करते हैं। हालाँकि उनका यह दावा झूठा है और अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पूरी मानव जाति का रसूल बनाकर भेजकर उनके दीन को निरस्त कर दिया है। लेकिन इन सारी बातों के बावजूद सर्वज्ञानी अल्लाह ने उनके भोजन तथा उनकी औरतों को हमारे लिए कई हिकमतों के मद्देनज़र हलाल क़रार दिया है, जिन्हें इस्लामी विद्वानों ने बयान फ़रमाया है। जबकि इसके विपरीत बुतों और मुर्दों, जैसे नबियों और वलियों आदि की इबादत करने वाले मुश्रिकों के भोजन को हलाल नहीं किया है, क्योंकि इनके दीन का कोई आधार नहीं है। यह बिल्कुल ही निराधार है। अतः इनका ज़बह किया हुआ जानवर मरा हुआ जावर शुमार होगा और उसे खाने की अनुमति नहीं है।

जहाँ तक किसी व्यक्ति का अपने सामने वाले व्यक्ति से (तुझे जिन्न लग गया है), (तुझे जिन्न ने पकड़ लिया है), (तुझे शैतान ले उड़ा है) और इस प्रकार की अन्य बातें कहने का प्रश्न है, तो इस तरह के वाक्य गाली-गलौज के दायरे में आते हैं और गाली-गलौज के अन्य शब्दों की तरह इन वाक्य का उच्चारण किसी मुसलमान के लिए करना जायज़ नहीं है। लेकिन ये वाक्य शिर्क के दायरे में नहीं आते। हाँ, अगर इस प्रकार के वाक्यों का प्रयोग करने वाले व्यक्ति का विश्वास हो कि जिन्नात अल्लाह की अनुमति एवं इच्छा के बिना ही इन्सान पर प्रभाव डाल सकते हैं, तो बात अलग है। जिसने जिन्नात या किसी अन्य सृष्टि के बारे में इस प्रकार का विश्वास रखा, वह अपने इस विश्वास के कारण काफ़िर हो गया। क्योंकि अल्लाह ही हर चीज़ का मालिक है, उसी के पास सब कुछ करने की क्षमता है, वही लाभ एवं हानि का मालिक है, उसकी अनुमति, इच्छा एवं पूर्व निर्णय के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता। अल्लाह ने अपने नबी को इस बात का आदेश देते हुए कि लोगों को इस महान सिद्धांत के बारे में बता दें, कहा है :

﴿قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ﴾

"आप कह दें कि मैं अपने लिए किसी लाभ और हानि का मालिक नहीं हूँ, परंतु जो अल्लाह चाहे। और यदि मैं ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता होता, तो अवश्य बहुत अधिक भलाइयाँ प्राप्त कर लेता और मुझे कोई कष्ट नहीं पहुँचता। मैं तो केवल उन लोगों को सावधान करने वाला तथा शुभ सूचना देने वाला हूँ, जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।" [सूरा अल-आराफ़ : 188], आप अंदाज़ा लगाएँ कि जब इस सृष्टि का सरदार एवं

उनमें सबसे उत्कृष्ट व्यक्ति अपने लाभ एवं हानि का उससे ज़्यादा मालिक नहीं है, जितना अल्लाह चाहे, तो दूसरों का क्या हाल होगा? क़ुरआन के अंदर इस आशय की बहुत-सी आयतें मौजूद हैं।

जहाँ तक ग़ैब की बात बताने वालों, हाथ की सफाई एवं करतब दिखाने वालों और ज्योतिषियों आदि से कुछ पूछने की बात है, तो यह ग़लत है। जायज़ नहीं है। उनकी कही हुई बातों की पुष्टि करना तो और ग़लत है। बल्कि कुफ़्र की एक शाखा है। क्योंकि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "जिसने किसी खोई हुई अथवा चोरी की हुई वस्तु के बारे में बताने का दावा करने वाले के पास जाकर उससे कुछ पूछा, उसकी चालीस दिन की नमाज़ ग्रहण नहीं होगी।" इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में रिवायत किया है। सहीह मुस्लिम ही में मुआविया बिन हकम सुलमी रज़ियल्लाहु अनहु से यह भी वर्णित है : अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने काहिनों के पास जाने और उनसे कुछ पूछने से मना किया है।

जबकि अह्ल-ए-सुनन ने रिवायत किया है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "जिस व्यक्ति ने किसी काहिन के पास जाकर उससे कुछ पूछा और उसकी कही हुई बात को सच माना, उसने उस दीन (धर्म) का इनकार किया जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरा है।" हदीस की किताबों में इस अर्थ की बहुत-सी हदीसें मौजूद हैं। इसलिए मुसलमानों को अनिवार्य रूप से काहिनों, ग़ैब की बात जानने का दावा करने वालों और करतब दिखाने वालों से सावधान रहना चाहिए, जो ग़ैब की बात बताते फिरते हैं और मुसलमानों को धोखा देते हैं, चाहे वह इलाज के नाम पर ही क्यों न हो। पीछे गुज़र चुका है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस प्रकार के लोगों के पास जाने और उनकी पुष्टि करने से मना फ़रमाया है एवं उनसे सावधान किया है। इसके अंदर इलाज के नाम पर किए जाने वाले ग़ैब की बात जानने के दावे भी शामिल हैं। मसलन कुछ लोग पुरुष रोगी की पगड़ी या महिला रोगी का दोपट्टा आदि सूँघ कर बताना कि इसने यह काम किया है या अमुक चीज़ बनाई है। हालाँकि यह ग़ैब की बात है, जिसका रोगी की पगड़ी या दोपट्टा से कोई संकेत नहीं मिलता। इसका उद्देश्य केवल धोखा देना होता है, ताकि लोग कहें कि इसके पास इलाज एवं रोग और उसके प्रकारों का ज्ञान है। कभी-कभी यह लोग कुछ दवाएँ भी दे देते हैं और अल्लाह के लिखे के अनुसार स्वास्थ्य लाभ हो जाता है, तो उनके प्रति लोगों को विश्वास दृढ़ हो जाता है। कभी-कभी बीमारी के पीछे कुछ जिन्नों एवं शैतानों का हाथ हुआ करता है, जो इलाज का दावा करने वाले इस प्रकार के लोगों से जुड़े होते हैं और उन्हें कुछ ग़ैब की बातें बता देते हैं, जिनसे वह किसी तरह अवगत हो जाते हैं। तब इलाज का दावा करने वाले लोगों का भरोसा इन्हीं बातों पर होता है। यह लोग जब जिन्नों एवं शैतानों की कुछ इबादतें करते हैं, तो खुश होकर वे रोगी को छोड़कर चले जाते हैं और उसे कष्ट देना बंद कर देते हैं। यह बातें जिन्नों एवं शैतानों तथा उनका इस्तेमाल करने वालों के बारे में मशहूर और प्रचलित हैं।

इसलिए मुसलमानों को इस प्रकार की चीज़ों से सावधान रहना चाहिए, दूसरों से इनसे दूर रहने का आग्रह करना चाहिए और सभी मामलों में एक मात्र अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए। हाँ, क़ुरआन एवं

हदीस में आए हुए अज़कार को पढ़कर इलाज करने, जायज़ दवाओं का प्रयोग करने और ऐसे डॉक्टरों के पास जाने में कोई हर्ज नहीं है, जो रोगी का चेकअप करते हैं और भोतिक उपकरणों द्वारा बीमारी की पहचान करते हैं। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक सहीह हदीस में है : "अल्लाह ने जितने भी रोग उतारे हैं, उनकी दवा भी उतारी है। यह और बात है कि कसी को मालूम हो गई और किसी को मालूम न हो सकी।" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक और अवसर पर फ़रमाया है : "हर बीमारी की दवा मौजूद है। जब बीमारी की सही दवा ज्ञान में आजाती है, तो अल्लाह की अनुमति से स्वास्थ्य लाभ होता है।" एक और हदीस में है : "अल्लाह के बंदो! इलाज किया करो, लेकिन किसी हराम चीज़ द्वारा इलाज न किया करो।" इस अर्थ की और भी बहुत-सी हदीसें हैं।

दुआ है कि अल्लाह -जिसकी महिमा असीम है- तमाम मुसलमानों के हालात दुरुस्त कर दे, उनके दिलों एवं शरीरों को हर बीमारी से स्वास्थ्य लाभ करे, उनको सच्चे मार्ग पर चलाए, उन्हें और हमें गुमराह कर देने वाले फ़ितनों और शैतान तथा उसके मित्रों के अनुसरण से बचाए। वह जो चाहे कर सकता है। उसकी ओर से सुयोग मिले बिना न कोई बुरे काम से बच सकता है और न अच्छा काम कर सकता है।

अल्लाह की दया, शांति एवं बरकतें अवतरित हों उसके बंदे एवं रसूल, हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और आपके परिवार एवं साथियों पर।

तीसरी पुस्तिका

शिर्क की मिलावट वाले और नवाचारित अज़कार के माध्म से इबादत के बारे में शरई दृष्टिकोण

अब्दुल अज़ीज़ अब्दुल्लाह बिन बाज़ की ओर से सम्मानित भाई ..... के नाम, उसे अल्लाह हर भलाई का सुयोग प्रदान करे। आमीन।

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह, (आप पर शांति, अल्लाह की दया एवं बरकतें उतरें।)

अब मूल विषय पर आते हैं। मुझे आपका पत्र मिला, जिससे मालूम हुआ कि आपके यहाँ कुछ लोग कुछ ऐसे विर्द करते हैं, जो किताब व सुन्नत से साबित नहीं हैं। उनमें से कुछ विर्द बिदअत पर आधारित हैं, तो कुछ शिर्क पर। और वे इन विर्दों का संबंध अमीरुल मोमिनीन अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अनहु आदि से जोड़ते हैं। लोग इन विर्दों को ज़िक्र की सभाओं या मग्रिब की नमाज़ के बाद मस्जिदों में यह समझकर पढ़ते हैं कि इससे अल्लाह की निकटता प्राप्त होगी। मसलन वे कहते हैं : अल्लाह के लिए, ऐ अल्लाह के लोगो! अल्लाह की मदद से हमारी मदद करो और अल्लाह के वास्ते हमारे मददगार बन जाओ। इसी तरह वह कहते हैं : ऐ क़ुतुबो और ऐ सरदारो! ऐ हमारी मदद करने वालो! अल्लाह के लिए हमारी सिफ़ारिश करो। यह आपका बंदा खड़ा है। आपके द्वार पर पड़ा हुआ है। अपनी कोताहियों से घबराया हुआ है। ऐ अल्लाह के रसूल! हमारी फ़रियाद सुन लें। भला आपको छोड़ कर हम किसके पास जाएँ? मुराद तो यहीं से पूरी होनी है। आप अल्लाह वाले हैं। शहीदों के सरदार हमज़ा के वास्ते से हमारी

मदद करें। ऐ अल्लाह के रसूल! हमारी फ़रियाद सुनें। इसी तरह वह कहते हैं : ऐ अल्लाह! अपनी दया उसपर उतार, जिसे तूने अपने वैभव के रहस्यों के प्रकटन और दया पर आधारित प्रकाशों के सामने आने का सबब बनाया है। जिसके फलस्वरूप वह तेरा नायब और तेरे ज़ाती रहस्यों का ख़लीफ़ा बन गया।

आपने इच्छा व्यक्त की कि शिर्क एवं बिदअत की परिभाषा समझा दी जाए और यह बता दिया जाए कि क्या इस तरह की दुआ करने वाले व्यक्ति के पीछे नमाज़ पढ़ना सही है? जबकि यह सारी बातें सर्वविदित हैं।

उत्तर : सारी प्रशंसा एकमात्र अल्लाह के लिए है और अल्लाह की शांति एवं दया अवतरित हो अंतिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, और आपके परिवार, साथियों और क़यामत के दिन तक उनके पद्चिह्नों पर चलने वालों पर।

अब मूल विषय पर आते हैं। सबसे पहले हमें यह जानना चाहिए कि अल्लाह ने सृष्टि की रचना इसलिए की और रसूल इसलिए भेजे कि एकमात्र उसी की इबादत की जाए और किसी को उसका साझी न बनाया जाए। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ﴾

"और मैंने जिन्नों तथा मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें।" [सूरा अल-ज़ारियात : 56]।

जबकि इबादत नाम है, अल्लाह का अनुसरण करने और उसके रसूल का अनुसरण करने का। अनुसरण का मतलब यह है कि अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों का पालन किया जाए और उनकी मना की हुई चीज़ों से दूर रहा जाए। इबादत के साथ ज़रूरी है कि अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान हो, एकमात्र अल्लाह की प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए काम किया जाए और अल्लाह से हद दर्जा मुहब्बत हो और उसके सामने संपूर्ण विनम्रता धारण की जाए। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَقَضَى رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ﴾

"और तुम्हारे रब का आदेश है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो।" [सूरा अल-इसरा : 23], इस आयत में आए हुए शब्द "قَضَى" का अर्थ है, आदेश और हुक्म दिया। एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۝ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ﴾

"हर प्रकार की प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है, जो सारे संसारों का रब है। जो अत्यंत दयावान्, असीम दया वाला है। जो बदले के दिन का मालिक है। (ऐ अल्लाह!) हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से सहायता माँगते हैं।" [सूरा अल-फ़ातिहा : 2-5], इन आयतों के माध्यम से अल्लाह ने स्पष्ट रूप से बता दिया है कि वही एकमात्र इस बात का हक़दार है कि उसकी इबादत की जाए और उससे मदद माँगी जाए। उसके सिवा कोई इस योग्य नहीं है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿إِنَّآ أَنزَلۡنَآ إِلَيۡكَ ٱلۡكِتَٰبَ بِٱلۡحَقِّ فَٱعۡبُدِ ٱللَّهَ مُخۡلِصٗا لَّهُ ٱلدِّينَ ۝ أَلَا لِلَّهِ ٱلدِّينُ ٱلۡخَالِصُۚ﴾

"निःसंदेह हमने आपकी ओर यह पुस्तक सत्य के साथ उतारी है। अतः आप अल्लाह की इबादत इस तरह करें कि धर्म को उसी के लिए खालिस करने वाले हों। सुन लो, शुद्ध धर्म अल्लाह ही के लिए है।" [सूरा अल-ज़ुमर : 2-3], एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ﴾

"तुम अल्लाह को पुकारो, उसके लिए धर्म को विशुद्ध करके। भले ही काफ़िर बुरा मानें।" [सूरा ग़ाफ़िर : 14], एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا﴾

"और मस्जिदें अल्लाह ही के लिए हैं। अतः अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को हरगिज़ न पुकारो।" [सूरा अल-जिन्न : 18], क़ुरआन के अंदर इस आशय की आयतें बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं और सब की सब बताती हैं कि इबादत केवल एक अल्लाह ही की होनी चाहिए।

और यह बात सर्वविदित है कि दुआ अपने सभी रूपों के साथ इबादत है। इसलिए इन आयतों तथा इस प्रकार की अन्य आयतों के मद्देनज़र किसी के लिए भी अल्लाह के सिवा किसी से दुआ करना, मदद माँगना और फ़रियाद करना जायज़ नहीं है। लेकिन यहाँ बात सामान्य परिस्थितियों एवं भौतिक संसाधनों से परे की हो रही है, जिनमें जीवित एवं उपस्थित इन्सान सहयोग कर सकता है। इस तरह के हालात में सहयोग माँगना इबादत नहीं है। क़ुरआन एवं सुन्नत तथा उलेमा के मतैक्य से यह बात साबित है कि सामान्य कार्यों में जीवित एवं सक्षम इन्सान का सहयोग ऐसे कार्यों में लिया जा सकता है, जो सहयोग करने की शक्ति रखता हो। जैसे अपने बच्चे, नौकर या कुत्ते की बुराई आदि से बचने के लिए किसी से सहयोग माँगना या फ़रियाद करना। या फिर मसलन कोई व्यक्ति किसी जीवित, उपस्थित एवं सक्षम व्यक्ति से या फिर किसी अनुपस्थित व्यक्ति से लिखित संदेश आदि संवेदी माध्यमों से अपने घर के निर्माण या गाड़ी ठीक कराने आदि के लिए सहयोग माँगे। इसी का एक उदाहरण सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह का यह कथन भी है, जो मूसा अलैहिस्सलाम के क़िस्से में आया हुआ है :

﴿فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِي مِنْ شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ﴾

"तो जो उसके (मूसा अलैहिस्सलाम के) गिरोह में से था, उसने उसके विरुद्ध उससे मदद माँगी, जो उसके शत्रुओं में से था।" [सूरा अल-क़सस : 15]

यही हाल जिहाद एवं युद्ध आदि में अपने साथियों से फ़रियाद करने का है।

लेकिन जहाँ तक मरे हुए लोगों, जिन्नात, फ़रिश्तों, पेड़ों और पत्थरों से फ़रियाद करने की बात है, तो यह सारी चीज़ें बड़े शिर्क में दाख़िल हैं। इसी तरह के काम अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दौर के मुश्रिक अपने पूज्यों, जैसे लात एवं उज़्ज़ा आदि के साथ करते थे। इसी तरह ऐसे जीवित लोगों से, जिन्हें वली समझा जाता हो, ऐसी चीज़ों के लिए फ़रियाद करना एवं मदद माँगना शिर्क है, जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई दे नहीं सकता, जैसे रोगियों को रोगमुक्त करना, दिलों को हिदायत देना,

जन्नत में दाख़िल करना और जहन्नम से बचाना आदि।

उपर्युक्त आयतें और इस आशय की अन्य आयतें एवं हदीसें इस बात को प्रमाणित करती हैं कि तमाम मामलात में दिलों को अल्लाह से संबद्ध करना चाहिए और एकमात्र उसी की इबादत करनी चाहिए। क्योंकि इन्सान को पैदा ही इसी के लिए किया गया है और उसे आदेश भी इसी का दिया गया है। जैसा कि कुछ आयतों के आलोक में पीछे बताया जा चुका है। एक जगह उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا﴾

"अल्लाह की इबादत करो और किसी को उसका साझी मत बनाओ।" [सूरा अल-निसा : 36], एक और स्थान पर वह कहता है :

﴿وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ﴾

"हालाँकि उन्हें केवल यही आदेश दिया गया था कि वे अल्लाह के लिए धर्म को विशुद्ध करते हुए, एकाग्र होकर, उसकी उपासना करें।" [सूरा अल-बय्यिना : 5] इसी तरह अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुआज़ रज़ियल्लाहु अनहु की हदीस में फ़रमाया है : "अल्लाह का हक बंदों के ऊपर यह है कि वे उसकी उपासना करें और उसका किसी को साझी न ठहराएँ।" इस सहदीस को इमाम बुख़ारी तथा इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है। इसी तरह अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अनहु की हदीस में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "जिस व्यक्ति की मृत्यु इस अवस्था में हुई कि वह किसी को अल्लाह का समकक्ष बनाकर उसे पुकार रहा था, तो वह जहन्नम (नरक) में प्रवेश करेगा।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है। सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अनहुमा का वर्णन है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मुआज़ रज़ियल्लाहु अनहु को यमन की ओर भेजा, तो फ़रमाया : "तुम एक ऐसे समुदाय के पास जा रहे हो, जिसे इससे पहले किताब दी जा चुकी है। अतः, सबसे पहेल उन्हें "لا إله إلا الله" की गवाही देने की ओर बुलाना।" एक दूसरी रिवायत में है : "उन्हें इस बात की गवाही देने का आह्वान करना कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है और मैं अल्लाह का रसूल हूँ।" जबकि सहीह बुखारी की एक रिवायत में है : "उन्हें इस बात का आह्वान करना कि अल्लाह को एक मानें।" सहीह मुस्लिम में तारिक़ बिन अश्यम अशजई रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित एक हदीस में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "जिसने अल्लाह को एक माना और अल्लाह के अतिरिक्त पूजी जाने वाली अन्य चीज़ों नकार दिया, उसका धन एवं रक्त सुरक्षित हो गया और उसका हिसाब सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह पर है।" हदीस की किताबों में इस आशय की बहुत-सी हदीसें मौजूद हैं।

यह तौहीद इस्लाम धर्म का मूल आधार है और सबसे महत्वपूर्ण फ़रीज़ा है। इसी के लिए इन्सान एवं जिन्नात की सृष्टि की गई और तमाम रसूल भेजे गए। इस आशय की आयतें पीछे गुज़र चुकी हैं, जिनमें एक आयत इस तरह है :

﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ﴾

"और मैंने जिन्नों तथा मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें।" [सूरा अल-ज़ारियात : 56], इसका एक प्रमाण सर्वशक्तिमान अल्लाह का यह कथन भी है :

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اُعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾

"और हमने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत (वंदना) करो तथा तागूत (अल्लाह के अतिरिक्त अन्य पूज्य) से बचो।" [सूरा अल-नह्ल : 36], इसी प्रकार अल्लाह तआला फ़रमाता है :

﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ﴾

"और हमने आपसे पहले जो भी रसूल भेजा, उसकी ओर यही वह्य (प्रकाशना) करते थे कि मेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। अतः मेरी ही इबादत करो।" [सूरा अल-अंबिया : 25]। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने नूह, हूद, सालेह और शुऐब अलैहिमुस्सलाम के बारे में कहा है कि उन्होंने अपनी-अपनी जातियों से कहा था :

﴿اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ﴾

"तुम अल्लाह की उपासना करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई उपास्य नहीं है।" [सूरा अल-मोमिनून: 23], यही सभी रसूलों का आह्वान है। यही पिछली दोनों आयतों से प्रतीत होता है। रसूलों के दुश्मनों ने भी इस बात को माना है कि रसूल उनको केवल एक अल्लाह की इबादत करने और उनको छोड़ अन्य पूज्यों से खुद को अलग कर लेने का आदेश देते हैं। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने आद जाति के क़िस्से में बताया है कि उन्होंने हूद अलैहिस्सलाम से कहा था :

﴿أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا﴾

"क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम केवल एक ही अल्लाह की इबादत (वंदना) करें और उन्हें छोड़ दें, जिनकी पूजा हमारे पूर्वज करते आ रहे हैं?" [सूरा अल-आराफ़ : 70], सर्वशक्तिमान अल्लाह ने क़ुरैश के बारे में बताया है कि जब उन्हें हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने केवल एक अल्लाह की इबादत करने और फ़रिश्तों, वलियों, बुतों और तथा पेड़ों आदि की इबादत से रुक जाने को कहा, तो उन्होंने कहा :

﴿أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَهًا وَاحِدًا إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ﴾

"क्या उसने सब पूज्यों को एक पूज्य बना दिया है? यह तो बड़े आश्चर्य का विषय है।" [सूरा साद : 5], क़ुरैश ही के बारे में उच्च एवं महान अल्लाह ने सूरा अल-साफ़्फ़ात में बताया है :

﴿إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ۝٣٥ وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُو آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَجْنُونٍ﴾

"निःसंदेह वे ऐसे लोग थे कि जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य (इबादत के

योग्य) नहीं, तो वे अभिमान करते थे।

तथा कहते थे कि क्या हम त्याग देने वाले हैं अपने पूज्यों को, एक उन्मत कवि के कारण?" [सूरा अल-साफ़्फ़ात : 35, 36], इस आशय की आयतें बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

हमने जो आयतें और हदीसें प्रस्तुत की हैं, उनसे स्पष्ट है कि आपके द्वारा उल्लिखित प्रश्न में आए हुए दुआओं एवं फ़रियाद के शब्द बड़े शिर्क के दायरे में आते हैं। क्योंकि इनका उच्चारण दरअसल अल्लाह के अतिरिक्त की इबादत है। इनके द्वारा अल्लाह के सिवा, जैसे मरे हुए एवं अनुपस्थित लोगों से ऐसी चीज़ें माँगी जाती है, जिन्हें देने की शक्ति अल्लाह के सिवा किसी और के पास नहीं है। और यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने के मुश्रिकों से भी बुरा शिर्क है। क्योंकि उस दौर के मुश्रिक केवल ख़ुशहाली के समय शिर्क करते थे। वे परेशानी के समय केवल एक अल्लाह की इबादत करते थे। क्योंकि जानते थे कि उनको परेशानी से बचाने की शक्ति केवल अल्लाह के पास है। किसी और के पास नहीं। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन के अंदर उन मुश्रिकों के बारे में कहा है :

﴿فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ﴾

"और जब वे नाव पर सवार होते हैं, तो अल्लाह के लिए धर्म को शुध्द करके उसे पुकारते हैं। फिर जब वह बचा लाता है उन्हें थल तक, तो फिर शिर्क करने लगते हैं।" [सूरा अल-अनकबूत : 65], अल्लाह ने उन्हें संबोधित करते हुए एक अन्य आयत में कहा है :

﴿وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِيَّاهُ فَلَمَّا نَجَّاكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا﴾

"और जब सागर में तुमपर कोई आपदा आ पड़ती है, तो अल्लाह के सिवा जिन्हें तुम पुकारते हो, खो देते (भूल जाते) हो और जब तुम्हें बचाकर थल तक पहुँचा देता है, तो मुख फेर लेते हो और मनुष्य है ही अति कृतघ्न।" [सूरा अल-इसरा : 67]।

अगर आज के दौर के मुश्रिकों में से कोई कहे : हमारा उद्देश्य यह नहीं है कि हम जिन लोगों को पुकारते हैं, वह खुद ही हमें फ़ायदा पहुँचाते हैं, हमारे रोगियों को रोगमुक्त करते हैं, हमारा भला या बुरा करते हैं। हमारा उद्देश्य यह है कि वे अल्लाह से हमारी मुरादें पूरी करने की सिफ़ारिश करें।

इसका उत्तर यह होगा कि यही उद्देश्य तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दौर के काफ़िरों का भी हुआ करता था। वह भी यह नहीं समझते थे कि उनके पूज्य खुद कुछ पैदा करते हैं, रोज़ी देते हैं, किसी का लाभ या हानि करते हैं। पवित्र क़ुरआन के बयान के अनुसार उस दौर के काफ़िर समझते थे कि यह लोग अल्लाह के यहाँ उनकी सिफ़ारिश करेंगे और उनको अल्लाह की निकटता लाभ कराएँगे। उच्च एवं महान अल्लाह ने सूरा यूनुस में कहा है :

﴿وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ﴾

"और वे अल्लाह के सिवा, उनकी इबादत (वंदना) करते हैं, जो न तो उन्हें कोई हानि पहुँचा सकते

हैं और न कोई लाभ और कहते हैं ये अल्लाह के यहाँ हमारे (सिफ़ारिशी) हैं।" [सूरा यूनुस : 18], अल्लाह ने उनका उत्तर देते हुए कहा है :

﴿قُلْ أَتُنَبِّئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ﴾

"आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात की सूचना दे रहे हो, जिसके होने को न वह आकाशों में जानता है और न धरती में? वह पवित्र और उच्च है उस शिर्क (बहुदेववाद) से, जो वे कर रहे हैं।" [सूरा यूनुस : 18], इस आयत में अल्लाह ने स्पष्ट कर दिया है कि वह आकाशों एवं धरती में किसी ऐसे सिफ़ारिशी को नहीं जानता, जो उस तरह सिफ़ारिश कर सके, जिस तरह मुश्रिक समझते हैं। ज़ाहिर सी बात है कि जिस चीज़ के अस्तित्व का ज्ञान अल्लाह को न हो, उसका अस्तित्व कैसे हो सकता है? सर्वशक्तिमान अल्लाह ने सूरा अल-ज़ुमर में कहा है :

﴿تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝ إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۝ أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ﴾

"इस पुस्तक का उतरना अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी की ओर से है।

हमने आपकी ओर ये पुस्तक सत्य के साथ अवतरित की है। अतः, इबादत (वंदना) करो अल्लाह की उसके लिए शुध्द करते हुए उसके लिए धर्म को।

सुन लो, शुद्ध धर्म अल्लाह ही के लिए है।" [सूरा अल-ज़ुमर : 1-3]।

अल्लाह ने स्पष्ट कर दिया है कि इबादत उसी की होनी चाहिए। बंदों का दायित्व है कि एक अल्लाह की इबादत करें। क्योंकि अल्लाह का अपने नबी को केवल अपनी इबादत का आदेश देना दरअसल तमाम लोगों को आदेश देना है।

इस आयत में आए हुए "الدين" शब्द का अर्थ इबादत है। इबादत नाम है अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुसरण का। इबादत में दुआ, फ़रियाद, भय, आशा, जानवर ज़बह करना और मन्नत मानना आदि भी दाख़िल हैं। बिल्कुल उसी तरह, जैसे नमाज़ और रोज़ा आदि ऐसे काम दाख़िल हैं, जिनका आदेश अल्लाह और उसके रसूल ने दिया है।

सर्वशक्तिमान अल्लाह ने इसके बाद कहा है :

﴿وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَى﴾

"तथा जिन्होंने अल्लाह के सिवा अन्य संरक्षक बना रखे हैं, वे कहते हैं कि हम तो उनकी वंदना इसलिए करते हैं कि वह हमें अल्लाह से समीप कर देंगे।" [सूरा अल-ज़ुमर : 3]। यानी हम इनकी इबादत इसलिए करते हैं ताकि ये हमें अल्लाह की निकटता लाभ करा दें। इनका उत्तर देते हुए उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿إِنَّ ٱللَّهَ يَحۡكُمُ بَيۡنَهُمۡ فِي مَا هُمۡ فِيهِ يَخۡتَلِفُونَۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهۡدِي مَنۡ هُوَ كَٰذِبٞ كَفَّارٞ﴾

"ये लोग जिस विषय में विवाद कर रहे हैं, उसका (सच्चा) फैसला अल्लाह (स्वयं) करेगा। निश्चय ही अल्लाह झूठे और अकृतज्ञ लोगों का मार्गदर्शन नहीं करता।" [सूरा अल-ज़ुमर : 3] इस आयत में सर्वशक्तिमान अल्लाह ने स्पष्ट कर दिया है कि अविश्वासी अल्लाह को छोड़ अपने बनाए हुए संरक्षकों की इबादत इसलिए करते हैं, ताकि उन्हें अल्लाह की निकटता लाभ करा दें। यही हर दौर के अविश्वासियों का उद्देश्य रहा है। पहले दौर के भी और बाद के दौर के भी। लेकिन अल्लाह ने उनकी इस अवधारणा का खंडन कर दिया है। कहा है :

﴿إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ﴾

"ये लोग जिस विषय में विवाद कर रहे हैं उसका (सच्चा) फैसला अल्लाह (स्वयं) करेगा। निश्चय ही अल्लाह झूठे और अकृतज्ञ लोगों का मार्गदर्शन नहीं करता।" [सूरा अल-ज़ुमर : 3], इस आयत में अल्लाह ने स्पष्ट कर दिया कि मुश्रिकों का यह दावा झूठा है कि उनके पूज्य उनको अल्लाह की निकटता दिलाएँगे। अल्लाह ने इन पूज्यों की इबादत को अल्लाह के प्रति अविश्वास भी कहा है। इससे हर विवेकी व्यक्ति जान सकता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दौर के काफ़िरों का कुफ़्र यह था कि वह नबियों, वलियों, पेड़ों एवं पत्थरों आदि सृष्टियों को अल्लाह के यहाँ अपना सिफ़ारिशी मानते थे। उनका मानना था कि उनके ये पूज्य अल्लाह की अनुमति और इच्छा के बिना भी उनकी ज़रूरतें पूरी कर सकते हैं। जैसा कि आम तौर पर बादशाहों के मंत्री किया करते हैं। उन्होंने अल्लाह को बादशाहों और लीडरों पर क़यास (अनुमान) किया। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार जब किसी व्यक्ति को बादशाह या लीडर के पास कोई काम होता है, तो उसके ख़ास लोगों एवं मंत्रियों से सिफ़ारिश कराता है, उसी प्रकार हम अल्लाह के नबियों एवं वलियों की इबादत के माध्यम से उसकी निकटता प्राप्त करना चाहते हैं। लेकिन यह एक निरर्थक बात है। क्योंकि अल्लाह के जैसा कोई नहीं है, उसे उसकी सृष्टि पर क़यास नहीं किया जा सकता, उसकी अनुमति के बिना उसके सामने कोई सिफ़ारिश नहीं कर सकता, वह अनुमति भी केवल एकेश्वरवाद के मार्ग पर चलने वालों को देगा, वह जो चाहे कर सकता है, सब कुछ जानता है, सबसे बड़ा दयावान है, उसे किसी का भय नहीं है, क्योंकि वह सब का प्रभु है और लोगों को जिस तरह से चाहे, प्रयोग कर सकता है। जबकि बादशाहों एवं लीडरों का मामला इससे बिलकुल भिन्न है। उनकी क्षमताएँ बहुत ही सीमित हैं। इसलिए उन्हें मंत्री, दरबारी एवं सेना आदि की ज़रूरत होती है, जो उनका सहयोग ऐसे कामों में करें, जिन्हें वह ख़ुद कर नहीं सकते। इसी तरह जिन लोगों की आवश्यकताओं से वह ख़ुद अवगत नहीं होते, उनकी आवश्यकताओं को उनके सामने रखे जाने की ज़रूरत होती है। इस तरह, उन्हें ऐसे मंत्रियों एवं दरबारियों की ज़रूरत होती है, जो उनसे दया दृष्टि का अनुरोध करें। लेकिन जहाँ तक सर्वशक्तिमान अल्लाह का मामला है, वह अपनी सृष्टि से निस्पृह है, उसपर माँ से भी अधिक दया रखता है, सारी चीज़ों का निर्णय करता है, न्यायकारी है, अपनी हिकमत, ज्ञान एवं सामर्थ्य के अनुसार सारी चीज़ों को उनके उचित स्थानों में रखता है। इसलिए किसी भी दृष्टि से उसकी तुलना उसकी सृष्टि से नहीं की जा सकती। यही कारण है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में बताया है कि मुश्रिकों

ने इस बात का इक़रार किया है कि वही रचयिता, आजीविकादाता और संचालनकर्ता है। वही परेशान हाल लोगों की फ़रियाद सुनता है और उनकी परेशानी दूर करता है। वही जीवन एवं मृत्यु देता है और इस प्रकार के सारे कार्य करता है। मुश्रिकों एवं रसूलों के बीच में झगड़ा केवल विशुद्ध रूप से एक अल्लाह की इबादत करने या न करने को लेकर था। जैसा कि सर्वशिक्तमान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ﴾

"यदि आप उनसे पूछें कि उन्हें किसने पैदा किया है, तो वे अवश्य यही उत्तर देंगे कि अल्लाह ने।" [सूरा अज़-ज़ुख़रुफ़ : 87], एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ﴾

"(हे नबी!) उनसे पूछें कि तुम्हें कौन आकाश तथा धरती से जीविका प्रदान करता है? सुनने तथा देखने की शक्तियाँ किसके अधिकार में हैं? कौन निर्जीव से जीव को तथा जीव से निर्जीव को निकालता है? वह कौन है, जो (संपूर्ण ब्रह्मांड की) व्यवस्था कर रहा है? वे कह देंगे कि अल्लाह! फिर कहो कि क्या तुम (सत्य के विरोध से) डरते नहीं हो?" [सूरा यूनुस : 31], क़ुरआन के अंदर इस आशय की आयतें बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

पीछे इस आशय की आयतें गुज़र चुकी हैं कि रसूलों और उनकी उम्मतों के बीच जो झगड़े हुआ किए हैं, वह केवल एक अल्लाह की इबादत के विषय में हुआ किए हैं। मसलन अल्लाह का कथन है :

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اُعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾

"और हमने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत (वंदना) करो तथा तागूत (अल्लाह के अतिरिक्त अन्य पूज्य) से बचो।" [सूरा अल-नह्ल : 36], इस आशय की अन्य आयतें भी मौजूद हैं। अल्लाह ने अपने पवित्र ग्रंथ के बहुत-से स्थानों में सिफ़ारिश के विषय में बताया है। अतः सूरा अल-बक़रा में कहा है :

﴿مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ﴾

"उसकी अनुमति के बिना कौन उसके पास सिफारिश कर सकता है?" [अल-बक़रा : 255], सूरा अल-नज्म में कहा है :

﴿وَكَمْ مِنْ مَلَكٍ فِي السَّمَاوَاتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضَى﴾

"और आकाशों में कितने ही फ़रिश्ते हैं कि उनकी सिफ़ारिश कुछ लाभ नहीं देती, परंतु इसके पश्चात कि अल्लाह अनुमति दे जिसके लिए चाहे तथा (जिसे) पसंद करे।" [सूरा अल-नज्म : 26]।

सूरा अल-अंबिया में फ़रिश्तों के संबंध में कहा है :

﴿وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَى وَهُمْ مِنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ﴾

"फ़रिश्ते किसी की सिफ़ारिश नहीं करेंग उसके सिवा जिससे अल्लाह प्रसन्न हो, तथा वे उसके भय से सहमे रहते हैं।" [सूरा अल-अंबिया : 28]।

सर्वशक्तिमान अल्लाह ने बताया है कि वह अपने बंदों की कृतघ्नता को पसंद नहीं करता। वह उनकी कृतज्ञता को पसंद करता है। और कृतज्ञता का अर्थ है, अल्लाह को एक मानना और उसके आदेशों का पालन करना। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने सूरा अल-ज़ुमर में कहा है :

﴿إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ وَلَا يَرْضَى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ وَإِنْ تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ﴾

"यदि तुम कृतघ्नता व्यक्त करोगे, तो अल्लाह तुमसे निस्पृह है। वह अपने बन्दों के लिए कृतघ्नता पसन्द नहीं करता है। और यदि कृतज्ञता करोगे, तो वह उसको तुम्हारे लिए पसन्द करेगा।" [सूरा अल-ज़ुमर : 7]।

इमाम बुख़ारी ने अपनी सहीह में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत किया है कि उन्होंने पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल! आपकी सिफ़ारिश का सबसे ज़्यादा हक़दार कौन होगा? आपने उत्तर दिया : "जो सच्चे दिल से "ला इलाहा इल्लल्लाह" कहे।" या फिर फ़रमाया : "सच्चे मन से।"

अनस रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित एक सहीह हदीस में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "हर नबी की कुछ दआएँ हैं जिनके द्वारा उन्होंने अपने रब को पुकारा, और वह क़बूल हुई। मैंने अपनी दुआ को क़यामत के दिन अपनी उम्मत की सिफ़ारिश के लिए जमा कर रखा है, तो मेरी सिफ़ारिश इन शाअल्लाह मेरी उम्मत में से उसको प्राप्त होगी जिसको मिर्त्यु इस हाल में आई कि वह अल्लाह के साथ किसी को साझी नहीं बनाते हो।" हदीस की किताबों में इस आशय की बहुत-सी हदीसें मौजूद हैं।

ऊपर उल्लिखित सभी आयतें एवं हदीसें प्रमाणित करती हैं कि इबादत केवल अल्लाह का हक़ है। उसका कोई भी अंश अल्लाह के सिवा किसी और के लिए जायज़ नहीं है। न नबियों के लिए न ग़ैर-नबियों के लिए। इसी प्रकार सिफ़ारिश का मालिक बस अल्लाह है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है:

﴿قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا﴾

"कह दो कि सिफ़ारिश सारी की सारी (केवल) अल्लाह के अधिकार में है।" [सूरा अल-ज़ुमर : 44], पूरी आयत देखें। सिफ़ारिश का हक़दार वही व्यक्ति होगा, जिससे अल्लाह संतुष्ट हो और उसकी सिफ़ारिश की अनुमति किसी को प्रदान करे। ज़ाहिर सी बात है कि अल्लाह संतुष्ट उसी से होगा, जो दुनिया में एकेश्वरवाद के मार्ग पर चलने वाला रहा हो। किसी मुश्रिक के बारे में सिफ़ारिश की कल्पना तक नहीं की जा सकती। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّافِعِينَ﴾

"तो उन्हें लाभ नहीं देगी शिफ़ारिशियों की शिफ़ारिश।" [सूरा अल-मुद्दस्सिर : 48], एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ﴾

"अत्याचारियों का न कोई मित्र होगा, न कोई सिफ़ारिशी, जिसकी बात मानी जाए।" [सूरा ग़ाफ़िर: 18]।

ज़ुल्म शब्द जब साधारण रूप से बोला जाए, तो उससे मुराद शिर्क हुआ करता है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ﴾

"और काफ़िर लोग ही अत्याचारी हैं।" [सूरा अल-बक़रा : 254], एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾

"वास्तव में, शिर्क (बहुदेववाद) बड़ा घोर अत्याचार है।" [सूरा लुक़मान : 13]।

इसी तरह आपने कुछ सूफ़ियों के इस कथन के बारे में पूछा है : "ऐ अल्लाह! अपनी दया उसपर उतार, जिसे तूने अपने वैभव के रहस्यों के प्रकटन और दया पर आधारित प्रकाशों के सामने आने का सबब बनाया है। जिसके फलस्वरूप वह तेरा नायब और तेरे ज़ाती रहस्यों का ख़लीफ़ा बन गया..... "।

इसका उत्तर यह है कि इस प्रकार की बातें अतिशयोक्ति के दायरे में आती हैं, जिससे हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सावधान किया है। सहीह मुस्लिम की एक हदीस में, जिसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहू अन्हु ने रिवायत किया है, आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "अतिशयोक्ति करने वाले हलाक हो गए।" आपने यह बात तीन बार कही।

इमाम ख़त्ताबी रहिमहुल्लाह कहते हैं : इस हदीस में आए हुए शब्द "المتنطع" का अर्थ है, बाल की खाल निकालने वाला, तर्कशास्त्र में रुचि रखने वाला, निरर्थक एवं ऐसी चीज़ों में घुसने वाला, जहाँ तक इन्सान की अक़्ल पहुँच न सकती हो।

अबू अल-सआदात इब्न अल-असीर कहते हैं : ये वो लोग हैं, जो बात करते समय अतिशयोक्ति से काम लेते हैं और चबा-चबाकर बातें करते हैं। "المتنطع" शब्द "نطع" से लिया गया है, जिसका अर्थ है, मुँह का ऊपरी गहरा भाग। यानी तालू। बाद में "المتنطع" शब्द का प्रयोग कार्य एवं कथन द्वारा अतिशयोक्ति करने वाले हर व्यक्ति के लिए होने लगा।

इन दोनों भाषाविदों की व्याख्या से आपके तथा हर सूझ-बूझ रखने वाले व्यक्ति के लिए स्पष्ट हो गया होगा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उक्त शब्दों द्वारा दरूद व सलाम भेजना अतिशयोक्ति के दायरे में आता है, जिससे मना किया गया है। हर व्यक्ति को दरूद व सलाम भेजने का वही तरीक़ा अपनाना चाहिए, जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित है और वही तरीक़ा हमारे लिए काफ़ी है। हमें इधर-उधर देखने को कोई ज़रूरत नहीं है।

सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम में काब बिन उजरा रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित है, जबकि शब्द सहीह बुख़ारी के हैं, कि सहाबा ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह ने हमें आप पर दरूद भेजने का आदेश दिया है, तो हम आप पर दरूद कैसे भेजें? आपने फ़रमाया : "तुम कहो : ऐ अल्लाह! अपने निकटवर्ती फ़रिश्तों के सामने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके परिवार-परिजन की प्रशंसा कर, जैसे तू ने अपने निकटवर्ती फ़रिश्तों के सामने इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनके परिवार-परिजन की प्रशंसा की है, निस्संदेह तू प्रशंसा योग्य तथा सम्मानित है। ऐ अल्लाह! मुहम्मद तथा उनकी संतान-संतति पर उसी प्रकार से बरकतों की बारिश कर, जिस प्रकार से तूने इब्राहीम एवं उनकी संतान-संतति पर की है। निस्संदेह तू प्रशंसा योग्य तथा सम्मानित है।"

सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम ही में अबू हुमैद साइदी रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत है कि सहाबा ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! हम आप पर दरूद कैसे भेजें? आपने उत्तर दिया : "ऐ अल्लाह! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की और उनकी पत्नियों तथा संतान-संतति की उसी प्रकार से प्रशंसा कर, जैसे तूने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की संतान-संतति की प्रशंसा की है। निश्चय ही, तू प्रशंसा-योग्य और सम्मानित है। ऐ अल्लाह! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपकी पत्नियों तथा संतान-संतति में उसी प्रकार बरकत दे, जैसे इबराहीम अलैहिस्सलाम की संतान-संतति के अंदर बरकत रखी थी। निश्चय ही, तू प्रशंसा-योग्य और सम्मानित है।"

सहीह मुस्लिम में अबू मसऊद रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित एक हदीस में है कि बशीर बिन साद ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह ने हमें आप पर दरूद भेजने का आदेश दिया है, तो हम आप पर दरूद कैसे भेज़ें? प्रश्न सुनकर आप कुछ देर खामोश रहे और उसके बाद फ़रमाया : "तुम कहो : ऐ अल्लाह! अपने निकटवर्ती फ़रिश्तों के सामने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके परिवार-परिजन की प्रशंसा कर और, जैसे तू ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के परिवार-परिजन की प्रशंसा की थी। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके परिवार-परिजन में बरकत दे, जैसे तु ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के परिवार-परिजन के अंदर बरकत रखी थी। निश्चय ही, तू प्रशंसित, प्रशंसा करने वाला और सर्वसम्मानित है। सलाम भेजने का तरीक़ा तो तुम जानते ही हो।"

अतः अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजते समय आपसे इन्हीं शब्द तथा इन्हीं जैसे अन्य शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए। क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम इस बात से अधिक अवगत थे कि आपके तथा आपके रब के बारे में किन शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।

जहाँ तक अतिशयोक्ति वाले, नव-आविष्कृत एवं अनुचित अर्थ वाले शब्दों का प्रश्न है, तो उनके प्रयोग से बचना चाहिए। क्योंकि उनके अंदर अतिशयोक्ति है, उनका ग़लत अर्थ निकाला जा सकता है और वो उन शब्दों से हटकर भी हैं, जिनका चयन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किया है और जिनकी ओर अपनी उम्मत का मार्गदर्शन किया है। ज़ाहिर सी बात है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस कायनात के सबसे ज्ञानी, सबसे बड़े शुभचिंतक और अतिशयोक्ति से सबसे दूर रहने वाले इन्सान हैं।

मैं समझता हूँ कि तौहीद एवं शिर्क की तथ्यात्मक व्याख्या, और इस संबंध में पहले दौर के मुश्रिकों के और आज के दौर के मुश्रिकों के व्यवहार के अंतर एवं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजने के उचित तरीक़े को स्पष्ट करने के लिए हमने जो प्रमाण यहाँ प्रस्तुत किए हैं, वो सत्य का पता लगाने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति के लिए काफ़ी हैं। वैसे भी, जिसके मन में सत्य को जानने की रुचि न हो, वह तो अपनी इच्छाओं ही का पालन करेगा। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा है :

﴿فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّمَا يَتَّبِعُونَ أَهْوَاءَهُمْ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنَ اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ هُدًى مِنَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ﴾

"फिर यदि वे आपकी माँग पूरी न करें, तो आप जान लें कि वे केवल अपनी इच्छाओं का पालन कर रहे हैं, और उससे बढ़कर पथभ्रष्ट कौन है, जो अल्लाह की ओर से किसी मार्गदर्शन के बिना अपनी इच्छा का पालन करे? निःसंदेह अल्लाह अत्याचार करने वाले लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।" [सूरा अल-क़सस : 50]।

इस आयत में सर्वशक्तिमान अल्लाह ने बता दिया है कि अल्लाह ने अपने नबी को जो मार्गदर्शन एवं सच्चा दीन देकर भेजा है, उसके प्रति लोगों के दो प्रकार के व्यवहार सामने आते हैं :

1- कुछ अल्लाह और उसके रसूल की बात को मान लेते हैं।

2- जबकि कुछ लोग अपनी इच्छाओं का पालन करते हैं। जबकि उच्च एवं महान अल्लाह ने बताया है कि अल्लाह की ओर से प्रदान किए गए मार्गदर्शन को छोड़कर अपनी इच्छाओं का पालन करने वाले से बड़ा गुमराह कोई नहीं हो सकता।

दुआ है कि अल्लाह हमें इच्छाओं के पीछे भागने से बचाए। इसी तरह हमें, आपको और तमाम मुसलमानों को अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात मानने वाला, शरीयत का पालन करने वाला और तमाम शरीयत विरोधी इच्छाओं एवं आकांक्षाओं से दूर रहने वाला बनाए। निश्चिय ही वह दानशील एवं दाता है।

दरूद हो अल्लाह के बंदे एवं रसूल हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, तथा आपके परिजनों, सथियों एवं क़यामत के दिन तक आपके बताए हुए मार्ग पर चलने वालों पर।

तौ़हीद (एकेश्वरवाद) की रक्षा

लेखक:

अल्लामा इमाम अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़

-उनपर अल्लाह की दया हो-

आरंभ अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान है।

बिदअतों से सावधान रहें

पहली पुस्तिका

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा अन्य लोगों का जन्म दिवस मनाने के संबंध में शरई दृष्टिकोण

सारी प्रशंसा अल्लाह की है तथा दरूद एवं सलाम हो अल्लाह के रसूल पर, तथा उनके परिजनों, साथियों और उनके मार्ग पर चलने वालों पर।

इसके बाद अब मूल विषय पर आते हैं। बहुत-से लोगों द्वारा पूछा गया कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म दिन मनाना कैसा है और जन्म दिन मनाते समय आपके सम्मान में खड़ा होना और आपको सलाम करना आदि काम कैसे हैं?

उत्तर : अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या किसी और व्यक्ति का जन्म दिन मनाना जायज़ नहीं है। क्योंकि यह दीन के नाम पर किया जाने वाला एक नया काम है। जन्म दिन न तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मनाया है, न ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन ने मनाया है, न अन्य सहाबा ने मनाया है और न उनके मार्ग पर चलने वाले उत्कृष्ट दौरों के लोगों ने मनाया है। हालाँकि ये लोग बाद के लोगों की तुलना में सुन्नत की अधिक जानकारी रखने वाले, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अधिक प्रेम करने वाले और आपकी शरीयत का अधिक पालन करने वाले लोग थे। साथ ही ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "जिसने हमारे इस धर्म में कोई ऐसी चीज़ पैदा की, जो धर्म का भाग नहीं है, तो वह अमान्य एवं अस्वीकृत है।" यानी उसके इस अमल को उसी के मुँह पर मार दिया जाएगा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक अन्य हदीस में है : "तुम मेरी सुन्नत तथा सत्य के मार्ग पर चलने वाले मेरे ख़लीफ़ा-गणों की सुन्नत का पानलन

करना। इसे मज़बूती से पकड़े रहना और दीन के नाम पर सामने आने वाली नई-नई चीज़ों से बचे रहना। क्योंकि दीन के नाम पर सामने आने वाली हर नई चीज़ बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है।"

इन दोनों हदीसों में दीन के नाम पर किसी नई चीज़ का आविष्कार एवं उसपर अमल करने से अत्यधिक सावधान किया गया है। ख़ुद महान अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में कहा है :

﴿وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا﴾

"और तुम्हें जो कुछ रसूल दें, उसे ले लो और जिससे रोंके उससे रुक जाओ।" [सूरा अल-हश्र : 7]। एक दूसरी जगह सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾

"जो लोग अल्लाह के रसूल के आदेश का उल्लंघन करते हैं, और उससे विमुख होते हैं, उन्हें डरना चाहिए कहीं उन पर कोई आपदा न आ जाए अथवा उन्हें कोई यातना न आ घेर ले।" [सूरा अल-नूर : 56], एक अन्य स्थान में फ़रमाया है :

﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا﴾

"निःसंदेह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में उत्तम आदर्श है। उसके लिए, जो अल्लाह और अंतिम दिन की आशा रखता हो, तथा अल्लाह को अत्यधिक याद करता हो।" [सूरा अल-अहज़ाब : 21], एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿وَالسَّابِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ﴾

"तथा मुहाजिर व अन्सार में से वे प्रथम लोग, जिन्होंने हिजरत करने एवं ईमान लाने में दूसरों पर प्राथमिकता प्राप्त की, एवं जिन लोगों ने अच्छाई के साथ उनका अनुसरण किया, अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ और वे अल्लाह से प्रसन्न हुए, तथा उसने उनके लिए ऐसे स्वर्ग तैयार किए हैं, जिनके नीचे से नहरें प्रवाहित हैं, वे उनमें सदैव रहेंगे, यही बड़ी सफलता है"। [सूरा अल-तौबा : 100], एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا﴾

"मैंने आज तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को संपूर्ण कर दिया है तथा तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी है, और तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म स्वरूप पसंद कर लिया है।" [सूरत अल-माइदा : 3]। क़ुरआन के अंदर इस आशय की आयतें बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

जबकि इस प्रकार से जन्म दिन मनाने का अर्थ यह होता है कि अल्लाह ने इस उम्मत को एक संपूर्ण दीन नहीं दिया है और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वह सारी चीज़ें नहीं पहुँचाई हैं, जिनपर अमल किया जाना चाहिए। यहाँ तक कि बाद के दौर के कुछ लोग पैदा हुए और अल्लाह की

शरीयत में कुछ ऐसी चीज़ों की वृद्धि की, जिनकी अनुमति अल्लाह ने नहीं दी थी। दावा यह है कि इन चीज़ों से अल्लाह की निकटता प्राप्त होगी। क्या इसमें कोई संदेह हो सकता है कि यह एक ख़तरनाक सोच है? यह तो दरअसल अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर आपत्ति है। सच्चाई यह है कि अल्लाह ने अपने बंदों को एक संपूर्ण दीन एवं संपूर्ण नेमत दी है, तथा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्पष्ट रूप से सब कुछ पहुँचा दिया है। आपने जन्नत की ओर ले जाने वाला और जहन्नम से दूर करने वाला हर रास्ता बता दिया है। अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अनहुमा से वर्णित एक सहीह हदीस में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "अल्लाह के भेजे हुए हर नबी का कर्तव्य था कि वह अपनी उम्मत को अपनी जानकारी के अनुसार तमाम अच्छी एवं बुरी चीज़ें बता दे।" इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में रिवायत किया है।

यह बात बताने की ज़रूरत नहीं है कि हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे उत्कृष्ट, अंतिम, इस्लाम का संदेश सबसे संपूर्ण रूप से पहुँचाने वाले और सबसे अधिक शुभचिंतन करने वाले नबी हैं। ऐसे में अगर जन्म दिन मनाना दीन का कोई ऐसा काम होता, जिससे अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त हो सकती है, तो आप ख़ुद उम्मत को बता देते, अपने जीवन काल में उसपर अमल करके दिखाते या आपके सहाबा का उसपर अमल रहा होता। लेकिन, ऐसा कुछ भी न होना इस बात का प्रमाण है कि जन्म दिन मनाना कोई इस्लामी कार्य नहीं, बल्कि दीन के नाम पर आविष्कृत उन कामों में से एक है, जिनसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत को सावधान किया है। इस तरह की दो हदीसें पीछे गुज़र चुकी हैं। इस आशय की अन्य हदीसें भी मौजूद हैं। मसलन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुमे के ख़ुतबे के दौरान फ़रमाया करते थे : "तत्पश्चात, निःसंदेह सबसे अच्छी बात अल्लाह की किताब है, और सबसे उत्तम तरीक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा है, और सबसे बुरी चीज़ बिद्अत (धर्म के नाम पर निकाली जाने वाली नई चीज़) है, और हर बिदअत गुमराही है।" इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में रिवायत किया है।

इस आशय की आयतें एवं हदीसें बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

उलेमा के एक समूह ने उपर्युक्त तथा इस प्रकार के अन्य प्रमाणों के मद्देनज़र जन्म दिन मनाने का खंडन किया है और इससे सावधान किया है। जबकि बाद के दौरों के कुछ उलेमा ने इसके विपरीत जाते हुए जन्मदिन मनाने की अनुमति दी है, जब उसमें कोई शरीयत विरोधी कार्य, जैसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में अतिशयोक्ति, स्त्रियों एवं पुरुषों का बिना रोक-टोक घुलना-मिलना और मनोरंजन के उपकरणों का इस्तेमाल आदि न पाया जाए। ये इसे बिदअत-ए-हसना यानी दीन के नाम पर आविष्कार किए जाने वाले अच्छे कामों में शुमार करते हैं।

ऐसी परिस्थिति में शरीयत के एक सिद्धांत पर अमल किया जाना चाहिए। सिद्धांत यह है कि जिस चीज़ में मतभेद हो जाए, उसे अल्लाह की किताब पवित्र क़ुरआन एवं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के आलोक में हल करना चाहिए। ख़ुद महान अल्लाह ने कहा है :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا﴾

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह की आज्ञा का अनुपालन करो और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो तथा अपने शासकों की आज्ञापालन करो। फिर यदि किसी बात में तुम आपस में विवाद (विभेद) कर लो, तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर फेर दो, यदि तुम अल्लाह तथा अंतिम दिन पर ईमान रखते हो। ये तुम्हारे लिए अच्छा और इसका परिणाम अच्छा है।" [सूरा अल-निसा : 59], एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ﴾

"और जिस बात में भी तुमने विभेद किया है, उसका निर्णय अल्लाह ही को करना है।" [सूरा अल-शूरा : 10]।

जब हमने यह जानने का प्रयास किया कि जन्म दिन मनाने के बारे में पवित्र क़ुरआन क्या कहता है, तो पाया कि पवित्र क़ुरआन हमें अल्लाह के रसूल की सिखाई हुई बातों का अनुसरण करने का आदेश देता है, आपकी मना की हुई बातों से सावधान करता है और बताता कि अल्लाह ने इस उम्मत को एक संपूर्ण दीन दिया है। ऐसे में चूँकि जन्म मनाना अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सिखाई हुई बातों का हिस्सा नहीं है, इसलिए उस संपूर्ण दीन का हिस्सा नहीं हो सकता, जो अल्लाह ने इस उम्मत को दिया है और जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण करते हुए मानने का आदेश दिया है।

इसके बाद जब हमने यह जानने का प्रयास किया कि इस संबंध में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत क्या कहती है, तो पाया कि इसे न अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किया है, न आपने इसका आदेश दिया है और न आपके सहाबा ने किया है। इससे पता यह चला कि यह दीन का हिस्सा नहीं है। यह दीन के नाम बाद के समय में सामने आने वाली चीज़ है। इसे मनाना यहूदियों एवं ईसाइयों के त्योहारों की नक़्क़ाली करना है।

इससे सत्य का पता लगाने की थोड़ी-बहुत भी इच्छा रखने वाले और इस संबंध में न्याय से काम लेने वाले व्यक्ति के लिए स्पष्ट हो जाता है कि जन्म दिन मनाना इस्लाम धर्म का हिस्सा नहीं है। यह दीन के नाम पर किया जाने वाला एक नव-आविष्कृत कार्य है और इस प्रकार के तमाम कार्यों से दूर रहने और इनसे सावधान रहने का आदेश अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दिया है। किसी विवेकी व्यक्ति को इस धोखे में भी नहीं आना चाहिए कि दुनिया के हर भाग में बहुत बड़ी संख्या में लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म दिन मना रहे हैं। क्योंकि सही क्या है, इसे जानने के लिए उसका पालन करने वालों की संख्या नहीं, बल्कि शरई प्रमाण देखे जाएँगे। जैसा कि सर्वशक्तिमान अल्लाह ने यहूदियों एवं ईसाइयों के बारे में कहा है :

﴿وَقَالُوا لَنْ يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ كَانَ هُودًا أَوْ نَصَارَى تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ﴾

"तथा उन्होंने कहा कि जन्नत वही जाएगा, जो यहूदी या ईसाई हो। ये उनकी कामनाएँ हैं। उनसे कह दो कि यदि तुम सत्यवादी हो, तो कोई प्रमाण प्रस्तुत करो।" [सूरा अल-बक़रा : 111], एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿وَإِنْ تُطِعْ أَكْثَرَ مَنْ فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ﴾

"यदि तुम धरती पर निवास करने वाले अधिकांश लोगों का कहा मानोगे तो वे तुम्हें अल्लाह के मार्ग से भटका देंगे।" [सूरा अल-अनआम : 116], पूरी आयत देखें।

दूसरी बात यह है कि जन्म दिन के ये आयोजन बिदअत होने के साथ-साथ आम तौर पर अन्य शरीयत विरोधी गतिविधियों से खाली नहीं होते। इनमें पुरुषों एवं स्त्रियों का बिना रोक-टोक मेल-जोल होता है, गानों और संगीत वाद्ययंत्रों का उपयोग होता है, नशीले पदार्थों का सेवन होता है तथा इस प्रकार की अन्य कई बुराइयाँ पाई जाती हैं। इन आयोजनों में इन सब से भी एक भयानक चीज़ देखने को मिलती है। और वह है बड़ा शिर्क, जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या औलिया के बारे में अतिशयोक्ति एवं उनसे दुआ, फ़रियाद, मदद तलब करने और उनके ग़ैब की बातें जानने के दावे के रूप से प्रकट होता है। इस तरह के काम अल्लाह के नबी सल्लाहु अलैहि व सल्लम एवं तथाकथित वलियों का जन्म दिवस मनाते समय बहुत-से लोगों द्वारा किए जाते हैं। जबकि एक सही हदीस में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "तुम दीन में अतिशयोक्ति से बचो। तुमसे पहले के लोगों का विनाश इसी अतिशयोक्ति ने किया है।" इसी तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "तुम लोग मेरी प्रशंसा और तारीफ़ में उस प्रकार अतिशयोक्ति न करो, जिस प्रकार ईसाइयों ने मरयम के पुत्र के बारे में किया। मैं केवल एक बंदा हूँ। अतः मुझे अल्लाह का बंदा और उसका रसूल कहो।" इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने अपनी सहीह में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अनहु से नक़ल किया है।

एक आश्चर्यजनक बात यह है कि बहुत-से लोग इस प्रकार के नव-आविष्कृत आयोजनों में खूब दिल लगाकर शामिल होते हैं और इनका बचाव करते हैं, लेकिन जुमा एवं बा-जमात नमाज़ में शामिल नहीं होते, इसपर ध्यान नहीं देते और यह भी नहीं समझते कि उन्होंने कुछ बड़ा गुनाह का काम किया है। निश्चित रूप से यह ईमान एवं दूरदर्शिता की कमी तथा दिलों पर गुनाहों का ज़ंग लग जाने का नतीजा है। दुआ है कि अल्लाह हमें और तमाम मुसलमानों को इससे बचाए।

इस आयोजन से जुड़ी एक और बात यह कि कुछ लोगों के अनुसार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने जन्म दिवस के आयोजन में शामिल होते हैं। इसी धारणा के कारण वे आपकी मुहब्बत में और आपका स्वागत करने के लिए खड़े हो जाते हैं। यह दरअसल बदतरीन अज्ञानता का नमूना है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़यामत से पहले अपनी क़ब्र से नहीं निकलेंगे।

आप न किसी से मिलते हैं और न किसी सभा में उपस्थित होते हैं। क़यामत तक अपनी क़ब्र ही में रहेंगे। अलबत्ता आपकी आत्मा अपने रब के पास सम्मानित स्थान के सर्वोच्च भाग (आला-इल्लीईन) में है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने सूरा अल-मोमिनून में फ़रमाया है :

﴿ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَمَيِّتُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ﴾

"फिर तुम सब इसके पश्चात् अवश्य मरने वाले हो।

फिर निश्चय तुम सब (प्रलय) के दिन जीवित किये जाओगे।" [सूरत अल-मोमिनून: 15,16]।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है : "मैं क़यामत के दिन सबसे पहले क़ब्र से निकलूँगा। मैं सबसे पहले सिफ़ारिश करूँगा और मेरी ही सिफ़ारिश सबसे पहले क़बूल होगी।" आपपर अपने रब की ओर से कृपा एवं शांति की बरखा बरसे।

यह आयत, यह हदीस और इस आशय की अन्य आयतें एवं हदीसें प्रमाणित करती हैं कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा अन्य मरे हुए लोग अपनी क़ब्रों से क़यामत के दिन ही निकलेंगे। यह एक ऐसा तथ्य है कि इसपर तमाम मुस्लिम विद्वान एकमत हैं। किसी का कोई मतभेद नहीं है। इसलिए तमाम मुसलमानों को इन बातों को समझना चाहिए और अज्ञान लोगों को आविष्कृत ऐसे कार्यों से सचेत रहना चाहिए, जिनका अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा है। हमें इस प्रकार के कार्यों से अल्लाह बचाए। उसी पर हमारा भरोसा है। सच्चाई यह है कि उसके सिवा कोई ऐसी शक्ति नहीं है, जो भलाई की ओर ले जाए और बुराई से रोके।

जहाँ तक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद व सलाम भेजने की बात है, तो यह एक उत्कृष्ट इबादत एवं नेकी का काम है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا﴾

"अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर दरूद भेजते हैं। ऐ ईमान वालो, तुम भी इन पर दरूद भेजो और अधिक से अधिक सलाम भेजते रहा करो।" [सूरा अल-अहज़ाब : 56], अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है : "जिसने मुझपर एक बार दरूद भेजा, उसके बदले में अल्लाह उसपर दस रहमतें उतारेगा।" वैसे तो दरूद व सलाम भेजने का काम किसी भी समय किया जा सकता है, लेकिन हर नमाज़ के अंत में दरूद व सलाम भेजने की ताकीद आई है, बल्कि कुछ इस्लामी विद्वानों के अनुसार हर नमाज़ के अंतिम तशह्हुद में वाजिब और बहुत सारी जगहों में सुन्नत-ए-मुअक्कदा है। मसलन अज़ान के बाद, आपका ज़िक्र आने पर और जुमा के दिन एवं जुमे की रात को। जैसा कि बहुत-सी हदीसों से प्रमाणित होता है।

दुआ है कि अल्लाह हमें और तमाम मुसलमानों को दीन की सही समझ प्रदान करे, उसपर मज़बूती से क़ायम रखे, सुन्नत का पालन करने एवं बिदअत से सचेत रहने का सुयोग दे। सच यह है कि जिसको जो मिलता है, उसी के यहाँ से मिलता है।

दरूद व सलाम हो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, तथा आपके परिवार और तमाम साथियों पर।

दूसरी पुस्तिका
इसरा एवं मेराज की रात जश्न मनाना शरई दृष्टिकोण से

समस्त प्रकार की प्रशंसा अल्लाह के लिए है तथा दुरूद व सलाम (प्रशंसा व शांति) अवतरित हो अल्लाह के रसूल पर, तथा उनके परिवार वालों पर, एवं उनके साथियों पर और उनसे मित्रता रखने वालों पर।

इसके बाद अब मूल विषय पर आते हैं। इसमें कहीं कोई संदेह नहीं है कि इसरा एवं मेराज अल्लाह की एक बहुत बड़ी निशानी है, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे रसूल होने, अल्लाह के यहाँ बड़ा ऊँचा स्थान रखने तथा अल्लाह के असीम सामर्थ्य वाला एवं अपनी सृष्टि से ऊँचा होने को प्रमाणित करती है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿سُبْحَانَ الَّذِی أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى الَّذِی بَارَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا إِنَّه هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ﴾

"पवित्र है वह (अल्लाह) जो अपने बंदे को रातों-रात मस्जिदे-हराम (काबा) से मस्जिदे-अक़सा तक ले गया, जिसके चारों ओर हमने बरकत रखी है। ताकि हम उसे अपनी कुछ निशानियाँ दिखाएँ। निःसंदेह वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है।" [सूरा अल-इसरा : 1]।

यह बात वर्णनकर्ताओं की बहुत बड़ी संख्या से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रातों-रात सातों आकाशों की सैर कराई गई और आपके लिए उनके द्वार खोले गए, यहाँ तक कि आप सातवें आकाश तक पहुँच गए। वहाँ आपके रब ने आपसे बात की और पाँच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ कीं। वैसे तो अल्लाह ने पहले पचास वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ की थी, लेकिन आप बार-बार अपने रब के पास जाते रहे और बोझ हल्का करने की बात करते रहे, यहाँ तक कि शेष पाँच वक़्त की नमाज़ें ही रह गईं। इस तरह ये पढ़ने में तो पाँच नमाज़ें हैं, लेकिन प्रतिफल में पचास नमाज़ें हैं। क्योंकि अल्लाह के यहाँ एक नेकी का बदला दस मिलता है। हम अल्लाह की तमाम नेमतों पर उसका शुक्र अदा करते हैं।

वह रात, जिसमें अल्लाह के नबी सल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का से बैत अल-मक़दिस ले जाए गए और वहाँ से सात आकाशों की सैर कराए गए सही हदीसों से उसकी तिथि एवं महीने का निर्धारण नहीं होता। निश्चित नहीं है कि वह रात रजब महीने की थी या किसी और महीने की। इस संबंध में जो रिवायतें आई हैं, हदीस का ज्ञान रखने वालों के अनुसार वो साबित नहीं हैं। वैसे, निर्धारण हो भी जाता, तब भी उसमें विशेष रूप से कोई इबादत एवं सभा का आयोजन करना जायज़ नहीं होता। क्योंकि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा ने न तो उस रात कुछ विशेष कार्य किया है

और न सभा का आयोजन किया है। अगर उस रात सभा का आयोजन करना नेकी का काम होता, तो अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उम्मत को बता देते। कथन द्वारा हो कि कार्य द्वारा। फिर, अगर आपने बताया होता, तो लोग उसे जानते और सहाबा हम तक पहुँचा देते। क्योंकि सहाबा ने अपने नबी की वह सारी बातें नक़ल की हैं, जिनको उम्मत की ज़रूरत थी। उनसे इस मामले में कोई कोताही नहीं हुई। वह तो हर अच्छे काम में आगे रहने वाले लोग थे। अगर इस रात सभा का आयोजन करना नेकी का काम होता, तो वह इसमें भी सबसे आगे रहते। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों के सबसे अधिक शुभचिंतक थे। आपने सब कुछ पहुँचा दिया है। दीन पहुँचाने की जो ज़िम्मेवारी आपके हवाले की गई थी, उसको भली-भाँति निभाया है। ऐसे में अगर इस रात का सम्मान और इसमें सभा का आयोजन दीन का काम होता, तो आप उसे नज़र अंदाज़ कर देते और बयान न करते यह संभव नहीं है। इसलिए आपका बयान न करना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि इस रात का सम्मान करना और इसमें सभा का आयोजन करना दीन का हिस्सा नहीं है। अल्लाह ने तो इस उम्मत को एक संपूर्ण दीन दिया है और दीन के अंदर किसी ऐसे काम का आविष्कार करने वाले का खंडन किया है, जिसकी अनुमति उसने न दी हो। उसने पवित्र क़ुरआन की सूरा अल-माइदा में कहा है :

﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا﴾

"मैंने आज तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को संपूर्ण कर दिया है तथा तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी है, और तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म पसंद कर लिया है।" [सूरा अल-माइदा : 3], उच्च एवं महान अल्लाह ने सूरा अल-शूरा में कहा है :

﴿أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنْ بِهِ اللَّهُ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾

"क्या इन (मुश्रिकों) के कुछ ऐसे साझी हैं, जिन्होंने उनके लिए कोई ऐसा धार्मिक नियम बना दिया है, जिसकी अनुमति अल्लाह ने नहीं दी है? और यदि निर्णय की बात निश्चित न होती, तो (अभी) इनके बीच निर्णय कर दिया जाता तथा निश्चय अत्याचारियों के लिए ही दुःखदायी यातना है।" [सूरा अल-शूरा: 21]।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों में बिदअत से सचेत किया गया है और उसे स्पष्ट रूप से गुमराही कहा गया है, जिससे साबित होता है कि यह एक हानिकारक वस्तु है और इससे बचने की ज़रूरत है। सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम में आइशा रज़ियल्लाहु अनहा से वर्णित एक हदीस में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "जिसने हमारे इस धर्म में कोई ऐसी चीज़ पैदा की, जो धर्म का भाग नहीं है, तो वह अमान्य एवं अस्वीकृत है।" सहीह मुस्लिम की एक रिवायत में है : "जिसने कोई ऐसा कार्य किया, जिसके सम्बंध में हमारा आदेश नहीं है, तो वह अग्रहणीय है।" सहीह मुस्लिम में जाबिर रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुमे के दिन अपने ख़ुतबे में कहा करते थे : "तत्पश्चात, निःसंदेह सबसे अच्छी बात अल्लाह की किताब है, और सबसे उत्तम तरीक़ा मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- का तरीक़ा है, और

सबसे बुरी चीज़ (धर्म के नाम पर निकाली जाने वाली) नई चीज़ें हैं और हर बिदअत (धर्म के नाम पर निकाली गई नई चीज़) गुमराही है।" सुनन नसाई में जैयिद सनद से यह वृद्धि है : "और हर गुमराही जहन्नम में (ले जाने वाली) है।" सुनन की किताबों में इरबाज़ि बिन सारिया रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित है, वह कहते हैं : अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें ऐसा उपदेश दिया जिससे हृदय कांप उठे तथा नेत्रों से अश्रु की धारा बहने लगी। हमने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! यह तो विदाई का उपदेश प्रतीत होता है, हमें कुछ वसीयत कीजिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मैं तुम्हें अल्लाह का भय खाने, (शासक की बात) सुनने और (उसकी) आज्ञा पालन का करने की वसीयत करता हूँ, चाहे तुम्हारा शासक कोई दास ही क्यों न हो। जो तुम में से जीवित रहेगा, वह अनेक प्रकार के मतभेद देखेगा। इसलिए मेरी सुन्नत और मेरे सही मार्गदर्शित ख़लीफाओं (उत्तराधिकारियों) की सुन्नत को दृढ़ता से पकड़ लेना। इनको ढ़ृढ़ता के साथ थाम लेना, तथा दीन के नाम पर समाने आने वाली नई चीज़ों से बचना, क्योंकि दीन के नाम पर सामने आने वाली हर नई चीज़ बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है।" हदीस की किताबों में इस आशय की बहुत-सी हदीसें मौजूद हैं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा और उनके बाद सलफ़-ए-सालेह (सदाचारी पूर्वजों) ने बिदअतों से सचेत किया एवं डराया है। इसका कारण यह है कि बिदअतें दीन में वृद्धि करने, जिस चीज़ की अनुमति अल्लाह ने नहीं दी है उसे दीन बनाना और यहूदियों एवं ईसाइयों जैसे अल्लाह के दुश्मनों की भांति व्यवहार करते हुए दीन के नाम पर नई-नई चीज़ों का आविष्कार करने का द्योतक हैं। दूसरी बात यह है कि बिदअत का आविष्कार इस्लाम धर्म का अपमान और उसपर एक असंपूर्ण धर्म होने का आरोप मढ़ना है। ज़ाहिर है कि यह एक बहुत बड़ा आरोप है, जो सर्वशक्तिमान अल्लाह के इस कथन से सीधे तौर पर टकराता हैं :

﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ﴾

"आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया।" [सूरा अल-माइदा : 3], इसी तरह यह व्यवहार उन हदीसों के विरुद्ध है, जो बिदअत से सचेत करती और डराती है।

हमें आशा है कि हमारे द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रमाण इसरा एवं मेराज की रात का जश्न मनाने के संबंध में शरीयत का दृष्टिकोण जानने की इच्छा रखने वाले लोगों के लिए काफ़ी हैं। इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि इस कृत्य का इस्लाम से कोई संबंध नहीं है।

चूँकि मुसलमानों का शुभचिंतन और उनको दीन की सही जानकारी देना आवश्यक और ज्ञान छुपाना हराम है, इसलिए मैंने सोचा कि अपने मुसलमान भाइयों को इस बिदअत के बारे में सचेत कर दिया जाए, जो बहुत-से इलाक़ों में फैल चुकी है और कुछ लोगों ने उसे दीन का हिस्सा समझ लिया है।

दुआ है कि अल्लाह तमाम मुसलमानों की हालत दुरुस्त कर दे, उनको दीन की सही समझ प्रदान करे और हमें तथा उनको सत्य को मज़बूती से पकड़ने तथा उसपर सुदृढ़ रहने और उसके विपरीत चीज़ों

से अलग रहने का सुयोग प्रदान करे। यह सब केवल उसी का काम है और उसके सामर्थ्य से कुछ भी बाहर नहीं है।

अल्लाह की दया, शांति एवं बरकतें अवतरित हों उसके बंदे एवं रसूल और हमारे नबी मुहम्मद पर, तथा आपके परिवार एवं साथियों पर।

तीसरी पुस्तिका
पंद्रहवीं शाबादन की रात जश्न मनाना शरई दृष्टिकोण से

सारी प्रशंसा अल्लाह की है, जिसने हमें एक संपूर्ण दीन एवं पूरी नेमत प्रदान की। दरुद व सलाम हो अल्लाह के नबी एवं रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, जो तौबा एवं दया के नबी हैं।

इसके बाद मूल विषय पर आते हैं। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا﴾

"मैंने आज तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को संपूर्ण कर दिया है तथा तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी है, और तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म स्वरूप पसंद कर लिया है।" [सूरा अल-माइदा : 3], सूरा अल-माइदा की यह आयत पूरी देखें। एक अन्य स्थान में अल्लाह ने कहा है :

﴿أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنْ بِهِ اللَّهُ﴾

"या इन (मुश्रिकों) के कुछ ऐसे साझी हैं, जिन्होंने उनके लिए धर्म का एक ऐसा नियम निर्धारित किया है जिसकी अल्लाह ने अनुमति नहीं दी है?" [सूरा अल-शूरा : 21], सूरा अल-शूरा की यह आयत पूरी देखें। सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम में आइशा रज़ियल्लाहु अनहा का वर्णन है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "जिसने हमारे इस धर्म में कोई ऐसी चीज़ पैदा की, जो धर्म का भाग नहीं है, तो वह अमान्य एवं अस्वीकृत है।" सहीह मुस्लिम में जाबिर रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुमा के ख़ुतबे में कहा करते थे : "तत्पश्चात, निःसंदेह सबसे अच्छी बात अल्लाह की किताब है, और सबसे उत्तम तरीक़ा मुहम्मद - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- का तरीक़ा है, और सबसे बुरी चीज़ (धर्म के नाम पर निकाली जाने वाली) नई चीज़ें हैं और हर बिदअत (धर्म के नाम पर निकाली गई नई चीज़) गुमराही है।" इस आशय की आयतें एवं हदीसें बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह सारी आयतें एवं हदीसें स्पष्ट रूप से बताती हैं कि अल्लाह ने इस उम्मत को एक संपूर्ण दीन एवं परिपूर्ण नेमत प्रदान की है और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु अल्लाह का संदेश स्पष्ट रूप से पहुँचा देने और उम्मत को एक-एक शरई कार्य एवं कथन समझा देने के बाद ही हुई है। आपने साफ़-साफ़ बता दिया है कि आपके बाद इस्लाम धर्म के अंग के तौर पर जितने भी कार्य एवं कथनों का आविष्कार होगा, वो अल्लाह के यहाँ ग्रहण नहीं होंगे। चाहे करने वाले की नीयत अच्छी ही क्यों न हो। इस बात से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा और उनके बाद के इस्लामी उलेमा अच्छी तरह अवगत थे।

इसलिए, उन्होंने दीन के नाम पर रायज किए जाने वाले नव-आविष्कृत कार्यों का खंडन एवं उनसे सावधान किया। इसके लिए आप इब्न-ए-वज़्ज़ाह, तरतूशी और अबू शामा जैसे लेखकों की किताबें पढ़ सकते हैं, जिन्होंने सुन्नत के महत्व और बिदअत के खंडन पर किताबें लिखी हैं।

कुछ लोगों द्वारा आविष्कृत बिदअतों में से एक बिदअत पंद्रहवीं शाबान की रात को जश्न मनाने और दिन में रोज़ा रखने की बिदअत है। दरअसल इस अमल का कोई ऐसा प्रमाण नहीं है, जिसपर भरोसा किया जा सके। इसकी फ़ज़ीलत में कुछ ज़ईफ़ हदीसें आई हुई हैं, जिनपर भरोसा करना जायज़ नहीं है।

इस रात नमाज़ पढ़ने के बारे में जो हदीसें आई हैं, वह सब की सब मौज़ू (मनगढ़ंत) हैं। बहुत-से इस्लामी विद्वानों ने यह बात कही है और इनमें से कुछ की बातें, इन शाअल्लाह , तो आगे आएँगी।

इस संबंध में शाम एवं अन्य क्षेत्रों के कुछ सलफ़ के आसार (कथन) भी आए हैं।

यहाँ जिस बात पर जमहूर उलेमा एकमत हैं, वह यह है कि इस रात को जश्न मनाना बिदअत है और इसकी फ़ज़ीलत में आई हुई हदीसें ज़ईफ़ हैं, कुछ तो मौज़ू (मनगढ़ंत) भी हैं। इन बातों का उल्लेख करने वालों में हाफ़िज़ इब्न-ए-रजब भी शामिल हैं, जिन्होंने अपनी किताब "लताइफ़ अल-मआरिफ़" में इन बातों का ज़िक्र किया है। यहाँ याद रहे कि ज़ईफ़ हदीसों पर अमल उन्हीं इबादतों के संबंध में किया जाएगा, जिनका मूल और आधार सही प्रमाणों से साबित हों। जहाँ तक पंद्रहवें शाबान की रात को जश्न मनाने का प्रश्न है, तो उसका कोई सही आधार नहीं है कि उसको दुर्बल हदीसों से बल मिल सके। इस महत्वपूर्ण नियम का ज़िक्र शैख़ुल इस्लाम इब्न-ए-तैमिया ने किया है।

यहाँ मैं अपने पाठकों के लिए कुछ मुस्लिम विद्वानों के मंतव्य प्रस्तुत कर देता हूँ, ताकि वह इनसे अवगत रहें।

उलेमा इस बात पर एकमत हैं कि जिस मसले में लोगों के बीच विवाद हो जाए, उसे सर्वशक्तिमान अल्लाह की किताब और उसेक रसूल की ओर लौटाना चाहिए। उसके बाद जिसका निर्णय दोनों या दोनों में से कोई एक दे दे, वही शरीयत है और उसका अनुपालन ज़रूरी है, जो दोनों के विरुद्ध हो उससे दामन छुड़ा लेना आवश्यक है। लेकिन, जिस इबादत का ज़िक्र दोनों में न हो, वह बिदअत है। उसे करना जायज़ नहीं है। उसकी ओर बुलाने और उसका स्वागत करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। उच्च एवं महान अल्लाह ने सूरा निसा में कहा है :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا﴾

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह की आज्ञा का अनुपालन करो और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो तथा अपने शासकों की आज्ञापालन करो। फिर यदि किसी बात में तुम आपस में विवाद (विभेद) कर लो, तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर फेर दो, यदि तुम अल्लाह तथा अन्तिम दिन पर ईमान रखते हो। ये

तुम्हारे लिए अच्छा और इसका परिणाम अच्छा है।" [सूरा अल-निसा : 59], एक अन्य स्थान में अल्लाह ने कहा है :

﴿وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ﴾

"और जिस बात में भी तुमने विभेद किया है, उसका निर्णय अल्लाह ही को करना है।" [सूरा अल-शूरा : 10], सूरा अल-शूरा की यह आयत पूरी देखें। एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ﴾

"(ऐ पैगम्बर!) आप कह दीजिए, यदि तुम अल्लाह से प्रेम रखते हो, तो मेरे मार्ग पर चलो, अल्लाह भी तुमसे प्रेम रखेगा, तुम्हारे गुनाह को क्षमा कर देगा।" [सूरा आल-ए-इमरान : 31], सूरा आल-ए-इमरान की यह आयत पूरी देखें। एक दूसरी जगह सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا﴾

"तो (ऐ नबी!) आपके रब की क़सम! वे कभी ईमान वाले नहीं हो सकते, जब तक अपने आपस के विवाद में आपको निर्णायक न बनाएँ, फिर आप जो निर्णय कर दें, उससे अपने दिलों में तनिक भी तंगी महसूस न करें और उसे पूरी तरह से स्वीकार कर लें।" [सूरा अल-निसा : 65], इस आशय की आतयें बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं, जो स्पष्ट रूप से बताती हैं कि विवादित मसलों को किताब एवं सुन्नत की ओर लौटाना और दोनों के निर्णय से संतुष्ट होना ज़रूरी है। यही ईमान का तक़ाज़ा और बंदों के लिए दुनिया एवं आख़िरत में बेहतर है।

इस विषय में हाफ़िज़ इब्न-ए-रजब -रहिमहुल्लाह- अपनी किताब "लताइफ़ अल-मआरिफ़" में कहते हैं :

"पंद्रहवीं शाबान की रात को शाम के ताबिईगण, जैसे ख़ालिद बिन मादान, मकहूल और लुक़मान बिन आमिर आदि सम्मान देते थे और उसमें ख़ूब इबादत किया करते थे। उन्हीं से लोगों ने इस रात की फ़ज़ीलत जानी एवं सम्मान करना सीखा। कहा जाता है कि उनको इस संबंध में कुछ इसराईली आसार मिले थे। उनका यह कार्य जब लोगों में मश्हूर हुआ, तो लोगों में मतभेद हो गया। कुछ लोगों ने उनके इस कार्य को ग्रहण कर लिया और उन्हीं की तरह इस रात का सम्मान करने लगे। इसमें बसरा के कुछ इबादतगुज़ार लोग तथा अन्य शामिल थे। जबकि हिजाज़ के उलेमा जैसे अता, इब्न-ए-अबू मुलैका आदि ने इसका खंडन किया। अब्दुर रहमान बिन ज़ैद बिन असलम ने मदीने के फ़क़ीहों से भी खंडन नक़ल किया है। यही मत इमाम मालिक के मानने वालों और आदि का है। इन तमाम लोगों का कहना है कि यह पूरे तौर पर बिदअत है।

इस रात को जागना कैसा है, इसमें शाम के उलेमा के दो मत हैं :

1- मस्जिद में एकत्र होकर जागना मुसतहब है। ख़ालिद बिन मादान और लुक़मान बिन आमिर आदि उस रात अच्छे कपड़े पहनते, खुशबू और सुर्मा लगाते और मस्जिद में रात भर क़ियाम करते। इसहाक़

बिन राहवैह भी इसमें उनसे सहमत हैं। एक गिरुह ने इस रात मस्जिद में जमात के साथ नमाज़ पढ़ने के बारे में कहा है कि यह बिदअत नहीं है। उनके इस मत को हर्ब अल-किर्मानी ने अपने मसायल में नक़ल किया है।

2- उस रात नमाज़, क़िस्से सुनने-सुनाने और दुआ आदि के लिए मस्जिद में जमा होना हराम है। लेकिन कोई अकेले नमाज़ पढ़ता है, तो हराम नहीं है। यह शाम वासियों के इमाम, फ़क़ीह और आलिम औज़ाई का कथन है। अल्लाह ने चाहा तो यह कथन सत्य से अधिक निकट है।" उन्होंने आगे लिखा है: "पंद्रहवीं शाबान की रात के बारे में इमाम अहमद का कोई कथन नहीं मिलता। लेकिन उनके सिद्धांतों को देखते हुए उनसे इस रात नमाज़ पढ़ने के संबंध में दो मत निकाले जाते हैं। क्योंकि दोनों ईदों की रातों को नमाज़ पढ़ने के बारे में उनके दो कथन पाए जाते हैं। एक कथन के अनुसार उस रात जमात के साथ नमाज़ पढ़ना मुसतहब नहीं है। क्योंकि यह अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा से वर्णित नहीं है। जबकि दूसरे कथन के अनुसार मुसतहब है। क्योंकि अब्दुर रहमान बिन यज़ीद बिन असवद ने ऐसा किया है, जो ताबिई थे। यही हाल पंद्रहवीं शाबान की रात को नमाज़ पढ़ने का है। इस संबंध में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अनहुम से कुछ भी साबित नहीं है। जबकि शाम के महत्वपूर्ण फ़क़ीहों में शुमार होने वाले कुछ ताबिईन से साबित है।

हाफ़िज़ इब्न-ए-रजब का कथन समाप्त हुआ। इसमें वह स्पष्ट रूप से कहते हुए नज़र आते हैं कि पंद्रहवीं शाबान की रात के बारे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अनहुम से कुछ भी साबित नहीं है।

जहाँ तक औज़ाई द्वारा व्यक्तिगत रूप से इस रात नमाज़ पढ़ने के मत को चुनने और इब्न-ए-रजब के भी इसे चयन करने की बात है, तो यह आश्चर्यजनक एवं एक दुर्बल मत है। क्योंकि जो चीज़ शरई प्रमाणों द्वारा शरीयत का हिस्सा बन नहीं पाती, उसे दीन का हिस्सा बना लेना जायज़ नहीं है। उसे अकेले किया जाए या जमात के साथ। चुपके से किया जाए या सब को दिखाकर। क्योंकि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह कथन आम है : "जिसने कोई ऐसा कार्य किया, जिसके सम्बंध में हमारा आदेश नहीं है, तो वह अग्रहणीय है।" साथ ही इसके अतिरिक्त भी बहुत-से प्रमाण हैं, जो बिदअत का खंडन करते और उससे सावधान एवं सचेत करते हैं।

इमाम अबू बक्र तरतूशी अपनी किताब "अल-हवादिस व अल-बिदअ" में कहते हैं : "इब्न-ए-वज़्ज़ाह का वर्णन है कि ज़ैद बिन असलम ने कहा है : हमने अपने गुरुओं एवं फ़क़ीहों में किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं पाया, जो पंद्रवीं शाबान पर ध्यान देते हों, मकहूल की बात पर तवज्जो देते हों। यह लोग इस रात को अन्य रातों से अलग नहीं मानते थे।"

इब्न-ए-अबू मुलैका से कहा गया कि ज़ियाद नुमैरी कहते हैं : "शाबान की पंद्रहवीं रात का प्रतिफल लैलतुल क़द्र के प्रतिफल के बराबर है।" यह सुनकर उन्होंने कहा : "अगर मैं उसे यह बात कहते हुए

सुनता और उस समय मेरे हाथ में कोई लाठी होती, तो मैं उसे उस लाठी से पीट देता।" ज़ियाद असल में क़िस्सा गो थे। अभिप्राय समाप्त हुआ।

अल्लामा शौकानी ने "अल-फ़वाइद अल-मजमूआ" में कहा है : "हदीस : "ऐ अली! जिसने पंद्रहवीं शाबान की रात को सौ रकातें पढ़ीं और हर रकात में सूरा फ़ाहिता और क़ुल हुव-ल्लाहु अहद दस बार पढ़ी, अल्लाह उसकी हर ज़रूरत पूरी करेगा....।" यह हदीस मौज़ू (मनगढंत) है। इस हदीस के अंदर जो प्रतिफल बयान किए गए हैं, उसी से हर समझदार इन्सान को विश्वास हो जाएगा कि यह हदीस मौज़ू (मनगढ़ंत) है। इस हदीस के वर्णनकर्ता अज्ञात हैं। यह हदीस दूसरी तथा तीसरी सनद से भी आई है, लेकिन सब की सब मौज़ू (मनगढ़ंत) हैं और सब के वर्णनक्ता अज्ञात हैं। और शौकानी ने "अल-मुख़तसर" में कहा : पंद्रहवीं शाबान की हदीस बातिल है। इब्न-ए-हिब्बान में अली रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित है : "जब पंद्रहवीं शाबान की रात आए, तो तुम रात में नमाज़ पढ़ो और दिन में रोज़ा रखो।" लेकिन यह हदीस ज़ईफ़ है। जबकि "अल-लआली" में कहा है : दैलमी आदि में मौजूद हदीस, जिसमें "शाबान की पंद्रहवीं रात को सौ रकात नमाज़, दस-दस बार सूरा इख़लास के साथ" पढ़ने की बड़ी लंबी-चौड़ी फ़ज़ीलतें बयान की गई हैं, मौज़ू है। इसकी तीनों सनदों के अधिकतर वर्णनकर्ता अज्ञात एवं जईफ हैं। वह कहते हैं : "तीस बार सूरा इख़लास के साथ बारह रकात नमाज़" वाली हदीस भी मौज़ू है। इसी तरह चौदह रकात नमाज़ वाली हदीस भी मौज़ू है।

इस हदीस से फ़क़ीहों के एक गिरुह ने, जैसे "अल-इहया" के लेखक आदि ने धोखा खाया है। यही हाल कई मुफ़स्सिरों का भी है। शाबान की पंद्रहवी रात की नमाज़ विभिन्न ढ़ंगों से वर्णित हुई है, लेकिन यह सब के सब बातिल एवं मौज़ू हैं। लेकिन इससे आइशा रज़ियल्लाहु अनहा से वर्णित सुनन तिर्मिज़ी की उस हदीस का खंडन नहीं होता, जिसमें है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बक़ी क़ब्रिस्तान गए और यह कि अल्लाह पंद्रहवीं शाबान की रात को पहले आकाश पर उतरता है तथा बनी कल्ब क़बीले की बकरियों के बालों से अधिक संख्या में लोगों को क्षमा करता है। क्योंकि एक तो यहाँ बात इस रात में मनगढ़ंत पढ़ी जाने वाली नमाज़ की हो रही है और दूसरा यह कि आइशा रज़ियल्लहु अनहा की इस हदीस में दुर्बलता एवं उसके वर्णनकर्ताओं की शृंखला में टूट है। बिल्कुल वैसे ही, जैसे अली रज़ियल्लाहु अनहु की हदीस भी, जो पीछे गुज़र चुकी है, उससे इस तथ्य का खंडन नहीं होता कि यह नमाज़ मनगढ़ंत है। हालाँकि वह हदीस भी दुर्बल है, जैसा कि हम पीछे बयान कर आए हैं।"

हाफ़िज़ इराक़ी कहते हैं : "पंद्रहवीं शाबान की रात की नमाज़ वाली हदीस मनगढ़ंत एवं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर बाँधा गया झूठ है।" इमाम नववी अपनी किताब "अल-मजमूअ" में कहते हैं : "सलात अल-रग़ाइब के नाम से मश्हूर नमाज़, जो रजब महीने के पहले जुमे की रात को मग़्रिब और इशा के बीच बारह रकात पढ़ी जाती है और इसी तरह पंद्रहवीं शाबान की रात को पढ़ी जाने वाली सौ रकात नमाज़, दोनों बिदअत और ग़ैर-शरई हैं। किसी को इस बात से धोखा नहीं खाना चाहिए कि इनका ज़िक्र "क़ूत अल-क़ुलूब" एवं "इहया उलूम अल-दीन" जैसी किताबों में हुआ है। इसी तरह

इन दोनों के बारे में आई हुई हदीसों से भी धोखा नहीं खाना चाहिए। क्योंकि यह हदीसें सही नहीं हैं। इस बात से भी धोखा नहीं खाना चाहिए कि कुछ इमामों को इन नमाज़ों के बारे में शरई दृष्टिकोण जानने में ग़लती हुई और उन्होंने इनके मुसतहब होने के बयान में कुछ पृष्ट लिख डाले। क्योंकि यहाँ उनसे ग़लती हुई है।"

शैख़ इमाम अबू मुहम्मद अब्दुर रहमान बिन इस्माईल मक़दिसी ने इन दोनों नमाज़ों को अमान्य दिखाने के लिए एक बहुत ही मूल्यवान किताब लिखी है, जिसमें उन्होंने इस मसले पर बड़ी अच्छी बात की है। दरअसल इस मसले में इस्लामी विद्वानों ने बहुत कुछ लिखा और कहा है। अगर हम जो कुछ जानते हैं, सब नक़ल करने लगें, तो बात लंबी हो जाएगी। हम समझते हैं कि जितना हमने नक़ल कर दिया है, वह सत्य की तलाश करने वाले के लिए काफ़ी है।

अब तक नक़ल की गई आयतों, हदीसों और इस्लामी विद्वानों के कथनों से स्पष्ट है कि विशेष रूप से पंद्रहवीं शाबान की रात को नमाज़ आदि के लिए जागना और उस रोज़ दिन में रोज़ा रखना अधिकतर इस्लामी विद्वानों की नज़र में बिदअत एवं ग़ैर-शरई कार्य है। शरीयत में इसका कोई आधार नहीं है। इसकी शुरूआत सहाबा के दौर के बाद हुई। इस संबंध में सही क्या है, यह जानने के लिए तो बस अल्लाह का यह कथन :

﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ﴾

"आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया।" [सूरा अल-माइदा : 3]। तथा इस आशय की अन्य आयतें, एवं अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह कथन : "जिसने हमारे इस धर्म में कोई ऐसी चीज़ पैदा की, जो धर्म का भाग नहीं है, तो वह अमान्य एवं अस्वीकृत है।" और इस आशय की अन्य हदीसें ही काफ़ी हैं।

सहीहम मुस्लिम में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित है, वह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "सभी रातों के बीच में से विशेष रूप से जुमे की रात को जागकर नमाज़ न पढ़ा करो। सभी दिनों के बीच में से विशेष रूप से जुमे के दिन को रोज़ा न रखा करो। हाँ, जुमे का दिन अगर ऐसे रोज़े के बीच में आ जाए जिसको तुम में से कोई रखने का आदी हो , तो कोई बात नहीं है।" अगर किसी रात को विशेष रूप से कोई इबादत करना जायज़ होता, तो जुमे की रात का नम्बर पहले आता। क्योंकि जुमे का दिन सबसे बेहतर दिन है, जिसमें सूरज निकलता है। यह बात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहीह हदीसों से साबित है। लेकिन जब इसके बावजूद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने विशेष रूप से कोई इबादत करने से मना कर दिया, तो पता यह चला कि अन्य रातों में विशेष रूप से कोई इबादत करने की मनाही तो और ज़्यादा होगी। हाँ, अगर इसका कोई सही प्रमाण मौजूद हो, तो बात अलग है।

मसलन चूँकि लैलतुल क़द्र और रमज़ान महीने की रातों में जागकर इबादत करना एक शरई कार्य है, इसलिए अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी ओर लोगों को ध्यान दिलाया,

उसकी प्रेरणा दी और ख़ुद किया भी। सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "जिसने ईमान के साथ और नेकी की आशा मन में लिए हुए रमज़ान महीने की रातों को जागकर इबादत की, उसके पिछले सारे गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं। और जिसने ईमान के साथ और नेकी की आशा मन में लिए हुए लैलतुल क़द्र में जागकर इबादत की, उसके पिछले सारे गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।" ऐसे में अगर पंद्रहवीं शाबान की रात, रजब महीने के पहले जुमे की रात या इसरा एवं मेराज की रात को जश्न मनाना, सभा का आयोजन करना या कोई भी इबादत करना शरई कार्य होता, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसकी ओर उम्मत को तवज्जो दिला देते या ख़ुद करके दिखा देते। और अगर ऐसा कुछ भी हुआ होता, तो सहाबा उसे ज़रूर नक़ल करते। छुपाते तो हरगिज़ नहीं। क्योंकि वह नबियों के बाद सबसे उत्तम लोग और लोगों के सबसे बड़े शुभचिंतक थे।

जबकि आपने अभी-अभी उलेमा के कथनों द्वारा जाना कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और इसी तरह आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अनहुम से रजब महीने के पहले जुमे की रात और पंद्रहवीं शाबान की रात की फ़ज़ीलत में कुछ भी साबित नहीं है। इसलिए स्पष्ट है कि इन दोनों रातों को सभा का आयोजन करना बिदअत और दीन के नाम पर किया जाने वाला एक नया काम है। इसी तरह इन दोनों रातों में विशेष रूप से कोई भी इबादत करना बिदअत एवं ग़ैर-शरई कार्य है। यही हाल रजब महीने की सत्ताइसवीं रात का भी है, जिसे कुछ लोग इसरा एवं मेराज की रात समझते हैं। उस रात को भी विशोष रूप से कोई इबादत करना जायज़ नहीं है। सभा का आयोजन भी जायज़ नहीं है। दलीलें वही हैं, जो पीछे गुज़र चुकी हैं। यह भी उस समय है, जब इसरा एवं मेराज की रात का पता होता। उलेमा के सही मत अनुसार तो पता ही नहीं है कि वह रात किस महीने की थी और तिथि कौन-सी थी। अगर किसी ने कहा है कि वह रजब महीने की सत्ताइसवीं रात थी, तो उसका कथन ग़लत एवं बेबुनियाद है। सहीह हदीसों में ऐसा कुछ भी नहीं है। किसी ने क्या ही अच्छा कहा है :

सबसे अच्छी चीज़ें वह हैं, जो सलफ़ के यहाँ हिदायत अनुरूप पाई जाती थीं और सबसे बुरी चीज़ें वह हैं, जो दीन के नाम पर बाद में जारी कर दी गईं।

दुआ है कि अल्लाह हमें और तमाम मुसलमानों को सुन्नत को पकड़े रहने, उसपर जमे रहने और सुन्नत विरोधी चीज़ों से सावधान रहने का सुयोग प्रदान करे। जिसको जो भी मिलता है, उसी के यहाँ से मिलता है।

दरूद व सलाम हो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, तथा आपके परिवार और तमाम साथियों पर।

चौथी पुस्तिका
एक झूठी वसीयत के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें
जो हरम-ए-नबवी के सेवक शैख़ अहमद के नाम पर प्रचलित है

अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ की ओर से इससे अवगत होने वाले तमाम मुसलमानों के नाम। अल्लाह इस्लाम द्वारा हम सब की रक्षा करे और हम सब को अनाप-शनाप बोलने वाले अज्ञान लोगों से सुरक्षित रखे।

अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि व बरकातुहु। (आपपर शांति, अल्लाह की दया एवं बरकतें उतरें।)

अब मूल विषय पर आते हैं। मैं हरम-ए-नबवी के ख़ादिम शैख़ अहमद की ओर मंसूब एक लेख से अवगत हुआ, जिसका शीर्षक है : "यह मदीना मुनव्वरा से हरम-ए-नबवी के ख़ादिम शैख़ अहमद की एक वसीयत है"। उसमें कहा गया है :

"जुमे की रात को मैं जगा हुआ था। मैं क़ुरआन पढ़ता रहा और अल्लाह के नामों का जाप करता रहा। इन कार्यों को संपन्न करने के बाद सोने की तैयारी कर रहा था कि चमकदार चेहरे वाल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, जो क़ुरआन एवं विधि-विधानों के साथ संसार वासियों के लिए दया बनकर आए थे, मेरे सामने मौजूद हैं। आपने कहा : ऐ शैख़ अहमद! मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! ऐ सर्वश्रेष्ट सृष्टि! मैं उपस्थित हूँ। आपने मुझसे कहा : मैं लोगों के कुकर्मों पर शर्मिंदा हूँ। मैं अपने रब एवं फ़रिश्तों के सामने खड़ा नहीं हो सकता। पिछले जुमा से इस जुमा तक एक लाख साठ हज़ार लोग इस्लाम धर्म का पालन किए बिना ही मर गए। फिर लोगों द्वारा किए जा रहे कुछ गुनाहों का ज़िक्र किया। उसके बाद फ़रमाया : यह वसीयत सर्वशक्तिमान एवं बलशाली अल्लाह की ओर से दया के तौर पर की जा रही है। फिर क़यामत की कुछ निशानियों का ज़िक्र किया और उसके बाद कहा : ऐ शैख़ अहमद! आप इस वसीयत की सूचना लोगों को दे दें। क्योंकि इसे लौह-ए-महफ़ूज़ से नक़ल किया गया है। जो व्यक्ति इसे लिखकर एक शहर से दूसरा शहर एवं एक स्थान से दूसरे स्थान भेजेगा, उसके लिए जन्नत में एक महल बनाया जाएगा। जो इसे लिखने एवं भेजने से गुरेज़ करेगा, क़यामत के दिन उसपर मेरी सिफ़ारिश हराम होगी। जो निर्धन व्यक्ति इसे लिखेगा, अल्लाह इस वसीयत की बरकत से उसे धनवान बना देगा। क़र्ज़ हो तो अल्लाह उतार देगा। गुनाह हो, तो उसे और उसके माता-पिता को क्षमा कर देगा। जो इसे नहीं लिखेगा, अल्लाह दुनिया एवं आख़िरत में उसका चेहरा काला करेगा। अंत में कहा : मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूँ कि यहाँ जितनी बातें कही गई हैं, सब सत्य हैं। अगर मैंने कोई बात झूठी कही है, तो मैं इस दुनिया से इस्लाम से हाथ धोकर निकलूँगा। जो इस वसीयत को सच जानेगा, वह जहन्नम की यातना से मुक्ति पा लेगा और जो इसे झुठलाएगा, वह काफ़िर हो जाएगा।"

यह सारांश है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हवाले से नक़ल की जाने वाली इस झूठी वसीयत का। यह वसीयत पिछले कुछ सालों से कई बार सुनने को मिली है। शब्दों के

कुछ फेर-बदल के साथ इसे बीच-बीच में प्रचारित किया जाता रहा है। इस झूठी वसीयत को तैयार करने वाला व्यक्ति कहता रहा है कि उसने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को स्वप्न में देखा और आप ने उसे इस वसीयत का बोझ सौंपा। लेकिन इस आखरी प्रकाशन में वह कहता है कि वह सोने की तैयारी कर रहा था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नज़र आए। इसका अर्थ यह है कि उसने आपको जागने की अवस्था में देखा है।

इस वसीयत के अंदर इस झूठे इन्सान ने बहुत-सी ऐसी बातें कही हैं, जो स्पष्ट रूप से झूठी एवं असत्य हैं। अल्लाह ने चाहा, तो मैं आगे उनके बारे में बात करूँगा। मैंने पछिले वर्षों में भी उनके बारे में बताया है और कहा है कि यह सारी बातें बिल्कुल झूठी हैं। यही कारण है कि इस बार यह वसीयत छपी, तो मैं इसके बारे में लिखने में आगे-पीछे हो रहा था। मुझे लग रहा था कि इसका ग़लत होना इतना स्पष्ट है कि कोई भी समझदार एवं स्वच्छ प्रकृति का व्यक्ति इसपर विश्वास नहीं करेगा। लेकिन मुझे मेरे कई दीनी भाइयों ने बताया है कि यह बहुत-से लोगों तक पहुँच गई है और कुछ लोगों ने इसे सच मान भी लिया है। इसलिए मैंने ज़रूरी समझा कि मुझ जैसे व्यक्ति को इसके बारे में कुछ लिखना चाहिए, ताकि लोगों को पता चल जाए कि यह झूठी वसीयत है और इससे धोखा न खाएँ। इसे ग़ौर से पढ़ने वाला हर ज्ञान, ईमान, स्वच्छ प्रवृत्ति एवं विवेक रखने वाले व्यक्ति को पता चल जाएगा कि यह झूठी वसीयत है। इसके बहुत सारे कारण भी हैं।

मैंने शैख़ अहमद, जिनके हवाले से यह झूठी वसीयत की गई है, के एक निकट सम्बन्धी व्यक्ति से इसके बारे में पूछा, तो उसने मुझसे कहा कि शैख़ अहमद की ओर इसकी निस्बत झूठी है। उन्होंने इस प्रकार की कोई बात कही या लिखी नहीं है। यहाँ यह स्पष्ट कर दूँ कि उक्त शैख़ अहमद की मृत्यु काफ़ी समय पहले हो चुकी है। लेकिन अगर मान भी लिया जाए कि शैख़ अहमद या उनसे किसी बड़े आदमी ने कह दिया कि उसने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को स्वप्न में या जागते हुए देखा है और आपने उसे यह वसीयत की है, तब भी पूरे विश्वास के साथ कहेंगे कि वह या तो झूठा है या फिर उससे यह बातें शैतान ने कही हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नहीं। इसके बहुत-से कारण हैं। जैसे :

1- पहला कारण यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपकी मृत्यु के बाद जागते हुए देखा नहीं जा सकता। अगर किसी अज्ञान सूफ़ी ने दावा किया कि वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जागते हुए देखता है या आप अपने जन्म दिन के आयोजन में आते हैं, तो उसने बहुत बड़ी ग़लत बयानी से काम लिया और अल्लाह की किताब, उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत एवं उलेमा के इजमा (मतैक्य) के विरुद्ध चला गया। क्योंकि मरे हुए लोग अपनी क़ब्रों से क़यामत के दिन ही निकलेंगे। दुनिया में नहीं। जो इससे हटकर कुछ बोल रहा है, वह या तो झूठ बोल रहा है या फिर उस सच्चे इस्लाम से अवगत नहीं है, जिससे इस उम्मत के सदाचारी पूर्वज

अवगत थे और जिसपर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एवं उनके मार्ग पर सच्चाई के साथ चलने वाले लोगों ने चलकर दिखाया है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَٰلِكَ لَمَيِّتُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ﴾

"फिर तुम सब इसके पश्चात् अवश्य मरने वाले हो। फिर निश्चय तुम सब (क़यामत) के दिन जीवित किए जाओगे।" [सूरा अल-मोमिनून : 15, 16], अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है : "मैं पहला व्यक्ति हूँगा, जिसकी क़ब्र क़यामत के दिन खुलेगी। इसी तरह मैं पहला सिफ़ारिश करने वाला हूँगा और पहला व्यक्ति हूँगा, जिसकी सिफ़ारिश स्वीकार की जाएगी।" इस आशय की आयतें और हदीसें बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

2- दूसरा कारण यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सत्य के विपरीत कोई बात नहीं कहते। न तो जीवन काल में और न मृत्यु को प्राप्त होने के बाद। जबकि इस वसीयत में आपकी शरीयत के विरुद्ध बहुत-सी बातें मौजूद हैं। इसी प्रकार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को केवल स्वप्न में ही देखा जा सकता है। जिसने आपको स्वप्न में आपकी असली शक्ल एवं सूरत में देखा, उसने आपको देखा। क्योंकि शैतान आपका रूप धारण नहीं कर सकता। यह बात एक सही हदीस में आई हुई है। लेकिन असल मामला देखने वाले के ईमान, सच्चाई, विश्वसनीयता, सही समझने और सही से याद रखने की क्षमता, दीनदारी और अमानतदारी का है। बात यह भी है कि क्या सच-मुच उसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपकी असल शक्ल सूरत में देखा है या नहीं?

अगर आपके जीवन काल में कही हुई कोई बात भी अविश्वसनीय एवं कमज़ोर याद-दाश्त वाले वर्णनकर्ताओं की शृंखला से वर्णित हो, तो उसपर भरोसा नहीं किया जा सकता तथा उसे प्रमाण के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। इसी तरह यदि कोई हदीस विश्वसनीय एवं याद रखने की क्षमता वाले वर्णनकर्ताओं की शृंखला से वर्णित हो, लेकिन किसी ऐसी हदीस के विरुद्ध हो, जिसे इनसे भी अधिक विश्वसनीय एवं याद रखने की क्षमता वाले वर्णनकर्ताओं ने नक़ल किया हो और दोनों के बीच सामंजस्य बिठाना संभव न हो, तो पहली हदीस को निरस्त माना जाएगा और दूसरी हदीस को निरस्त करने वाला। लेकिन अगर सामंजस्य बिठाने के साथ-साथ निरस्त होने का निर्णय लेना भी संभव न हो, तो याद रखने की कम क्षमता रखने वाले और कम विश्वसनीय वर्णनकर्ता की रिवायत को परे रख दिया जाएगा और याद रखने की अधिक क्षमता रखने वाले एवं अधिक विश्वसनीय वर्णनकर्ता की रिवायत पर अमल किया जाएगा।

ऐसे में किसी ऐसी वसीयत का क्या हाल हो सकता है, जिसके बारे में पता ही न हो कि उसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसने नक़ल किया है? वह विश्वसनीय एवं अमानतदार है भी या नहीं? इस प्रकार की वसीयत में कोई शरीयत विरोधी बात न भी हो, तब भी उसपर ध्यान नहीं दिया जा सकता। उस वसीयत को तो छोड़ ही दीजिए, जिसके अंदर कही गई बहुत-सी बातें साफ़ तौर पर

बताती हों कि वह झूठी है और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर उसकी निस्बत ग़लत है। उसमें एक ऐसा दीन खड़ा किया गया है, जिसकी अनुमति अल्लाह ने नहीं दी है।

जबकि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "जिसने जान-बूझकर मुझपर झूठ बोला, वह अपना ठिकाना जहन्नम बना ले।" इस वसीयत के लेखक ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हवाला देकर ऐसी-ऐसी बातें लिखी हैं, जो आपने कही नहीं हैं। उसने आपके हवाले से स्पष्ट झूठी बातें लिखी हैं। इसलिए वह इस हदीस में दी गई चेतावनी का बहुत ज़्यादा हक़दार है, अगर फ़ौरन तौबा न कर ले और लोगों को बता न दे कि उसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हवाला देकर झूठी बातें लिखी और फैलाई हैं। क्योंकि जिसने दीन का हवाला देकर ग़लत बात फैलाई, उसकी तौबा उस समय तक स्वीकार नहीं की जाएगी, जब तक लोगों के अंदर इस बात की घोषणा न कर दे कि वह अपने कहे हुए झूठ को वापस लेता है। क्योंकि सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने कहा है:

﴿إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَى مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّاعِنُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُوا فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ﴾

"निःसंदेह जो लोग उसको छिपाते हैं जो हमने स्पष्ट प्रमाणों और मार्गदर्शन में से उतारा है, इसके बाद कि हमने उसे लोगों के लिए किताब में स्पष्ट कर दिया है, उनपर अल्लाह लानत करता है और सब लानत करने वाले उनपर लानत करते हैं।

परंतु वे लोग जिन्होंने तौबा कर ली और सुधार कर लिया और खोलकर बयान कर दिया, तो ये लोग हैं जिनकी मैं तौबा स्वीकार करता हूँ और मैं ही बहुत तौबा क़बूल करने वाला, अत्यंत दयावान हूँ।" [सूरा अल-बक़रा : 159, 160], इस आयत में पवित्र एवं महान अल्लाह ने स्पष्ट कर दिया है कि जिसने कोई सत्य छुपाया, उसकी तौबा उस समय तक स्वीकार नहीं होगी, जब तक अपने आपको सुधार न ले और सब कुछ खोलकर बयान न कर दे। दरअसल अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रसूल बनाकर और उनपर एक संपूर्ण शरीयत उतारकर अपने बंदों को एक संपूर्ण दीन एवं परिपूर्ण नेमत दी है। अल्लाह ने आपको दुनिया से दीन को पूरा करने और सब कुछ खोल कर बयान कर देने के बाद ही उठाया है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا﴾

"मैंने आज तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को संपूर्ण कर दिया है तथा तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी है, और तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म स्वरूप पसंद कर लिया है।" [सूरत अल-माइदा : 3], पूरी आयत देखें।

इस झूठी वसीयत का लेखक चौदहवीं सदी में पैदा हुआ, जो लोगों को एक नए दीन के मकड़जाल में फँसाना चाहता है, जिसका पालन करने वाला जन्नत जाएगा और जिससे मुँह मोड़ने वाला जहन्नम। वह अपनी इस झूठी वसीयत को क़ुरआन से भी महान एवं उत्कृष्ट दिखाना चाहता है। उसके अनुसार इसे

लिखकर एक नगर से दूसरे नगर या एक स्थान से दूसरे स्थान भेजने वाले के लिए जन्नत में महल बनाया जाएगा और इसे लिखने एवं आगे भेजने से कतराने वाला क़यामत के दिन अल्लाह के नबी सल्ल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सिफ़ारिश से वंचित हो जाएगा। यह एक बदतरीन झूठ है, जो स्पष्ट रूप से बता देता है कि यह वसीयत झूठी है और इसे लिखने वाला एक बेशर्म इन्सान है। क्योंकि अगर किसी ने क़ुरआन को लिखा और उसे एक नगर से दूसरे नगर या एक स्थान से दूसरे स्थान भेजा, तो इतने मात्र से वह जन्नत में महल का हक़दार नहीं बन पाएगा, अगर वह क़ुरआन पर अमल नहीं करता है। तो फिर इस झूठी वसीयत को लिखने और उसे एक नगर से दूसरे नगर भेजने मात्र से इन्सान इसका हक़दार कैसे बन जाएगा? इसी तरह जिसने क़ुरआन को लिखने और उसे एक नगर से दूसरे नगर भेजने से गुरेज़ किया, वह इतने मात्र से अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिफ़ारिश से वंचित नहीं हो जाएगा, अगर वह आपपर ईमान रखता और आपकी शरीयत का पालन करता हो। बस यही एक झूठ इस वसीयत के असत्य होने तथा इसके प्रकाशक के झूठे, बेशर्म, मूर्ख और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाई हुई शरीयत से उसके अनभिज्ञ एवं दूर होने को बताने के लिए काफ़ी है।

इस वसीयत के अंदर इसके अतिरिक्त भी कई अन्य बातें हैं, जो इसके असत्य एवं झूठे होने को प्रमाणित करती हैं। भले ही इसके लिखने वाले ने इसे सही दिखाने के लिए हज़ार क़समें खा ली हों और भले ही झूठे होने की स्थिति में अपने लिए बड़ी भयानक यातना की बद-दुआ कर ली हो, उसकी इन क़समों एवं बद-दुआओं से उसकी यह वसीयत सही नहीं हो सकती। अल्लाह की क़सम, यह एक बदतरीन प्रकार का झूठ है। हम गवाह बनाते हैं पवित्र अल्लाह को, तथा हमारे साथ उपस्थित फ़रिश्तों को, और हमारे ये शब्द जितने मुसलमानों तक पहुँचेंगे उन सभों को, -इस दृढ़ विश्वास के साथ गवाह बनाते हैं कि एक दिन महान अल्लाह के सामने हमें उपस्थित होना है- यह कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हावाले से की गई यह वसीयत झूठी है। अल्लाह इस झूठ के लिखने वाले को रुस्वा करे और उसके साथ वही व्यवहार करे, जिसका वह हक़दार है।

अब तक जो कुछ आपने पढ़ा, उसके अतिरिक्त और भी बहुत-सी बातें हैं, जो इस वसीयत के असत्य होने पर मुहर लगाती हैं। जैसे :

1- उसके अंदर कहा गया है : "पिछले जुमा से इस जुमा तक एक लाख साठ हज़ार लोग इस्लाम धर्म का पालन किए बिना ही मर गए।" क्योंकि इस दावे का संबंध ग़ैब की बात जानने से है और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के बाद आप पर वह्य आने का सिलसिला बंद हो चुका है। वैसे, तो जीवन काल में भी आप ग़ैब का ज्ञान नहीं रखते थे, तो फिर मृत्यु के बाद इस तरह की बात कैसे कह सकते हैं। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِى خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ﴾

"(ऐ नबी!) आप कह दें : मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, और न मैं परोक्ष (ग़ैब) का ज्ञान रखता हूँ।" [सूरा अल-अनआम : 50], पूरी आयत देखें। एक अन्य स्थान में अल्लाह

ने फ़रमाया है :

﴿قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ﴾

"आप कह दें कि अल्लाह के सिवा आकाशों तथा धरती में रहने वाला कोई भी परोक्ष से अवगत नहीं है।" [सूरा अल-नम्ल : 65], सहीह हदीस में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "क़यामत के दिन कुछ लोगों को मेरे हौज़ से दूर हटा दिया जाएगा। यह देख मैं कहूँगा : ऐ अल्लाह! ये तो मेरे लोग हैं, ये तो मेरे लोग हैं? इसपर अल्लाह कहेगा : तुझे पता नहीं है कि इन लोगों ने तेरे बाद क्या-क्या किया। उस समय मैं वही कहूँगा, जो अल्लाह के नेक बंदे (यानी ईसा अलैहिस्सलाम) ने कहा था : {जब तक मैं उनके बीच रहा, उनपर गवाह रहा। फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो तू ही उनसे अवगत रहा और तू हर चीज़ की पूरी सूचना रखता है।}" [सूरा अल-माइदा : 117]।

2- इसके वसीयत का झूठ का पोल उसके इस वाक्य से भी खुलता है : "जो निर्धन व्यक्ति इसे लिखेगा, अल्लाह इस वसीयत की बरकत से उसे धनवान बना देगा। क़र्ज़ हो तो अल्लाह उतार देगा। गुनाह हो, तो उसे और उसके माता-पिता को क्षमा कर देगा।" यह एक बहुत बड़ा झूठ है, जो बताता है कि इसे लिखने वाला बेशर्मी की सारी हदें पार कर चुका है। क्योंकि यह तीन चीज़ें तो केवल पवित्र क़ुरआन को लिखने मात्र से भी प्राप्त नहीं होतीं, भला इस झूठी वसीयत को लिखने से कैसे प्राप्त हो सकती हैं। दरअसल इसका लेखक लोगों को भ्रमित करके उन्हें इस वसीयत में अटका देना चाहता है कि इसे लिखते रहें, इसकी तथाकथित फ़ज़ीलत से चिपके रहें, उन कार्यों को छोड़ दें, जिन्हें करने का आदेश अल्लाह ने बंदों को दिया है और जिन्हें धन की प्राप्ति, क़र्ज़ की अदायगी और गुनाहों की क्षमा का साधन बनाया है। हम विफलता की ओर ले जाने वाली इन चीज़ों और इच्छा एवं शैतान के अनुसरण से अल्लाह की शरण माँगते हैं।

3- इस वसीयत के ग़लत होने का एक प्रमाण उसमें दर्ज यह वाक्य भी है : "जो इसे नहीं लिखेगा, अल्लाह दुनिया एवं आख़िरत में उसका चेहरा काला करेगा।" यह भी एक बदतरीन झूठ एवं स्पष्ट प्रमाण है इस बात की कि यह वसीयत असत्य है और इसे लिखने वाला कोई झूठा इन्सान है। भला कोई समझदार ऐसा कैसे हो सकता है कि चौदह सदियों बाद पैदा होने वाले एक अज्ञान व्यक्ति द्वारा तैयार किए गए एक वसीयत को लिख कर बाँटे, जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हवाले से झूठ बोलता हो और कहता हो कि जो इसे लिखर नहीं बाँटेगा, अल्लाह दुनिया एवं आख़िरत में उसके चेहरे को काला करेगा और अगर किसी निर्धन ने उसे लिखकर बाँटा तो धनवान हो जाएगा, क़र्ज़ में डूबे हुए व्यक्ति ने यह काम किया, तो क़र्ज़ उतर जाएगा और उसके सारे गुनाह माफ़ हो जाएँगे!!

यह एक बहुत बड़ा मिथ्या आरोप है। प्रमाण एवं वास्तविकता दोनों बताते हैं कि इस प्रकार की बात करने वाला व्यक्ति झूठा, अल्लाह के प्रति दुस्साहस करने वाला और निर्लज्जता की सारी सीमाओं को पार करने वाला है। दुनिया में बेशुमार लोगों ने इसे लिखकर नहीं बाँटा फिर भी उनके चेहरे काले नहीं हुए। अनगिनत लोगों ने उसे बहुतों बार लिखकर बाँटा, लेकिन उनका क़र्ज़ अदा नहीं हुआ। वह आज भी

निर्धन हैं। हम दिलों की गुमराहियों और गुनाहों के ज़ंग से अल्लाह की शरण माँगते हैं। ये ऐसी विशेषताएं और ऐसे प्रतिफल हैं, जो अल्लाह ने सबसे उत्कृष्ट ग्रंथ यानी क़ुरआन लिखने वाले को भी नहीं दिए। किसी झूठी एवं ग़लत-सलत बातों से भरी हुई वसीयत को लिखने वाले को कैसे दे सकता है?

4- इस वसीयत के असत्य एवं झूठे होने का एक प्रमाण उसका यह वाक्य है : "जो इस वसीयत को सच जानेगा, वह जहन्नम की यातना से मुक्ति पा लेगा और जो इसे झुठलाएगा, वह काफ़िर हो जाएगा।" यह भी एक बहुत बड़ा दुस्साहस और बदतरीन झूठ है। यह झूठा इन्सान तमाम लोगों से कहता है कि उसके झूठ को सच मान लें और दावा करता है कि इसके नतीजे में जहन्नम की यातना से मुक्ति मिल जाएगी। जबकि उसकी बात को झुठलाने वाला काफ़िर हो जाएगा। अल्लाह की क़सम, इस झूठे ने अल्लाह पर एक बहुत बड़ा झूठ बाँधा है और बड़ी अनुचित बात कही है। काफ़िर तो इसकी पुष्टि करने वाले को होना चाहिए, झुठलाने वाले को नहीं। क्योंकि यह एक बेबुनियाद बात है। हम अल्लाह को गवाह बनाकर कहते हैं कि यह झूठ है और इसे लिखने वाला बहुत बड़ा झूठा है। उसकी मंशा शरीयत में ऐसी बातें दाख़िल करना है, जिनकी अनुमति अल्लाह ने नहीं दी है। जबकि अल्लाह चौदह सौ साल पहले ही इस उम्मत को एक संपूर्ण दीन दे चुका है। अतः अपने पाठकों एवं भाईओं से मेरा अनुरोध है कि सचेत रहें, इस प्रकार की झूठी बातों को हरगिज़ सच न मानें और इन्हें समाज में प्रचलित होने का अवसर न दें। क्योंकि सत्य एक नूर है। उसे ढूँढ निकालने में कोई परेशानी नहीं होती। सत्य को उसके प्रमाणों के साथ तलाश करें। जो बात समझ में न आए, उसे जानकारों से पूछ लें। झूठे लोगों की क़समों के धोखे में न आएँ। इबलीस ने भी आपके पिता एवं माता यानी आदम एवं हव्वा के सामने क़समें खाई थीं और कहा था कि वह उनका शुभचिंतक है। जबकि वह सबसे बड़ा मक्कार एवं झूठा था। अल्लाह ने सूरा आराफ़ में उसका क़िस्सा बयान करते हुए कहा है :

﴿وَقَاسَمَهُمَا إِنِّي لَكُمَا لَمِنَ النَّاصِحِينَ﴾

"तथा क़सम खाकर दोनों से कहा कि वास्तव में, मैं तुम दोनों का हितैषी हूँ।" [सूरा अल-आ'राफ़ : 21]। अतः शैतान एवं उसके झूठे अनुयायियों से सावधान रहें। पथभ्रष्ट करने के लिए झूठी क़समें खाना, मिथ्या वचन देना और लच्छेदार बातें करना इनके चरित्र का हिस्सा है। अल्लाह मुझे, आपको और तमाम मुसलमानों को शैतान की बुराई, गुमराही में डालने वालों के फ़ितने और अल्लाह के दुश्मनों के फ़रेब से बचाए, जो अल्लाह के नूर को अपनी फूँक से बुझाना जाहते हैं। लेकिन ऐसा हो नहीं सकता। क्योंकि अल्लाह अपने दीन की रक्षा करता रहेगा और उसे फलने-फूलने का अवसर देता रहेगा। चाहे यह बात अल्लाह के दुश्मनों को बुरी ही क्यों न लगे।

हाँ, इस झूठे ने समाज के अंदर बुराइयों के आम होने की जो बात कही है, वह अपनी जगह पर सही है। ख़ुद क़ुरआन एवं हदीस ने भी इन बुराइयों से सावधान रहने को कहा है। हमारे लिए इन दोनों में लिखी हुई बातें ही काफ़ी हैं। दुआ है कि अल्लाह मुसलमानों के हालात ठीक कर दे, उनको सच्चे मार्ग पर

चलाए, उसपर सुदृढ़ रखे और तमाम गुनाहों से तौबा करने का सुयोग प्रदान करे। निश्चय ही वह बहुत ज़्यादा तौबा ग्रहण करने वाला, दयावान एवं सब कुछ करने की शक्ति रखने वाला है।

रही बात क़यामत की निशानियों की, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों में सपष्ट रूप से उनका ज़िक्र हुआ है और कुछ निशानियों की ओर इशारा पवित्र क़ुरआन में भी किया गया है। इसलिए जिसे इनके बारे में जानना हो, उसे हदीस की किताबें, ज्ञान तथा ईमान वाले लेखकों की पुस्तकें पढ़नी चाहिए। हमें इस प्रकार के झूठे एवं फ़रेबी इन्सान की लिखी हुई चीज़ें पढ़ने की कोई ज़रूरत नहीं है। हमारे लिए अल्लाह ही काफ़ी है। वही बिगड़ी बनाने वाला है। अच्छे काम करने की क्षमता एवं बुरे काम से बचने की शक्ति वही प्रदान करता है। वह उच्च एवं महान है।

तमाम प्रशंसाएँ अल्लाह की हैं, जो सारे संसार का रब है। दरूद व सलाम हो अल्लाह के बंदे एवं रसूल पर, जो सच्चे एवं अमानतदार हैं। साथ ही उनके परिजनों, साथियों एवं क़यामत के दिन तक उनका अनुसरण करने वालों पर भी।

तौ़हीद (एकेश्वरवाद) की रक्षा

लेखक:

अल्लामा इमाम अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़

-उनपर अल्लाह की दया हो-

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान है।

क़ब्रों पर मस्जिद बनाने के खिलाफ चेतावनी

मुझसे पूछा गया कि कह्फ़ वालों के सोने के स्थान पर मस्जिद बनाना जायज़ है?

मैंने जवाब में कहा : अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, सारी प्रशंसा अल्लाह की है, दरुद एवं सलाम हो हमारे रसूल पर।

अब मूल विषय पर आते हैं। मुझे सूचना मिली कि इस्लामी शास्त्र लीग की पत्रिका के तीसरे अंक के मुसलमानों की ख़बरों के भाग में प्रकाशित हुआ है कि जॉर्डन की इस्लामी शास्त्र लीग उस गुफा के ऊपर एक मस्जिद बनाने का इरादा रखती है, जो हाल ही में अल-रहीब नामी एक गाँव में खोज निकाली गई है। कहा जाता है कि यह वही गुफा है, जिसके अंदर वह गुफा (कह्फ) वाले सोए हुए थे, जिनका ज़िक्र क़ुरआन में हुआ।

चूँकि मुसलमानों का शुभचिंतन एक अनिवार्य कार्य है, इसलिए मैंने उचित समझा कि जॉर्डन के इस्लामी शास्त्र लीग की उसी पत्रिका में कुछ बातें प्रस्तुत कर लीग को उक्त गुफा पर मस्जिद बनाने के संबंध में उचित मार्गदर्शन दिया जाए। क्योंकि नबियों एवं सदाचारी लोगों की क़ब्रों पर मस्जिद बनाने से शरीयत ने मना एवं सावधान किया है और ऐसा करने वाले पर लानत की है। कारण यह है कि यह कार्य शिर्क एवं नबियों के बारे में अतिशयोक्ति की ओर ले जाता है। वस्तुस्थिति भी यही कहती है कि इस संबंध में शरीयत ने जो कहा है वह बिल्कुल सही है, यह एक आकाशीय शरीयत है और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाई हुई सारी शिक्षाएँ सच्ची हैं। इस्लामी दुनिया के हालात और उसमें मज़ारों पर मस्जिद के निर्माण, उनके सम्मान, उनको पुख़्ता एवं सुंदर बनाने तथा मुजाविर नियुक्त करने के कारण फैले हुए शिर्क एवं अतिशयोक्ति पर जो भी ग़ौर करेगा, उसे विश्वास हो जाएगा कि यह चीज़ें निश्चित रूप से शिर्क की ओर ले जाती हैं। यह इस्लामी शरीयत की एक बड़ी ख़ूबी है कि उसने इन चीज़ों से मना एवं सावधान किया है।

इस संबंध में जो हदीसें आई हैं, उनमें से एक सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम में आइशा रज़ियल्लाहु अनहा से वर्णित है। वह कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "यहूदियों और ईसाइयों पर अल्लाह की लानत है। उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया।"

आइशा रज़ियल्लाहु अनहा कहती हैं : आप दरअसल उनके इस कृत्य से सावधान कर रहे थे। वह आगे कहती हैं : यदि ऐसा न होता, तो आपकी क़ब्र बाहर बनाई जाती। आपको इस बात का डर था कि कहीं उसे मस्जिद न बना लिया जाए। सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम ही में है कि उम्म-ए-सलमा एवं उम्म-ए-हबीबा रज़ियल्लाहु अनहुमा ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने हबशा में देखे हुए एक चर्च तथा उसकी तस्वीरों का ज़िक्र किया, तो आपने कहा : "उन लोगों के अंदर जब कोई सदाचारी व्यक्ति मर जाता, तो उसकी कब्र के ऊपर मस्जिद बना लेते और उसमें वह चित्र बना देते। वे अल्लाह के निकट सबसे बुरे लोग हैं।"

सहीह मुस्लिम में जुनदुब बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत है, वह कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपकी मृत्यु से पाँच दिन पहले कहते हुए सुना है : "मैं अल्लाह के यहाँ इस बात से बरी होने का एलान करता हूँ कि तुममें से कोई मेरा 'ख़लील' (अनन्य मित्र) हो। क्योंकि अल्लाह ने जैसे इब्राहीम को 'ख़लील' बनाया था, वैसे मुझे भी 'ख़लील' बना लिया है। हाँ, अगर मैं अपनी उम्मत के किसी व्यक्ति को 'ख़लील' बनाता, तो अबू बक्र को बनाता। सुन लो, तुमसे पहले के लोग अपने नबियों की कब्रों को मस्जिद बना लिया करते थे। सुन लो, तुम कब्रों को मस्जिद न बनाना। मैं तुम्हें इससे मना करता हूँ।" इस आशय की बहुत-सी हदीसें मौजूद हैं।

इस्लामी इमामों, जिसमें चारों पंथों के उलेमा भी शामिल हैं, ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर अमल करते हुए, उम्मत के लिए शुभचिंतन से काम लेते हुए और उसे इस बात से सचेत करते हुए कि कहीं वह भी उसी चीज़ में संलिप्त न हो जाए, जिसमें यहूदी, ईसाई तथा इन जैसी अन्य क़ौमें संलिप्त हो चुकी हैं, स्पष्ट रूप से क़ब्रों के ऊपर मस्जिद बनाने से मना एवं सावधान किया है।

अतः इस्लामी शास्त्र लीग जॉर्डन तथा अन्य तमाम मुसमानों को चाहिए कि सुन्नत पर अमल करें, इमामों के मार्ग पर चलें और उन तमाम चीज़ों से बचें जिनसे अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सावधान किया है। इसमें दुनिया एवं आख़िरत में बंदों की भलाई, खुशी और मोक्ष निहित है। ध्यान देने योग्य है कि कुछ लोगों ने इस संबंध में सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह के इस कथन से दलील बनाने का प्रयास किया है, जो गुफ़ा वालों के बारे में आया है :

﴿قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا﴾

"जिन लोगों को उनके बारे में वर्चस्व मिला, वे कहने लगे कि हम तो इनके आस-पास मस्जिद बना लेंगे।" [सूरा अल-कह्फ़ : 21]।

लेकिन इसका जवाब यह है कि अल्लाह ने उस समय के शासकों और सत्ताधारी लोगों के बारे में बताया है कि उन्होंने यह बात कही थी। अल्लाह ने उनकी इस बात को नक़ल उससे अपनी पसंदीदगी व्यक्त करने के लिए नहीं, बल्कि उसकी निंदा और उससे नफ़रत दिलाने के लिए की है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, जिनपर यह आयत उतरी थी और इस आयत की व्याख्या से सबसे अधिक अवगत थे, ने क़ब्रों पर मस्जिद बनाने से मना और इससे

सावधान किया है, ऐसा करने वाले पर लानत एवं उसकी निंदा की है और बताया है कि ये अल्लाह के निकट सबसे बुरे लोग हैं। ज़ाहिर सी बात है कि एक सत्य की खोज में लगे हुए व्यक्ति के लिए इतना ही काफ़ी है।

अगर मान भी लें कि क़ब्रों पर मस्जिद बनाने का काम हमसे पहले की शरीयतों में जायज़ था, तब भी उनका अनुसरण करते हुए हमारे लिए ऐसा करना जायज़ नहीं होगा। क्योंकि हमारी शरीयत ने पिछली शरीयतों को निरस्त कर दिया है, हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रसूलों के सिलसिले की अंतिम कड़ी हैं और आपकी शरीयत संपूर्ण एवं व्यापक शरीयत है। इसलिए जब आपने हमें क़ब्रों पर मस्जिद बनाने से मना कर दिया, तो हमारे लिए यह जायज़ नहीं होगा। हमें आपका अनुसरण करना है। आपकी शिक्षाओं को पकड़े रहना है। पिछली शरीयतों की इसके विपरीत बातों एवं रीति-रिवाजों से दूर रहना है। क्योंकि अल्लाह की शरीयत से कोई संपूर्ण शरीयत नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े से कोई सुंदर तरीक़ा नहीं है।

दुआ है कि अल्लाह हमें और तमाम मुसलमानों को अपने दीन पर मज़बूती से जमे रहने और अपने रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीयत को थामे रहने का सुयोग प्रदान करे। हमारे कथन एवं कार्य इसी के अनुरूप हों। हमारा अंदर और बाहर इसी रंग में रंगा हुआ हो। हमारे तमाम मामलात इसी खाँचे में बैठते हों। निश्चय ही अल्लाह सब की सुनने वाला और सबसे निकट है।

दरूद व सलाम हो अल्लाह के बंदे और रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, आपके परिजनों, साथियों और क़यामत के दिन तक उनके मार्ग पर चलने वालों पर।

तौ़हीद (एकेश्वरवाद) की रक्षा

लेखक:

अल्लामा इमाम अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़

-उनपर अल्लाह की दया हो-

आरंभ अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान है

ऐसे व्यक्ति की पथभ्रष्टता और कुफ्र का बयान, जो कहता हो कि किसी के लिए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीयत से बाहर निकलना जायज़ है

सभी प्रकार की प्रशंसा अल्लाह के लिए है, तथा दया और शांति अवतरित हो सब से प्रतिष्ठित रसूल एवं संदेष्टा हमारे पैगंबर मुहम्मद पर, तथा उनके समस्त परिवार और सभी साथियों पर।

तत्पश्चात: मैंने अल-शर्क़ अल-अवसत समाचार पत्र, अंक संख्या (5824), दिनांक 5/6/1415 हिजरी में प्रकाशित एक लेख की सूचना मिला, जिसे स्वयं को अब्दुल फ़त्ताह अल-हायक कहने वाले किसी व्यक्ति द्वारा "الفهم الخاطئ" (ग़लत सोच) शीर्षक के तहत लिखा गया था।

लेख का सारांश : उसने एक ऐसी बात का इनकार किया है, जिसका क़ुरआन एवं सुन्नत तथा इजमा (मतैक्य) द्वारा इस्लाम धर्म का अभिन्न अंग होना बिल्कुल स्पष्ट है। वह बात यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस दुनिया के तमाम लोगों के लिए रसूल बनाकर भेजा गया था। उसने इस तथ्य का इनकार करते हुए कहा है कि जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण नहीं किया और यहूदी एवं ईसाई बनकर रह गया, वह भी सत्य पर है। फिर उसने इस संसार के रब के प्रति अशिष्टता दिखाते हुए कहा है कि अविश्वासियों एवं अवज्ञाकारियों को यातना देने जैसी बातें बेकार की बातें हैं।

उसने क़ुरआनी आयतों एवं हदीसों के साथ छेड़-छाड़ की, उनको ग़लत परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया, उनकी ग़लत व्याख्या की और ऐसे शरई प्रमाणों एवं क़ुरआन की स्पष्ट आयतों तथा हदीसों से आँखें मूंद रखीं, जो प्रमाणित करते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम इन्सानों के लिए रसूल बनाकर भेजे गए थे, आपके बारे में सुनने के बावजूद आपका अनुसरण न करने वाला अविश्वासी है और अल्लाह इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म को ग्रहण नहीं करता। उसने इन प्रमाणों तथा इस तरह अन्य प्रमाणों से आँखें इसलिए मूंद रखीं, ताकि ऐसे लोगों को धोखा दे सके, जो दीन का पर्याप्त ज्ञान नहीं रखते।

उसका यह कृत्य स्पष्ट कुफ़्र, इस्लाम का परित्याग और अल्लाह एवं उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठलाना है। उसके लेख को पढ़ने वाला कोई भी दीन का ज्ञान एवं ईमान रखने वाला व्यक्ति इसका अंदाज़ा लगा सकता है।

शासन को चाहिए कि उसे तौबा कराने के लिए अदालत के हवाले कर दे और शरीयत के आलोक में उसके बारे में निर्णय ले।

दरअसल उच्च एवं महान अल्लाह ने स्पष्ट रूप से बता दिया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रसूल सारे इन्सानों एवं जिन्नात की ओर बनाकर भेजा गया था। इस बात से अनभिज्ञ कोई भी मुसलमान नहीं हो सकता, जो दीन का थोड़ा-बहुत भी ज्ञान रखता हो।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ﴾

"(हे नबी!) आप लोगों से कह दें कि हे मानव जाति के लोगो! मैं तुम सभी की ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ, जिसके लिए आकाश तथा धरती का राज्य है। उसके सिवा कोई वंदनीय (पूज्य) नहीं है। वही जीवन देता तथा मारता है। अतः अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके उस उम्मी नबी पर, जो अल्लाह पर और उसकी सभी पुस्तकों पर ईमान रखता है, और उनका अनुसरण करो, ताकि तुम मार्गदर्शन पा जाओ।" [सूरा अल-आराफ़ : 158]। एक अन्य स्थान में अल्लाह ने कहा है :

﴿وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَذَا الْقُرْآنُ لِأُنْذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ﴾

"तथा मेरी ओर यह क़ुरआन वह्य (प्रकाशना) द्वारा भेजा गया है, ताकि मैं तुम्हें इसके द्वारा डराऊँ और उसे भी जिस तक यह पहुँचे।" [सूरा अल-अनआम : 19]। एक अन्य स्थान में अल्लाह ने कहा है :

﴿قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ﴾

"(ऐ पैगम्बर!) आप कह दीजिए, यदि तुम अल्लाह से प्रेम रखते हो तो मेरे मार्ग पर चलो, अल्लाह भी तुमसे प्रेम रखेगा, और तुम्हारे गुनाह को क्षमा कर देगा।" [आल-ए-इमरान : 31]। एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴾

"और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को अपनाएगा, उसे उसकी तरफ़ से कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह आख़िरत में घाटा उठाने वालों में से होगा।" [सूरा आल-ए-इमरान : 85]। एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا﴾

"हमने आपको सभी लोगों की ओर शुभ संदेश देने वाला एवं डराने वाला बना कर भेजा है।" [सूरा सबा : 28]। एक अन्य स्थान में महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِلْعَالَمِينَ﴾

"और (हे नबी!) हमने आपको समस्त संसार के लिए दया बनाकर भेजा है।" [सूरा अल-अंबिया : 107]। एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿وَقُلْ لِلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأُمِّيِّينَ أَأَسْلَمْتُمْ فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوْا وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ﴾

"तथा अह्ले किताब और उम्मियों (अर्थात जिनके पास कोई किताब नहीं आयी) से कहो कि क्या तुम भी आज्ञाकारी हो गये? यदि वे आज्ञाकारी हो गये, तो मार्गदर्शन पा गये और यदि विमुख हो गये, तो आपका दायित्व (संदेश) पहुँचा देना है तथा अल्लाह बंदों को देख रहा है।" [सूरा आल-ए-इमरान : 20]। एक और जगह में पवित्र अल्लाह ने कहा है :

﴿تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا﴾

"अत्यन्त शुभ है वह अल्लाह जिसने अपने उपासक पर फ़ुरक़ान (क़ुरआन) अवतरित किया, ताकि वह सारे संसार के लिए सतर्क करने वाला बन जाए।" [सूरा अल-फ़ुरक़ान : 1]।

बुख़ारी और मुस्लिम ने जाबिर रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत किया है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "मुझे पाँच चीज़ें ऐसी दी गई हैं, जो मुझसे पहले किसी नबी को दी नहीं गई थीं। एक महीने की मसाफ़त तक जाने वाले प्रताप द्वारा मेरा सहयोग किया गया है। मेरे लिए धरती को नमाज़ पढ़ने का स्थान एवं पवित्रता प्राप्त करने का साधन बनाया गया हैम, इसलिए मेरी उम्मत का जो व्यक्ति जहाँ नमाज़ का समय पाए, वह वहीं नमाज़ अदा कर ले। मेरे लिए ग़नीमत का धन हलाल किया गया है, मुझसे पहले किसी के लिए ग़नीमत का धन हलाल न था। मुझे सिफ़ारिश करने का अधिकार दिया गया है। दूसरे नबी अपने-अपने समुदायों की ओर नबी बनाकर भेजे जाते थे, लेकिन मुझे तमाम इन्सानों की ओर नबी बनाकर भेजा गया है।"

इससे बिलकुल स्पष्ट है कि अंतिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम इन्सानों के लिए रसूल बनाकर भेजे गए थे, आपके रसूल बन जाने के बाद पिछली तमाम शरीयतें निरस्त हो चुकी हैं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण न करने वाला काफ़िर, अवज्ञाकारी एवं अल्लाह के दडं का हक़दार है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ﴾

"और इन समूहों में से जो व्यक्ति भी इसका इनकार करेगा, तो उसके वादा की जगह (ठिकाना) जहन्नम है।" [सूरा हूद : 17]। एक अन्य स्थान में महान अल्लाह ने कहा है :

﴿فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾

"जो लोग अल्लाह के रसूल के आदेश का उल्लंघन करते हैं, और उससे विमुख होते हैं, उन्हें डरना चाहिए कहीं उन पर कोई आपदा न आ जाए अथवा उन्हें कोई यातना न आ घेर ले।" [सूरा अल-नूर : 63]। एक अन्य स्थान में महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُهِينٌ﴾

"परन्तु जो कोई अल्लाह और उसके सन्देष्टा की अवज्ञा करेगा तथा उसकी निर्धारित की हुई सीमाओं को लांघेगा, अल्लाह उसे आग में प्रविष्ट करेगा जिसमें उसे सदैव रहना होगा और उसे अपमानजनक यातना दी जाएगी।" [सूरा अल-निसा : 14], एक अन्य स्थान में महान अल्लाह ने कहा है:

﴿وَمَنْ يَتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ﴾

"और जिसने ईमान की नीति को कुफ़्र से बदल लिया, वह सीधी डगर से विचलित हो गया।" [सूरा अल-बक़रा : 108], क़ुरआन के अंदर इस आशय की आयतें बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

अल्लाह ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुसरण को अपने अनुसरण से जोड़ा है और बताया है कि जिसने इस्लाम को छोड़ किसी और दीन पर आस्था रखी, वह घाटे में रहेगा। उसकी न कोई अनिवार्य इबादत ग्रहण होगी, न स्वेच्छा से की गई इबादत। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴾

"और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को अपनाएगा, उसे उसकी तरफ़ से कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह परलोक में घाटा उठाने वालों में से होगा।" [सूरा आल-ए-इमरान : 85]। एक अन्य स्थान में महान अल्लाह ने कहा है :

﴿مَنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ﴾

"जो रसूल के आदेश का पालन करता है, वह अल्लाह का आज्ञाकारी है।" [सूरा अन-निसा : 80]। एक अन्य स्थान में महान अल्लाह ने कहा है :

﴿قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ وَإِنْ تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا﴾

"(हे नबी!) आप कह दें कि अल्लाह की आज्ञा का पालन करो तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो। और यदि वे विमुख हों, तो उनका कर्तव्य केवल उतना ही है, जिसका भार उनपर रखा गया है और तुम्हारा वह है, जिसका भार तुमपर रखा गया है, और अगर तुम उनकी आज्ञा का पालन करोगे, तो सत्य का मार्ग पा जाओगे।" [सूरा अल-नूर : 54]। एक अन्य स्थान में महान अल्लाह ने कहा है :

﴿إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أُولَئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ﴾

"निःसंदेह किताब वालों और मुश्रिकों में से जो लोग काफ़िर हो गए, वे सदा जहन्नम की आग में

रहने वाले हैं, वही लोग सबसे बुरे प्राणी हैं।" [सूरा अल-बय्यिना : 6]।

इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में रिवायत किया है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मोहम्मद की जान है, मेरे विषय में इस उम्मत का जो व्यक्ति भी सुने, चाहे वह यहूदी हो या ईसाई, फिर वह उस चीज़ पर ईमान न लाए, जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ, तो वह जहन्नमी होगा।"

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने कथन एवं कर्म द्वारा बता दिया है कि जिसने इस्लाम ग्रहण नहीं किया, वह असत्य धर्म का पालन करने वाला माना जाएगा। आपने अन्य काफ़िरों की तरह ही यहूदियों एवं ईसाइयों से भी युद्ध किया और उनमें से जिसने जिज़्या दिया, उसका जिज़्या स्वीकार किया, ताकि ये लोग शेष लोगों तक आह्वान पहुँचने की राह में बाधा न डालें और उनमें से जो लोग इस्लाम ग्रहण करना चाहें, वह अपनी जाति से डरे बिना इस्लाम ग्रहण कर सकें।

बुख़ारी एवं मुस्लिम ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत किया है, वह कहते हैं : एक दिन हम मस्जिद के अंदर मौजूद थे कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (अपने घर से) बाहर निकले और फ़रमाया : "यहूदियों की ओर चलो।" तब हम आपके साथ निकल पड़े और बैत अल-मिद्रास पहुँचे। वहाँ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े हो गए और उनसे पुकार कर कहा : "ऐ यहूदियो! मुसलमान हो जाओ, सुरक्षित रहोगे।" उन्होंने कहा : ऐ अबुल क़ासिम! आपने संदेश पहुँचा दिया। यह सुन आपने कहा : "यही मैं चाहता हूँ, तुम मुसलमान हो जाओ, सुरक्षित रहोगे।" उन्होंने फिर कहा : ऐ अबुल क़ासिम! आपने संदेश पहुँचा दिया है। इसपर आपने दोबारा कहा : "यही मैं चाहता हूँ।" फिर तीसरी बार यही बात दोहराई। पूरी हदीस देखें।

इस हदीस को प्रस्तुत करने का उद्देश्य यह है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यहूदी धर्म का पालन करने वाले लोगों के पास उनके बैत अल-मिद्रास में गए, उनको इस्लाम की ओर बुलाया और फ़रमाया : "मुसलमान हो जाओ, सुरक्षित रहोगे।" आपने इस बात को कई बार दोहराया भी।

इसी तरह आपने सम्राट हिरक़्ल की ओर अपना पत्र भेजकर उसे इस्लाम की ओर बुलाया और बताया कि अगर वह मुसलमान नहीं हुआ, तो उसके मुसलमान न होने के कारण जो लोग इस्लाम धर्म से वंचित रहेंगे, उन सब के गुनाह का बोझ उसे उठाना पड़ेगा। सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम में मौजूद एक हदीस में है कि हिरक़्ल ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पत्र मंगवाया और पढ़ा। उसमें लिखा था : अल्लाह के नाम से आरंभ करता हूँ, जो बड़ा दयालु एवं कृपावान है। यह पत्र अल्लाह के रसूल मुहम्मद की ओर से रूम के सम्राट हिरक़्ल के नाम लिखा गया है। उसपर शांति हो, जिसने सच्चे धर्म का पालन किया। इसके बाद मूल विषय पर आता हूँ। मैं तुम्हें इस्लाम धर्म ग्रहण करने का आह्वान करता हूँ। मुसलमान हो जाओ, सुरक्षित रहोगे। मुसलान हो जाओ, अल्लाह तुम्हें दोगुना प्रतिफल देगा। अगर तुमने मुँह फेरा, तो तुमपर तुम्हारी जनता के गुनाह का बोझ भी होगा।

﴿يَـٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ تَعَالَوۡاْ إِلَىٰ كَلِمَةٖ سَوَآءِۭ بَيۡنَنَا وَبَيۡنَكُمۡ أَلَّا نَعۡبُدَ إِلَّا ٱللَّهَ وَلَا نُشۡرِكَ بِهِۦ شَيۡـٔٗا وَلَا يَتَّخِذَ بَعۡضُنَا بَعۡضًا أَرۡبَابٗا مِّن دُونِ ٱللَّهِۚ فَإِن تَوَلَّوۡاْ فَقُولُواْ ٱشۡهَدُواْ بِأَنَّا مُسۡلِمُونَ﴾

(ऐ किताब वालो! एक ऐसी बात की ओर आ जाओ, जो हमारे तथा तुम्हारे बीच समान रूप से मान्य है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (वंदना) न करें और किसी को उसका साझी न बनाएँ तथा हममें से कोई किसी को अल्लाह के सिवा रब न बनाए। फिर यदि वे मुँह फेर लें, तो कह दो कि तुम गवाह रहो कि हम (अल्लाह के) आज्ञाकारी हैं)।" [सूरा आल-ए-इमरान : 64]।

फिर, जब इन लोगों ने मुँह फेरा और इस्लाम ग्रहण करने से इनकार कर दिया, तो अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके साथियों ने उनसे युद्ध किया और उनपर जिज़्या लागू कर दिया।

साथ ही इस बात की पुष्टि के लिए कि मुहम्मद सल्ल्ललाहु अलैहि व सल्लम के नबी बनकर आ जाने के बाद आपका अनुसरण न करने वाले यह लोग गुमराह एवं असत्य धर्म का पालन करने वाले लोग हैं, अल्लाह ने हर मुसलमान को आदेश दिया है कि वह हर दिन, हर नमाज़ की हर रकात में अल्लाह से सीधे, सही एवं ग्रहणयोग्य राह यानी इस्लाम पर चालने की दुआ माँगे। उन लोगों की राह से बचाने की दुआ करे, जिनको अल्लाह के क्रोध का सामना करना पड़ा है। यानी यहूदी एवं इन जैसे अन्य लोग, जो ये जानते हुए कि उनका धर्म असत्य है, उसी पर जमा रहते हैं। इसी तरह उन लोगों की राह से बचाने की भी दुआ करे, जो बिना ज्ञान के इबादत करते हैं और समझते हैं कि सच्चे धर्म का पालन कर रहे हैं। हालाँकि ग़लत राह पर चल रहे हैं। यानी ईसाई एवं उनके जैसे अन्य समुदाय, जो गुमराही एवं अज्ञानता के साथ अल्लाह की इबादत करते हैं। ये सारी शिक्षाएँ इसलिए दी गई हैं, ताकि हर मुसलमान निश्चित रूप से जान ले कि इस्लाम के अलावा सारे धर्म असत्य हैं। इस्लाम धर्म के अलावा किसी और धर्म का पालन करके अल्लाह की इबादत करने वाला गुमराह है। इस धर्म पर विश्वास न रखने वाला मुसलमान नहीं है। इस विषय पर क़ुरआन एवं सुन्नत के प्रमाण बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

इसलिए इस लेख के लेखक अब्दुल फ़त्ताह को चाहिए कि फ़ौरन सच्ची तौबा करे और एक अन्य लेख लिखकर अपनी तौबा का एलान कर दे। क्योंकि अल्लाह हर सच्ची तौबा करने वाले की तौबा क़बूल करता है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ﴾

"ऐ मोमिनो! तुम सब अल्लाह के सामने तौबा करो, ताकि सफल हो सको।" [सूरा अल-नूर : 31], एक और स्थान पर पवित्र अल्लाह कहता है :

﴿وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ﴿٦٨﴾ يُضَاعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدْ فِيهِ مُهَانًا ﴿٦٩﴾ إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا﴾

"और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे पूज्य को नहीं पुकारते, और न उस प्राण को क़त्ल करते हैं, जिसे अल्लाह ने हराम ठहराया है, परंतु हक़ के साथ, और न व्यभिचार करते हैं। और जो ऐसा करेगा, वह पाप का भागी बनेगा।

क़यामत के दिन उसकी यातना दुगनी कर दी जाएगी और वह अपमानित होकर उसमें हमेशा रहेगा।

परंतु जिसने तौबा कर लिया और ईमान ले आया और अच्छे काम किए, तो ये लोग हैं जिनके बुरे कामों को अल्लाह नेकियों में बदल देगा और अल्लाह हमेशा बहुत क्षमा करने वाला, अत्यंत दयावान है।" [सूरा अल-फ़ुरक़ान : 68-70]। इसी तरह अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "इस्लाम पहले के गुनाहों को ख़त्म कर देता है और तौबा पहले के गुनाहों को ख़त्म कर देती है।" इसी तरह अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस हदीस से भी इस आयत की व्याख्या होती है : "गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा हो जाता है, जैसे उसका कोई गुनाह ही न हो।"

इस आशय की आयतें और हदीसें बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

दुआ है कि अल्लाह हमें सत्य को सत्य समझने और उसका अनुसरण करने तथा असत्य को असत्य देखने एवं उससे बचे रहने का सुयोग प्रदान करे, हमें, इस लेख के लेखक अब्दुल फ़त्ताह एवं तमाम मुसलमानों को सच्ची तौबा का सुयोग प्रदान करे, हम सब को गुमराह करने वाले फ़ितनों और इच्छा एवं शैतान के अनुसरण से बचाए। ये सारे कार्य उसी के हैं और उसी के पास इनका सामर्थ्य है।

अल्लाह की कृपा तथा शांति की बरखा बरसे हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, तथा आपके परिजनों, साथियों तथा क़यामत के दिन तक निष्ठा के साथ उनका अनुसरण करने वालों पर।

तौहीद (एकेश्वरवाद) की रक्षा

लेखक:

अल्लामा इमाम अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़

-उनपर अल्लाह की दया हो-

आरंभ करता हूं अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान है

मरे हुए लोगों को मस्जिदों में दफ़न करना

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ। सारी प्रशंसा अल्लाह की है। दरूद व सलाम हो अल्लाह के रसूल पर, तथा आपके परिवारजन एवं आप के मार्ग पर चलने वालों पर। तत्पश्चात:

मैंने 17/04/1415 हिजरी के "अल-ख़रतूम" अख़बार का अध्ययन किया, तो पाया कि उसमें, उम्म-ए-दरमान नगर की मस्जिद में सैयद मुहम्मद हसन इद्रीसी को उनके पिता के बगल में दफ़न करने के संबंध में एक बयान छपा है...।

चूँकि अल्लाह ने मुसलमानों का शुभचिंतन एवं ग़लत चीज़ों का खंडन ज़रूरी क़रार दिया है, इसलिए मैंने यह बताना ज़रूरी समझा कि मस्जिद में किसी को दफ़न करना जायज़ नहीं है, इससे शिर्क फैलता है, और यहूदियों एवं ईसाइयों ने यह काम किया, तो अल्लाह ने उनका खंडन किया और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनपर लानत फ़रमाई। सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम की आइशा रज़ियल्लाहु अनहा से वर्णित एक हदीस में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "यहूदियों तथा ईसाइयों पर अल्लाह की धिक्कार हो। उन लोगों ने नबियों की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया।" तथा सहीह मुस्लिम में जुनदुब बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "देखो! तुमसे पहली उम्मतों के लोग अपने नबियों और सदाचारी बंदों की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया करते थे। देखो! तुम क़ब्रों को मस्जिद न बनाना, क्योंकि मैं तुम्हें इससे मना करता हूँ।" हदीस की किताबों में इस आशय की बहुत-सी हदीसें मौजूद हैं।

इसलिए हर जगह के मुसलमानों, हुकूमत हो कि अवाम, को चाहिए कि अल्लाह से डरें, उसकी मना की हुई चीज़ों से बचें और अपने मुर्दों को मस्जिद के बाहर दफ़न करें।अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा आपके सहाबा मुर्दों को मस्जिद के बाहर ही दफ़न करते थे, और सहाबा के पद्चिह्नों पर भलाई के साथ चलने वाले लोग भी ऐसा ही करते रहे।

रही बात अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके दोनों साथी अबू बक्र एवं उमर रज़ियल्लाहु अनहुमा की क़ब्रों के

मस्जिद-ए-नबवी के अंदर मौजूद होने की, तो इसे मस्जिद के अंदर मुर्दे को दफ़न करने की दलील नहीं बनाया जा सकता। क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर अर्थात: आइशा रज़ियल्लाहु अनहा के घर में दफ़न हुए थे और फिर आपके दोनों साथियों को आपके पास दफ़न किया गया। बाद में जब वलीद बिन अब्दुल मलिक ने पहली सदी हिजरी के आख़िर में मस्जिद का विस्तार किया, तो उस आइशा रज़ियल्लाहु अनहा के घर को मस्जिद में दाख़िल कर दिया। उस समय मुस्लिम विद्वानों ने वलीद के इस कार्य को ग़लत बताया था, लेकिन वलीद को लगता था कि इसके कारण मस्जिद का विस्तार नहीं रुकना चाहिए और मामला इतना स्पष्ट है कि इससे कोई शंका पैदा नहीं होगी।

इससे हर मुसलमान के लिए स्पष्ट है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके दोनों साथी मस्जिद के अंदर दफ़न नहीं हुए थे तथा उनकी क़ब्रों का मस्जिद के विस्तार के कारण मस्जिद के अंदर आ जाने को मस्जिद में मुर्दे को दफ़न करने का प्रमाण नहीं बनाया जा सकता। क्योंकि उनको मस्जिद के अंदर दफ़न किया नहीं गया था। वो अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर में दफ़न हुए थे। दूसरी बात यह है कि वलीद का अमल इस संबंध में किसी के लिए प्रमाण नहीं बन सकता। प्रमाण तो बस अल्लाह की किताब, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत और इस उम्मत के सलफ़ (सदाचारी पूर्वजों) का इजमा (मतैक्य) है, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो और हम को उनके सच्चे अनुयायियों में से बना दे।

अतः शुभचिंतन एवं अपनी ज़िम्मेवारी अदा करने के लिए ये शब्द 14-5-1415 हिजरी को लिखे गए।

अल्लाह ही सुयोग एवं क्षमता देने वाला है। अल्लाह की कृपा एवं शांति की धारा बरसे हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, तथा आपके परिवारजनों, साथियों और भलाई के साथ उनके अनुसरण करने वालों पर।

विषय सूची

उन लोगों के बारे में शरीयत के निर्णय का बयान, जो अल्लाह को छोड़ किसी और से फ़रियाद करते हैं, या भविष्य की बात बताने का दावा करने वालों एवं वस्तुओं का ज्ञान रखने का दावा करने वालों (जैसे ज्योतिषि, ओझा, सोखा आदि) को सच्चा मानते हैं 3
पहली पुस्तिका : अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रियाद के संबंध में शरई दृष्टिकोण 4
दूसरी पुस्तिका 13
जिन्नों और शैतानों से फ़रियाद और उनके लिए मन्नत मानने के बारे में शरई दृष्टिकोण 13
तीसरी पुस्तिका 23
शिर्क की मिलावट वाले और नवाचारित अज़कार के माध्म से इबादत के बारे में शरई दृष्टिकोण 23
बिदअतों से सावधान रहें 36
पहली पुस्तिका 36
अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा अन्य लोगों का जन्म दिवस मनाने के संबंध में शरई दृष्टिकोण 36
दूसरी पुस्तिका 42
इसरा एवं मेराज की रात जश्न मनाना शरई दृष्टिकोण से 42
तीसरी पुस्तिका 45
पंद्रहवीं शाबादन की रात जश्न मनाना शरई दृष्टिकोण से 45
चौथी पुस्तिका 52
एक झूठी वसीयत के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें 52
जो हरम-ए-नबवी के सेवक शैख़ अहमद के नाम पर प्रचलित है 52
क़ब्रों पर मस्जिद बनाने के खिलाफ चेतावनी 60
ऐसे व्यक्ति की पथभ्रष्टता और कुफ्र का बयान, जो कहता हो कि किसी के लिए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीयत से बाहर निकलना जायज़ है 63
मरे हुए लोगों को मस्जिदों में दफ़न करना 70
विषय सूची 72

حرمين

رئاسة الشؤون الدينية
بالمسجد الحرام والمسجد النبوي